गारफ़ील्ड

अर्थात्

जेम्स एबरम् गारफ़ील्ड

का

जीवन-चरित

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

१९१७

ीय बार] [मूल्य ॥)

Printed and published by Apurva Krishna Bose,
at the Indian Press, Allahabad

भूमिका

ईश्वर ने ससार भर के मनुष्यों को प्राय समान बुद्धि, बल आदि सद्गुण दिये हैं। उन्हीं सद्गुणो का जो मनुष्य सुगमता से व्यवहार करता है वही अन्त में विजयी होकर प्रतिष्ठा लाभ करता है । जो उन गुणो को काहिली और वेपरवाही से खोता है वही अन्त मे गली गली ठोकर खाता है । ऐसे ठोकर खाने वाले प्राय अपने भाग्य और अपनी अवस्था को दोष देकर अपने को बचाते हैं, परन्तु मैं समझता हूँ कि वेपरवाही और काहिली ही उनके कष्ट का मूल कारण है । यदि ये लोग अपने भविष्य के विषय में दिन में एक बार भी सोचते और अपने कर्त्तव्यो को पूरी तौर से पालन करते रहते तो कदाचित् उनका जीवन ऐसा दु खमय न होता जैसा ऊपर लिखा गया है । बहुत से आदमी प्राय ऐसा कहते हैं कि गरीब के घर जन्म लेने के कारण हमारा लिखना-पढना नहीं हुआ । ऐसा कहना भी मानो अपनी दुर्बलता का परिचय देना है । इस बात की पुष्टि करने के लिए जेम्स गारफील्ड की जीवनी आपके सामने रक्खी जाती है ।

जेम्स गारफील्ड का जन्म एक बहुत ही निर्धन किसान के घर हुआ था, परन्तु उसने अपने परिश्रम, अध्यवसाय और

ढ सकल्प के कारण ससार में वह काम कर दिखाया, सका वर्णन इतिहास के पन्नों मे चिरकाल तक बना रहेगा। ति दरिद्र के घर जन्म लेकर, धीरे धीरे उन्नति करते करते, न्त में युनाइटेड स्टेट्स का प्रेसीडेंट (जिसका पद दुनिया र के बड़े बड़े महाराजाओं से किसी प्रकार कम नहीं है) न जाना जेम्स गारफ़ील्ड के लिए कुछ कम सौभाग्य की त न थी।

उन्नति करने वाले के लिए एक बात को याद रखना ति आवश्यक है। वह यह कि जब उसमे भला बुरा समझने ी शक्ति आ जावे तब वह अच्छी तरह सोच विचार कर इस त को सिद्ध कर ले कि उसके जीवन का मुख्य उद्देश क्या ? वह हमेशा उस उद्देश को सिद्ध करने में लगा रहे और ब तक वह सिद्ध न हो जाय तब तक मानो उसको "शरीर-तन वा मन्त्र ही साधन" का व्रत धारण किये रहना चाहिए। ब उसका सकल्प सिद्ध हो सकता है, और तभी वह उन्नति र सकता है। जेम्स गारफील्ड ने ग्रेजुएट (Graduate) बनने ा सकल्प किया था। उस सकल्प को सिद्ध करने के लिए न्होंने कितना कष्ट सहा था—यह इस पुस्तक के पाठ करने मालूम होजायगा।

इस स्थान पर इस बात का उल्लेख करना कदाचित् अनु-चित न होगा कि

(William M Thayer) की " From Log Cabin to White House " नामक पुस्तक के आशय पर लिखी गई है।

भारत के भावी कर्मवीर नवयुवकों को पढ़ने के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। यदि इस पुस्तक से हमारे देश के बालकों का कुछ भी उपकार हुआ तो हम इतने से ही अपना श्रम सफल समझेंगे।

यदि लिखने में कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकों से निवेदन है कि वे उसे क्षमाप्रदानपूर्वक सुधार कर पढ़ने की कृपा करें।

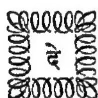
प्रकाशक



गारफ़ील्ड



पहला परिच्छेद



खने मे आता है कि इस ससार में सब लोग उन्नति करने ही मे लगे हैं। कोई तो किसी विषय में उन्नति करता है और कोई किसी मे। छोटे छोटे पेड, पौधे, कीट, पतङ्ग से लेकर मनुष्य तक को देखिए तो यही मालूम होगा कि मानो ईश्वर ने इन सबको उन्नति करने ही के लिए पैदा किया है। पेड को देखिए। वह आरम्भ-अवस्था में बीजरूप ही रहता है। फिर, मिट्टी, धूप और पानी का ससर्ग पाने से धीरे धीरे वह बढने लगता है। बढते बढते उसकी यह दशा हो जाती है कि वह फल-फूल देने लगता है। उसके फूलो की सुगध से समस्त ससार सुवासित हो जाता है और उसके फल खा कर जीव प्रसन्न होते हैं। फिर उसी पेड की शाखा-प्रशाखायें जो निकलती रहती हैं वे गर्मी के दिनों में सूर्य्य के प्रचण्ड उत्ताप को

अपनी ही सुविस्तृत छाती पर रोक लेती हैं और थके मांदे पथिको को अपनी शीतल छाया तले (विश्राम लेने के लिए) आश्रय देती हैं । ध्यान देने का विषय है कि इन बुद्धिहीन जड पदार्थों मे परोपकार और सहानुभूति की कैसी अनोखी चाह है।

फिर कीट-पतङ्ग आदि जन्तुओं की ओर ध्यान दीजिए तो यही देखने में आता है कि वे भी किसी न किसी प्रकार से ससार को लाभ पहुँचाने ही मे लगे हैं । कोई तो हल जोतने में उपयोगी हैं, कोई दूध देने मे, कोई सवारी खींचने मे और कोई अपनी मीठी आवाज ही सुना कर दूसरो के चित्त को प्रसन्न करते हैं ।

निदान इससे यही सिद्ध होता है कि ये लोग सर्वदा ससार को फायदा पहुँचाने ही में तत्पर हैं । और, ससार को फायदा पहुँचाना ही,—ससार को सुखी रखना ही—मानो उन्नति का मुख्य उद्देश है ।

यह तो बुद्धिहीन जीवों की बात हुई । अब यदि मनुष्य, जो बुद्धिमान्, विचारवान्, और सब जीवों में श्रेष्ठ गिना जाता है, उन्नति करे तो आश्चर्य ही क्या । परन्तु उन्नति करने के पहले यह जानना चाहिए कि उन्नति करने के लिए किन किन गुणों के होने की आवश्यकता है । उन्नति करने वाले मे असीम उत्साह, प्रचण्ड साहस और दृढ सकल्प आदि गुणो का रहना अति आवश्यक है । यदि मनुष्य में ये गुण वर्तमान हों तो वह अति दीन दरिद्र अवस्था से भी बडी उच्च पदवी को प्राप्त कर सकता

है। यदि ससार के बडे बडे इतिहास ध्यान से पढे जायँ तो देखने में आवेगा कि सहस्रों मनुष्य इन्हीं उत्साह, साहस और सकल्प के कारण इतने बड़े हो गये हैं कि यद्यपि उनको मरे सैकडो हजारो वर्ष बीत चुके तथापि उनकी कीर्ति और उनका नाम अभी तक वर्तमान है और जब लों ससार रहेगा तब लो उनकी अक्षय कीर्ति का इतिहास अटल बना रहेगा। अब मैं पाठको के सामने एक महापुरुष की जीवनी उपस्थित करता हूँ जिसके पढने से लोगो को मालूम हो जायगा कि उद्यमशील पुरुष इस ससार मे क्या नहीं कर सकता।

अमरीका का नाम तो तुमने सुना ही होगा। यह एक देश है जो कि शान्त महासागर के पूरब की ओर बडी दूर है। चार सौ वर्ष पहले कोई इसका नाम तक नहीं जानता था—कोई नहीं जानता था कि भूमण्डल पर ऐसा महा देश कोई है या नहीं। सन् १४९२ ईसवी में जिनोआ नगर का निवासी कोलम्बस नामक एक साहसी पुरुष एटलाण्टिक महासागर होकर भारतवर्ष का मार्ग ढूँढता ढूँढता एक द्वीप के पास आ पहुँचा। इस द्वीप के समीप आने पर उसको मालूम हुआ कि इस द्वीप के निकट अवश्य कोई देश होगा—यह सोचकर उसने जहाज के कप्तान को और भी पश्चिम की ओर जाने की आज्ञा दी। जाते जाते उसने फूल-पत्तों और लताओं से मण्डित एक देश देखा। उसने भूगोल अथवा इतिहास में कभी उस देश का विवरण नहीं पढा था, इसलिए उसको देखने का बडा कुतूहल हुआ।

जहाँ तक हो सका उसने भलीभांति देख-भाल की। अन्त में लौटकर उसने अपने देशवासियों तथा योरप-निवासियों को इसका पूरा हाल सुनाया। योरप वाले वहाँ गये और उस देश को उन्होंने बसाया और उसका नाम अमरीका रक्खा। इसी अमरीका के उत्तर प्रान्त के युक्त प्रदेश नामी देश में ओहियो नाम का एक खण्ड है। खेती के लिए यहाँ की जमीन और स्थानों से अच्छी समझी जाती है। जब अमरीका-निवासियों को मालूम हुआ कि ओहियो नामी खण्ड में खेती का काम अच्छी तरह हो सकता है तब दूर दूर के किसान वहाँ जाने और बसने लगे।

परन्तु जिस समय का हाल लिखा जाता है उस समय वहाँ की आबादी बहुत थोडी थी। जो थोडे किसान वहाँ थे उनमें से एबरम गारफील्ड भी एक था। उसके दो पुत्र और दो कन्यायें थीं। वह लिखा-पढा तो बहुत न था परन्तु था बडा बुद्धिमान्, साहसी और उद्यमशील। उसने अपनी बुद्धि और बल के कारण ओहियो से १७ मील दूर पर आरेंज नामी एक खण्ड में ६०—७० बीघा जमीन सस्ते दाम पर खरीदी थी और उसी में खेती-बारी किया करता था। आरेंज में आकर उसने लकडी और फूस का एक मकान रहने के लिए बना लिया था। जिस समय वह यहाँ आया उस समय उसके एक पुत्र और दो कन्यायें थीं। यहीं आरेंज में फूस की कुटी में इनका छोटा लडका १९ नवम्बर सन् १८३१ ईसवी को पैदा हुआ। उस लडके का नाम जेम्स गारफील्ड था। यही जेम्स गारफील्ड इस पुस्तक का

नायक है । इनकी माता एलीजा गारफील्ड अपने धर्मशास्त्र में बड़ी पण्डिता थीं। इनके गुणो का हाल लिखने में प्राय आधी पुस्तक भर जायगी, इस कारण केवल इतना ही कहना काफी होगा कि यह सर्वगुण-सम्पन्ना नारी थीं और वास्तव में माता होने के योग्य थीं।

ये दम्पति अपने पुत्र-कन्याओ को लेकर गरीबी हालत में किसी प्रकार अपने दिन काटा करते थे। खेत में जो थोडा अनाज उपजता उसी में अपने को सन्तुष्ट रखते थे । इनको ज्यादा पाने की अभिलाषा ही न होती थी, क्योंकि उस जगह सभ्यता इतनी बढी-चढी न थी जैसी कि शहरो में थी। शहरी लोगो की अपेक्षा ये लोग किसी किसी विषय में अधिक सुखी थे। ऐसी सुख-दु ख की अवस्था में ये अपना जीवन व्यतीत करते रहे कि अकस्मात् एक दिन सुनने में आया कि लोग अपना अपना मकान छोड कर भाग रहे हैं क्योकि जगल में आग लग गई थी और बस्ती की ओर चली आती थी। एबरम गारफील्ड के लिए अपने मकान और सामान को आग के मुँह में छोड कर भाग जाना बहुत कठिन काम था क्योंकि उन्होंने उस मकान और सामान को बडे परिश्रम से इकट्ठा किया था। उनको यकायक छोड जाना बहुत दु खदायक था । जब उन्होने देखा कि आग अपने सामने की सारी चीजों को निगलती हुई उन्हीं की झोपडी की ओर चली आरही है तब उन्होंने मनही मन निश्चय कर लिया कि जैसे बने इस प्रचण्ड शत्रु का नाश करना ही चाहिए। यह सोच कर वे अपनी स्त्री और पुत्र-कन्या को साथ

लेकर वहाँ गये। बड़ी कन्या की उम्र १३ वर्ष की और पुत्र की ११ वर्ष की थी। इन लोगों के वहाँ पहुँचते ही उस प्रचण्ड शत्रु से घोर युद्ध आरम्भ हो गया। बड़ी देर तक युद्ध होता रहा। अग्निदेव अपने संसार को नाश करने हारे फूत्कार से चारो ओर सब कुछ दग्ध कर रहे थे, और पवन देव भी इनकी सहायता करते रहे। दोनो प्रबल शक्तियो के संयोग से अग्नि-शिखायें ऐसा भयङ्कर रूप धारण कर रही थीं कि ऐसा प्रतीत होता था, मानो महाप्रलय उपस्थित हो गया है। ऐसा अनुमान होता था कि ये चारो प्राणी पल भर में राख हो जायँगे। ये लोग साहस पर कमर बांधे और ईश्वर पर अटल विश्वास किये हुए उस आग को बुझाने का यत्न कर रहे थे और पृथ्वी को दूर तक खोदने, वृक्षादिकों को काटने और आग का बढ़ना रोकने मे लगे थे। वे भगवान् से प्रार्थना करते रहे कि किसी प्रकार इस विपत्ति से रक्षा करे। यह बात सदा से सत्य मानी गई है और चिरकाल तक मानी जायगी कि यदि कोई मनुष्य अन्त करण से ईश्वर की प्रार्थना करे तो उसकी प्रार्थना सुनीही जाती है। भगवान् की क्या ही विचित्र लीला है। बड़े बड़े ऋषि-मुनि भी इस लीला के गूढ तत्त्व को नहीं समझ सके। देखते ही देखते उस मेघशून्य आकाश मे कहाँ से काले बादलो ने आकर सूर्य को ढक लिया, अँधियारी छा गई और पानी बरसने लगा। पानी के बरसने से आग बुझ गई, धरती शान्त हुई और ये लोग घर लौट आये।

जुलाई के महीने में सूर्य और आग के सामने बहुत देर तक कठिन परिश्रम करने के कारण एवरम गारफील्ड अत्यन्त थक गये थे। मारे पसीने के उनका सारा शरीर भीग गया था। आंख, कान, नाक, मुँह से आग की चिनगारियां छूट रही थीं। इस कारण उन्होंने बाहर खुले मैदान में एक चारपाई डाल दी और कपडे उतार कर वे पसीने में डूबे हुए उसी पर लेट गये। बाहर मैदान में मृदु, मन्द पवन बह रहा था। उस वक्त उनको वह हवा बहुत ही प्यारी मालूम हुई, परन्तु उनको यह न सूझी कि सर्दी गर्मी का असर शरीर पर बैठ जाने से बहुत अनिष्ट होना सम्भव है इस कारण वे वहीं लेट गये। रात को उन्हें मालूम हुआ कि उनके सांस लेने की नाली बन्द हो गई है और उनसे बात नहीं करते बनता। आरेंज के कई मील इधर उधर कोई डाक्टर नहीं रहता था, परन्तु एक पडोसी, जो थोडा बहुत चिकित्सा का काम किया करता था, बुलवाया गया। उसके आते ही रोगी उसके हाथ सौंप दिया गया। उसने रोगी को पहले ही एक ऐसा पलस्तर दिया कि उसके देते ही उसकी पीडा बहुत बढ गई और जीने की आशा धीरे धीरे जाती रही। एलीजा गारफील्ड ने अपने स्वामी की बडी सेवा की, परन्तु उसका सब श्रम व्यर्थ गया। देखते ही देखते प्राण-वायु उस शरीर से निकल गया और घर में रोना-पीटना मच गया। घर के छोटे बड सब लोग हृदय विदारक विलाप से भूमण्डल को कँपा रहे थे, परन्तु १८ महीने का शिशु जेम्स गारफील्ड के

चेहरे पर शोक का कोई चिह्न नहीं दिखाई पडता था, क्योंकि शोक अथवा सुख के समझने या प्रकाश करने की उसमें शक्ति ही न थी। वह अपने स्वाभाविक रूप से हँसता खेलता था।

दूसरे दिन सुबह को आस पास के जो थोडे बहुत पडोसी थे वे विधवा एलीजा और उसके बच्चो को शान्ति देने के लिए आये और उनकी सहायता से मृतदेह गेहूँ के खेत के एक किनारे गाड दिया गया। एबरम गारफील्ड के मर जाने पर यद्यपि उनके परिवार के लोगो को बडा ही शोक हुआ परन्तु ससार के नियम के अनुसार ज्यों ज्यों समय बीतता गया त्यों त्यों वह शोक घटने लगा।

इस दु खदायी घटना के बाद, ५० वर्ष के बीतने पर भी, जब उनकी स्त्री बुढिया हो गई थीं तब भी, उस शोक का चिह्न इनके चेहरे से साफ झलकता था।

उन जङ्गलो में शीत ऋतु बडा ही भयकर होता है और विशेषत उस अवस्था मे जब कि वह मनुष्य जिस पर भरण-पोषण निर्भर है मृत्यु से अलग कर दिया गया हो तो वह कठोर शीत इतना दु सह हो जाता है कि वह समझने ही के लायक है, वर्णन के नहीं। एक तो भयकर शीत, दूसरे तन पर कपडों का न होना, तिस पर विना किसी आश्रय के जीवन व्यतीत करना और फिर भूखे बच्चो को आहार देने का सामर्थ्य न होना—ये सब दुखडे मिल कर बडे बडे साहसी पुरुषों के छक्के छुडा देते हैं। बेचारी एलीजा गारफील्ड तो एक अवला नारी ही थी। उसकी

मानसिक अवस्था कैसी भयानक और शोचनीय थी—यह वर्णनातीत है।

वह क्या ही भयकर शीत था। घनी वर्फ से सब धरती ढक गई थी। यहां तक कि गेहूँ के खेत वाली कब्र भी इन वर्फो के तले गड़ गई थी, और तेज हवा जो सनसनाती हुई बह रही थी उससे ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वह भी उस मुर्दे के लिए शोक कर रही थी। चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ था। रात को सिवा हिसक जन्तुओं की चिल्लाहट के और कोई शब्द नहीं सुन पडता था। इनकी आवाज सन्नाटे से मिल कर और भी सन्नाटा पैदा करती थी। लोग यह सोचने लगे थे कि वसन्त ऋतु अब न आवेगा और वह उनसे सदा के लिए बिदा ले गया है। परन्तु बहुत दिनों तक शीत का कष्ट भोग करने के बाद वसन्त-ऋतु फिर आया। फिर वर्फ को उसने पिघला दिया। फिर नदी नाले अपने मधुर मधुर गीत गाते गाते बहने लगे और फिर जङ्गल और खेतो के पेड-पौधे जीवित हो गये। सब जीवित हुए, परन्तु गेहूँ के खेत वाले मृत देह में जीवन-सचार होने की कोई आशा न दीख पडी। वह जैसा का तैसा उसी कब्र के नीचे ही गडा रह गया।

दूसरा परिच्छेद



रफील्ड की विधवा माता के पास रुपया कुछ भी न रह गया था। खेत पर कुछ कर्जा भी हो गया था और गांव में अनाज की भी बहुत कमी थी, सो ऐसी अवस्था में क्या करना चाहिए—यह सोच कर वह मिस्टर बाइटन के पास राय लेने गई। मिस्टर बाइटन इनके बड़े मित्र थे और गारफील्ड से इनसे कुछ नातेदारी भी थी। एब्रम के मरने के बाद उनकी विधवा पत्नी प्राय इनके पास राय लेने जाया करती थी, क्योंकि मिस्टर बाइटन को छोड़ दूसरा कोई इनकी सहानुभूति करने वाला न था। मि० बाइटन ने पूरा हाल सुनने के बाद कहा कि आप अपने तमाम खेत को बेच डालिए और उस रुपये से कर्जा चुका दीजिए और बच्चो को लेकर किसी दोस्त के मकान पर चली जाइए। गारफील्ड की विधवा माता ने कहा—"क्या मैं अपने स्वामी को अकेला छोड़ किसी दोस्त के सर पर बोझा बढ़ाऊँगी? ऐसा नहीं हो सकता। मैं अपने स्वामी ही के पास रहूँगी और किसी तरह अपना जीवन व्यतीत करूँगी। जो अनाथो के नाथ, अनाश्रितो के आश्रय हैं

उनकी दृष्टि तो मेरे ऊपर है ही। उनकी आज्ञा बिना पेड से एक पत्ता तक नहीं गिर सकता, तो उन्हीं की आज्ञा बिना मैं अपने बच्चों को लेकर अनाहार अनिद्रा में दिन रात काटूँगी—यह भी असम्भव है। हमे विश्वास है कि वे ही हमारे लिए यहीं कोई रास्ता निकाल देंगे।" उसके बाद मि० बाइटन ने कहा—"यदि समस्त खेत बेचने की तुम्हारी राय न हो तो उसका कुछ थोडा सा अश बेच कर कर्जा चुका दो।" इस बात पर वे सहमत हो गई, और उस थोडे अश को बेचने का भार मि० बाइटन ही पर रख दिया। मि० बाइटन ने जब इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तब गारफील्ड की माता उठीं और अपने घर की ओर चलीं। जाते समय रास्ते ही मे गिर्जा-घर पडता था। उसी गिर्जे में गई और एकाग्र चित्त से ईश्वर की प्रार्थना करने लगीं। प्रार्थना करते समय मानो उनको दैववाणी हुई कि "तुम किसी विषय की शङ्का न करो। मैं सर्वदा तुम्हारे साथ रहता हूँ। मैं तुम्हें सब विपत्तियों से बचाता रहूँगा"।

प्रार्थना समाप्त होने पर वह गद्गद होकर घर लौटी और टामस को, जो बडा बेटा था, जिसकी उम्र प्राय ११ वर्ष की थी, सारा हाल कह सुनाया। टामस ने सुनते ही बडी दृढता से उत्तर दिया—"माता, मैं हल जोत सकता हूँ, बीज बो सकता हूँ, दूध दुह सकता हूँ और भी अनेकों काम कर सकता हूँ।"

इन बातो को सुनते ही माता का जी भर आया और बेटे को छाती से लगा कर उसका मुखचुम्बन करके कहा, "बेटा, तुम्हें

बहुत अधिक परिश्रम करने की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल मेरी सहायता करने ही से सब काम अच्छी तरह हो जायगा।"

उस समय दूर दूर प्रान्तों से लोग ओहियो में वास करने के निमित्त आ रहे थे। इस कारण उनको जमीन की बड़ी आवश्यकता थी। उन आनेवालो में से एक को मि० वाइटन के द्वारा पता लगा कि गारफील्ड की माता अपनी कुछ जमीन बेचा चाहती हैं। उस आगन्तुक ने तुरन्तही बन्दोबस्त करके प्रायः ३० बीघा जमीन खरीद ली और उसका रुपया भी तुरन्त ही दे दिया। रुपया पाकर गारफील्ड की माता ने तमाम कर्जा चुका दिया। वसन्त-ऋतु के प्रारम्भ में ही जमीन बेची गई थी, अतएव खेत जोतने बोने का समय काफी था। इस कारण टामस ने एक पड़ोसी से विनय-पूर्वक एक घोड़ा माँगा। पड़ोसी भी बड़ा दयालु था। उसने तुरन्त ही एक घोड़ा हल जोतने के लिए दे दिया। घोड़े को पाकर उस वीर बालक ने अपनी माता और बहन की सहायता से खेत को खूब अच्छी तरह जोता बोया। यद्यपि वह ११ ही वर्ष का बालक था परन्तु उसने ऐसी दक्षता से इस काम को किया कि मालूम होता था, आगामि शरद ऋतु में बहुत अच्छी फसिल होगी।

आदमी के ऊपर जब कोई विपत्ति आती है तब एकही विपत्ति से उसका छुटकारा नहीं होता। एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी विपत्ति आती रहती है। गारफील्ड की माता पर भी एक

श्रौर विपत्ति श्राही पडी। उन्होंने देखा कि घर में जो अनाज है वह दूसरी फसिल तक न चलेगा श्रौर न घर में कुछ रुपया ही है कि उससे कुछ अनाज ख़रीद ले। इस कारण उन्होंने हिसाब लगा कर देखा कि यदि स्वय एक वक्त का आहार त्याग कर दे तो कदाचित् उसी अनाज से छ महीने काम चल जायगा। इस लिए उन्होंने विना किसी को बताये तीन वक्त के खाने में से एक वक्त का खाना बन्द कर दिया श्रौर केवल दो ही वक्त के आहार से वे अपने को सन्तुष्ट रखने लगीं। कुछ दिन इसी अवस्था में चलने के बाद उन्होंने फिर हिसाब लगाकर देखा कि इस प्रकार खर्च करने से अनाज फसिल तक के लिए काफी न होगा। इस कारण उन्होंने श्रौर एक वक्त का खाना बन्द कर दिया श्रौर केवल एक ही वक्त आहार करके अपना जीवन धारण करने लगीं।

शेष महीने इसी प्रकार बीत गये। फिर खेत काटने का दिन आया। टामस बड़ी मुस्तैदी श्रौर दृढता से खेत काटने के काम में लग गया। वह खेत काटता था श्रौर अपने मन मे आनन्दित होता था क्योंकि फसिल बहुत अच्छी हुई थी।

इसके कुछ दिन बाद एक आदमी आरेंज में आया श्रौर इन्हीं के पडोस में टिका। उसको सीने का काम करने के लिए एक स्त्री श्रौर हल जोतने के लिए एक बालक की आवश्यकता थी। इस कारण गारफील्ड की विधवा माता श्रौर उनका वीर पुत्र टामस दोनो उन कामो में नियुक्त किये गये। इस नये काम के पाने से उनकी आमदनी कुछ अधिक बढ गई। पहले ही दिन जब

टामस अपनी मेहनत की कमाई घर लाया तब उसने अपनी माँ से कहा, "माता, अब जेम्स के लिए एक जोडा जूता बनना चाहिए।" माता भी इस बात पर सहमत हो गई। तुरन्त एक मोची बुलाया गया और जेम्स के पैरो की नाप उसे दी गई। जूते की नाप दिये जाने पर जेम्स को बडा ही आनन्द हुआ।

आज-कल की तरह उस समय वहाँ मोचियो की कोई दुकान नहीं होती थी। जब कभी किसी को जूता बनवाने की आवश्यकता होती तब वह किसी मोची को बुलवाता और अपने ही मकान मे उसे भोजन कराता और रहने के लिए एक स्थान देता। जेम्स का जूता बनाने के लिए भी एक मोची बुलवाया गया। वह गारफील्ड ही के मकान मे रहता और इन्हीं लोगो के साथ भोजन भी करता था। कई दिनो के बाद जूता तैयार हो गया। पहले पहल उस जूते को पहन कर जेम्स के मन मे इतना अधिक आनन्द हुआ था कि उतना आनन्द उसको ३० वर्ष के बाद जातीय महासभा के सभापति बनाये जाने पर भी न हुआ होगा। जेम्स की उम्र उस समय साढे तीन वर्ष की थी। सच है, दरिद्रावस्था में पहले पहल अपनी अभीष्ट वस्तु पाने से अन्तरात्मा को बडी प्रसन्नता प्राप्त होती है।

तीसरा परिच्छेद



स गाँव में गारफील्ड के परिवार के लोग रहा करते थे वहाँ वालों के चित्त में यह विचार उठा कि उस गाँव में उनके मकान से डेढ मील दूर एक पाठशाला खोली जाय। गारफील्ड की माता इस बात को सुन कर बडी प्रसन्न हुई, क्योंकि वह चाहती थी कि उसके लडके किसी पाठशाला में भेजे जायँ। टामस ने आकर माता से कहा, "माँ, गाँव मे एक पाठशाला खुलने-वाली है। अतएव अब जेम्स और दोनो बहिनो को वहाँ भेजना चाहिए।" माता ने कहा, "सिर्फ वही लोग क्यो, बेटा, तुम भी न जाओगे ?" टामस ने उत्तर दिया, "माता, मेरे भाई-बहिन लिखना-पढना सीखेंगे और मैं खेती-बारी के काम में रह कर रोजी कमाने का काम-धदा करूँगा।" माता ने इस बात का कुछ उत्तर न दिया। वह टामस ही की राय पर सहमत हो गई।

पाठशाला जाने की राय तो ठीक होगई, परन्तु साढे तीन वर्ष का बालक जेम्स डेढ मील जाय तो कैसे जाय—यही प्रश्न सबके मन में उठा। तब बडी बहन ने बडे उत्साह से कहा,

"मैं जिमी को पीठ पर लाद कर ले जाऊँगी" । लोग इस बात को सुनकर हँसने लगे, पर उसने अपनी ही बात कायम रक्खी।

जब पाठशाला जाने का दिन आया तब तीनों भाई-बहन हँसते खेलते वहां गये। पहले ही दिन जेम्स ने अँगरेजी में एक अक्षर आर R पहिचाना था। जेम्स को उसकी माता ने घरही में बाइबिल अच्छी तरह पढाई थी, इस कारण वह पाठ शाला में अपने शिक्षक से उसी विषय पर तरह तरह के प्रश्न पूछा करता था। इससे विद्यार्थियों को बडी खुशी होती और शिक्षक भी प्रसन्न होते थे।

बचपन ही से जेम्स का चित्त सब विषयो को अच्छी तरह समझने की ओर आकर्षित होता था। इसी कारण वह अपने शिक्षक से हमेशा तरह तरह के प्रश्न पूछा करता था। कोई प्रश्न तो निरा निरर्थक, कोई अर्थयुक्त और कोई जैसा तैसा हुआ करते थे। इतने छोटे बालक के मुँह से इतने प्रश्नों की बौछार निकलते देख कर सबको अनुमान हो गया था कि यह एक अद्भुत लडका है और कदाचित् भविष्य में यह एक महापुरुष होवे।

उसी स्कूल के किसी बडे लडके ने, जिसका नाम जेकब लैण्डर था, आकर एक दिन जेम्स से कहा—"जेम्स! आज तुम शिक्षक बनो और इन लोगों (अपने दर्जे के लडको) से प्रश्न करो, और ये लोग उत्तर दे।" जेम्स झट तैयार हो गया और शिक्षक की कुर्सी पर जा बैठा और कहा—लडको! अपनी अपनी

जगह पर बैठो । जब सब प्रसन्न होकर बैठगये तब जेम्स प्रश्न करने लगा और कई बडे लडके किनारे खडे होकर सुनने लगे ।

प्र०—आर्क को किसने बनाया ?

कई विद्यार्थियों ने उत्तर दिया, "हजरत नूह ने ।"

"किसने उनको आर्क बनाने के लिए हुक्म दिया था ?"

कई लडको ने कहा, "ईश्वर ने ।"

"ईश्वर ने क्यों चाहा कि नूह आर्क को बनायें ?"

कुछ काल तक सब लोग चुप हो रहे । किसी ने कुछ उत्तर न दिया । आखिरकार उस बडे लडके ने कहा, यह प्रश्न बहुत कठिन है ऐसा प्रश्न तुम्हे न करना चाहिए था, क्योंकि गुरुजी ने नहीं बताया है । यह सुन कर जिमी खडा हुआ और बोला—

"जिससे कि नूह अपने को और अपने बाल-बच्चो को बचा ले ?"

जेकब ने पूछा, "किससे बचा ले ?"

जेम्स ने कहा, "बूडा और तूफान से ।"

फिर जेम्स ने पूँछा, "सबसे बूढा आदमी कौन था ?"

कई लडको ने कहा, "मेथ्युसालेह सबसे बूढा था ।"

"उसकी क्या उम्र थी ?"

फिर किसी ने उत्तर न दिया, तब जेम्स ने स्वय ही उत्तर दे दिया और फिर पूछा —

"सबसे अधिक मुलायम प्रकृति का मनुष्य कौन था ?"

सबने तुरन्त कहा, "मोजेज" ।

"किसके पास कई रङ्ग का एक कुर्ता था ?"

तुरन्त सबने कहा, "जोजेफ के पास ।"

"रेडसी (एक समुद्र का नाम है) में कौन डूब गया था?"

किसी ने उत्तर न दिया, इसलिए उसने स्वय ही दे दिया।

चार वर्ष से भी कम उम्र का बालक प्राय दस पन्द्रह मिनट तक इसी प्रकार के प्रश्न करता रहा और दर्जे के सब लडकों को अपनी ओर खींचे रहा । मास्टर खडे खडे इस दृश्य को देख रहे थे। दृश्य बडा ही मधुर, बडा ही गम्भीर और बडा ही मनोहर था । जेम्स की स्मरणशक्ति बचपन ही से बडी तीक्ष्ण और दृढ थी, क्योंकि जिस विषय को वह सुनता उसे बडे ध्यान से सुना करता था । छोटी छोटी कहानी अथवा किसी का कोई व्याख्यान सुनते ही वह उसे कण्ठ कर लेता था । दुनिया की हर चीज की ओर उसकी दृष्टि आकर्षित होती थी। जैसे—भाषा, दूसरो से बर्ताव, कपडे लत्ते आदि, काम काज करने के नियम, दूसरो से बातचीत करना कोई ऐसा काम न था जिसको वह बडे ध्यान से न देखता हो ।

एक दिन बडी लडकी ने पाठशाला से लौट कर अपनी मा से कहा, "माता, हम लोगो की पाठशाला दो तीन हफ्ते के लिए जाडे मे बन्द रहेगी और फिर दिसम्बर के महीने में खुलेगी ।"

माता ने कहा, "मुझे बडी खुशी हुई कि तुम लोग उस समय पाठशाला जाओगी । तुम सब जाना, केवल जेम्स न जावेगा, क्योंकि उसे जाडे में इतनी दूर जाने में बडा कष्ट होगा ।"

लडकी ने पूछा, "तो क्या टामस भी जायगा?" माता ने कहा, "मैं आशा करती हूँ कि वह भी जायगा।" इतने में टामस वहाँ आ पहुँचा, और उन लोगों की बातचीत सुनकर उसने कहा, "मुझे गायों को देखने से, लकडी काटने और घर के और और काम करने से छुट्टी तो मिलेहीगी नहीं, मैं पाठ-शाला कैसे जाऊँगा। मैं शाम को सब कामों से छुट्टी पाकर घर ही में पढ़ूँगा और पाले के दिनो मे भी पढ सकता हूँ। मुझे पाठशाला जाने की कुछ आवश्यकता नहीं है।" अन्त में यही सिद्ध हुआ कि जेम्स और टामस दोनो भाई घर पर रह कर अपनी माता की सहायता से पढेंगे।

दोनो भाई अपनी माँ की सहायता से पढने लगे। जेम्स ने जाडे के दिनो मे पढने और शब्दों के हिज्जे करने में बडा उन्नति की। एक दिन एक पुस्तक से उसने किसी एक वाक्य के हिज्जे करके जोर से सबको सुना कर पढा और उसका अर्थ भी उसने समझ लिया।

उस दिन से जेम्स के चित्त मे एक नई शक्ति का उदय हुआ, अर्थात् सोचने की शक्ति उत्पन्न हुई। पुस्तक के शब्दों को पाठ करने से उसके चित्त में विचार उत्पन्न होता था। वह उन शब्दो को सोचा करता था। उस समय से उसने पुस्तक-पाठ करने मे अपना तन मन अर्पण कर दिया और पुस्तक में उसको जो मजा मिलता था वह और कहीं न मिलता था। "इँगलिश-रीडर" एक पुस्तक थी जिसको वह बहुत पसद करता था।

दिन दिन भर उसी "इँगलिशरीडर" को वह अपना साथी बनाये रहता था। जेम्स अपने घर की जमीन पर चित लेट कर अथवा गर्मियो के दिनो में किसी पेड तले बैठकर उसी इँगलिश-रीडर को पढा करता, उसकी युक्तियो को विचारा करता और उससे लाभदायक उपदेश लिया करता था। उसकी यह हालत पाँच ही वर्ष की अवस्था में होगई थी। छठे वर्ष के प्रारम्भ में उसने उस पुस्तक का बहुत सा हिस्सा कण्ठ कर लिया था। उसी अवस्था में वह उस पुस्तक के बाद, और भी कई पुस्तके पढा करता था, किन्तु और पुस्तको को छोड केवल इँगलिशरीडर ही का नाम लिखा गया है। इसका कारण यह है कि उसको औरो की अपेक्षा अधिक उस पुस्तक से प्रीति थी। जेम्स की विधवा माता अपने बालक की अवस्था देख मानो अपने मन ही मन आकाश-कुसुम की कल्पना करती और पुत्र के मङ्गलार्थ सदा भगवान् से प्रार्थना किया करती थीं।

चौथा परिच्छेद

जिस विषय को जेम्स की विधवा माता बहुत काल से सोच रही थी उसी को सिद्ध करने के लिए एक दिन वह मिस्टर बाइटन के मकान पर गई। वहाँ जाकर उन्होंने कहा, "मिस्टर बाइटन, यदि हमारे गाँव में एक छोटी मोटी पाठशाला खोलने का प्रयत्न किया जाय तो क्या हर्ज है ?" उन्होंने कहा, "हर्ज तो कुछ भी नहीं, परन्तु इसका होना कैसे सम्भव है ?" जेम्स की माता ने कहा, "यदि आठ या दस परिवार के लोग इस बात पर तैयार हो जायँ तो आश्चर्य ही क्या है। एकमत होकर यदि कोई काम किया जाय तो चाहे वह कितनाही कठिन क्यों न हो पर तो भी सफलता होती ही है, केवल हम लोगो में एकता होनी चाहिए। जिस देश के लोगो में, अथवा जिस गाँव के लोगो में, ऐक्य नहीं है, उस प्रान्त के लोग अकेले चाहे कितने ही शक्तिशाली और दिग्विजयी क्यों न हों, परन्तु उन्नतिशील ससार की दृष्टि में वे निर्जीव जड़पदार्थ के सिवा और कुछ भी नहीं हैं।" इन बातों को सुन कर मिस्टर बाइटन ने बड़ी दृढ़ता से कहा, "मैं आपकी सहायता से इस पाठशाला को जारी करने का प्रबन्ध अवश्य ही

करूँगा ।" इस बात-चीत के समाप्त होने पर गारफ़ील्ड की विधवा माता अपने मकान को लौट गई । मिस्टर वाइटन ने दूसरे पडोसियों से मिल कर इस विषय को पक्का कर लिया, और जाडे के शुरू में ही उस गाँव में एक पाठशाला स्थापित हुई । गारफ़ील्ड की विधवा माता ने अपनी जमीन में से थोडी जगह मकान बनाने के लिए गाँव में दे दी । मतलब यह कि सभी लोगो की थोडी थोडी सहायता से उस गाँव मे स्कूल बन गया । लडके पढने लगे । एक शिक्षक भी न्यू हैम्पशायर से बुलाया गया ।

जिस समय का हाल लिखा जाता है, उस समय शिक्षक-मण्डली प्राय अपने विद्यार्थियो के मकान में उन्हीं के साथ पारी बाँध कर रहा करती थी, अर्थात् पाठशाला में जितने विद्यार्थी होते थे उनकी सख्या के अनुसार वर्ष दिन मे किसके यहाँ कितने दिन रहना होगा इसका हिसाब लगाते और उसी हिसाब से चलते थे । मिस्टर फास्टर शिक्षक का नाम था । वे पहले पहल गारफ़ील्ड की विधवा माता ही के मकान पर रहे, क्योंकि ये उन्हीं के देशवासी थे । विधवा का जन्म इसी न्यू हैम्पशायर मे हुआ था । शिक्षक महाशय देखने मे तो बडे भद्दे थे, परन्तु उन्होंने विना किसी पाठशाला में पढे हुए भी कुछ विद्या सीख ली थी और लिखने पढने के काम में बडे चतुर थे । उनके आते ही जेम्स उनका बडा प्रिय शिष्य हो गया । उन्होंने एक दिन जेम्स से कहा, "यदि तुम अच्छी तरह लिखो पढो तो कदाचित् तुम जनरल अर्थात् सेनापति हो सकते हो ।"

जेम्स को यह बात सुन कर बडा आश्चर्य हुआ कि सेनापति कौन चीज है, परन्तु उसने अपने मन में सोचा कि सेनापति अवश्य ही कोई अच्छी चीज होगी, नहीं तो मास्टर साहब न कहते । वह दिन भर पाठशाला मे इसी बात को सोचता रहा कि सेनापति क्या चीज है । जब ठीक ठीक न समझ सका तब उसने विचारा कि अपनी माँ से पूछूँगा । वे अवश्य ही बता देंगी ।

ज्योंही पाठशाला से छुट्टी हुई, वह तुरन्त ही दौड कर माँ के पास गया और उससे पूछने लगा—"माँ, सेनापति क्या चीज है । मास्टर साहब कहते हैं कि यदि तुम अच्छी तरह लिखो पढो तो तुम सेनापति होगे । माँ, सेनापति क्या चीज है ?"

इन बातों को सुन कर माता ने जेम्स को गले से लगा लिया । उसका मुखचुम्बन किया और उस बालक का हृदय मातृस्नेह से भर दिया । जेम्स ने फिर पूँछा, "माता, बताओ, सेनापति किसको कहते हैं ?" तब माता ने बालक का कुतूहल शान्त करने के लिए अमरीका के राष्ट्र-विप्लव का पूरा हाल बयान किया और बताया कि कैसे उस महायुद्ध में इस देश के बडे बडे सेनापतियों ने शत्रुओं के सिर काटे थे, कैसी वीरता के साथ अपने देश की रक्षा करने के लिए वे लडे थे और बहुत दिनो के घोर युद्ध के अनन्तर उन्होंने शत्रुओं पर कैसे विजय प्राप्त किया था इत्यादि उन सेनापतियो का नाम और काम सब बताया और कहा, "बेटा अब हमारा देश शान्ति में है और

यद्यपि अब शत्रुओं के सिर काटने की आवश्यकता नहीं है तथापि यदि तुम अच्छी तरह लिख पढ लो तो कदाचित् तुम्हारा नाम भी ससार मे ऐसा प्रसिद्ध हो सकता है जैसा कि एक सेनापति का।"

विधवा माता ने ऊपर की वक्तृता में यह भी कह दिया था कि इसी गारफील्ड के पुरखा भी उस महा युद्ध में शरीक थे।

माता ने जेम्स का हाथ पकड कर और अपनी ओर उसे घसीट कर कहा, "बेटा, अब तो तुमने समझ लिया न, कि सेनापति किसे कहते हैं। देखो, उस महायुद्ध के समाप्त होने पर तुम्हारे प्रपितामह सोलोमन गारफील्ड न्यूयार्क की रियासत मे चले गये। वहां उनको एक पुत्र हुआ जिसका नाम टामस था। टामस के बडे होने पर उसका विवाह हुआ और उसको एक पुत्र हुआ जिसका नाम एबरम था, और यही एबरम तुम्हारे पिता थे। अब बेटा, तुम्हें अच्छी तरह स्मरण रहेगा कि सोलोमन गारफील्ड जो कि अमरीका के राष्ट्र-विप्लव के समय एक सिपाही थे वे तुम्हारे प्रपितामह थे। न्यूयार्क के निवासी टामस गारफील्ड तुम्हारे पितामह थे और ओहियो के रहने वाले एबरम गारफील्ड तुम्हारे पिता थे। तुम्हारे पुरखों मे से कोई सेनापति नहीं हुआ था परन्तु कोई कोई उनमे से प्रतिष्ठा में सेनापति ही के बराबर थे। यदि तुम कदाचित् सेनापति हो जाओ तो तुम इतने उन्नत होगे कि तुम्हारे पुरखे स्वर्ग लोक से तुम्हारे ऊपर पुष्प-वृष्टि करेंगे क्योंकि उनमें से कोई भी इस उच्च

पद को नहीं प्राप्त कर सका था। तुम अपने कुल का मुख उज्ज्वल करके अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाओगे और संसार भर में तुम्हारा नाम फैल जायगा।"

सारी वक्तृता को जेम्स ने बड़े आश्चर्य के साथ सुना। उसको आश्चर्य इस कारण हुआ कि संसार के और लोगों से भी उसका कुछ कुछ सम्बन्ध है, और उसी के पूर्व पुरुष इस देश को बसाने के मुखिया थे और किसी समय में उन्होंने बहुत बड़े बड़े काम भी किये थे। अब तक उसको इस बात का ज्ञान न था कि ओहियो के बाहर रहने वालों से उसका कोई सम्बन्ध है या नहीं। इस नई बात को सुनकर उसके चित्त में बड़े बड़े काम करने की इच्छा उत्पन्न हुई और उसके मस्तिष्क में इन बातों का दीप्तिमान् चित्र अंकित हो गया जो चिरकाल लों बना रहा, मिटा नहीं।

जेम्स और उसके शिक्षक में बड़ा सद्भाव था। दोनों में परस्पर विश्वास और सहानुभूति भी खूब थी। एक दिन शिक्षक महाशय ने पाठशाला में एक कठोर नियम प्रचलित किया। वह नियम यह था कि कोई विद्यार्थी अपनी पुस्तक को छोड़ पाठशाला में इधर उधर न ताके। यह नियम पालन करना विद्यार्थियों के लिए कुछ कठिन था, और विशेष कर जेम्स ऐसे चञ्चल-चित्त वाले विद्यार्थी के लिए तो बड़ा ही कठिन था, क्योंकि उसके दोनों कान और आँखे उसके लिए पुस्तक का काम देती थीं। इसलिए उन आँखों और कानों को बन्द करके

बैठना उसके लिए बडा दु खदायक था, परन्तु उसने मन ही मन इस बात को ठान लिया कि वह इस नियम को यथासाध्य पालन करेगा क्योंकि उसको विश्वास था कि ऐसा करने से वह सेनापति बनेगा ।

इस नियम को पालन करने का वह यत्न तो बहुत करता था परन्तु ज्योंही कोई नई बात होती त्योंही तुरन्त उसके कान खडे हो जाते और वह इधर उधर ताकने लगता । शिक्षक महाशय भी तुरन्त ही ठोकते और वह सिर झुका लेता । थोडी देर बाद फिर वह इधर उधर देखता और शिक्षक उसे डाटते और तब वह चुप बैठ जाता । तात्पर्य यह कि दो सप्ताह तक लगातार शिक्षक ने उसे ठीक करने का प्रयत्न किया, पर उनकी सब चेष्टा निष्फल हुई । दो सप्ताह के बाद शिक्षक को दूसरे विद्यार्थी के यहाँ जाने की बारी आई । तब उन्होंने उसकी विधवा माता से एक दिन कहा, "महाशया, आपका पुत्र बहुत अच्छा लडका है, परन्तु—"

माता ने कहा, "आप 'परन्तु' कहके चुप क्यों होगये ? सकोच क्यों करते हैं, कहिए जो कुछ कहना है ।" शिक्षक ने कहा, "आपका लडका अच्छा तो है सही, पर बडा चञ्चल है, एक मिनिट भी स्थिर नहीं बैठ सकता । माता ने ठडी साँस भर कर कहा, "बेटा जेम्स, यह क्या बात है ? जेम्स ने इन बातो को सुन कर माँ के आँचल मे अपना मुँह छिपा लिया और रोते रोते उत्तर दिया, "मैं अब स्थिर रहूँगा और अच्छा लडका बनूँगा ।"

कोई मनुष्य चाहे कितना ही विद्वान् और ज्ञानी क्यों न हो परन्तु वह साधारण माध्याकर्षण-शक्ति को किसी प्रकार नहीं दबा सकता। यहाँ शिक्षक महाशय भूल से इसी शक्ति के दबाने का प्रयत्न कर रहे थे तो इसका दबाना भला कैसे सम्भव था।

माता ने शिक्षक महाशय से कहा, "महाशय, हमें मालूम होता है कि कदाचित् वह चुप बैठ ही नहीं सकता, क्योंकि वह अपनी जिन्दगी भर में कभी चुप नहीं रहा।"

शिक्षक ने कुछ काल तक चिन्ता करने के अनन्तर कहा, "आप ठीक कहती हैं, मैं इस बात को नहीं समझ सका था। मैं देखता हूँ कि पहले की अपेक्षा उसमें कुछ दुबलापन आ गया है। उसका कारण यह है कि अब वह अपनी आँखों और कानों को ठीक रखने में पहले से बहुत अधिक ध्यान रखता है। यदि उसकी आँखों और कानों को स्वाधीनता दी जाय तो कदाचित लाभ ही होगा। मैंने अपनी भूल समझ ली है।"

लड़के को रोते देख शिक्षक का दिल पसीज गया। उन्होंने उसके सिर पर हाथ धर कर कहा, "प्यारे बच्चे, रोओ मत, अब से हम दोनों एक दूसरे के मित्र बन गये। मैं तुम्हें फिर से पढ़ाऊँगा। उठो, हँसो, बोलो और [illegible]।"

शिक्षक ने अपनी भूल समझ ली थी, [illegible] माता ने उनकी आँखें खोल दी थी। [illegible] बात का विचार कर लिया था कि पढ़ [illegible] के

अपने स्वाभाविक रूप ही में चलने देंगे और साथ ही साथ कोई दूसरा और उपाय सोचेंगे।

शिक्षक महाशय ने अपनी भूल का संशोधन करने के लिए जेम्स को उसकी इच्छा के अनुसार ही सब काम करने की आज्ञा देदी। कुछ दिन ऐसी स्वाधीनता की अवस्था में रहने के अनन्तर सभी ने देखा कि इसका परिणाम बहुत ही अच्छा हुआ। जेम्स अपनी आँखों और कानों को पूर्णरीति से प्रयोग करता और इस प्रकार से तरह तरह का ज्ञान लाभ करता था।

कुछ दिन मे उसका नम्बर स्कूल के सब विद्यार्थियो से ऊँचा होगया। शिक्षक इस बात को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। उसकी माता के हर्ष को द्विगुणित करने के विचार से उन्होंने एक दिन उससे मिलकर कहा—"आपका पुत्र बहुत अच्छा काम कर रहा है। सारे स्कूल में उसके समान तीव्र, बुद्धिमान् और साहसी दूसरा कोई विद्यार्थी नहीं है। उसके सद्गुणो का परिचय देने मे हमे भी बडा गौरव जान पडता है।"

माता ने इन बातो को सुनकर शिक्षक को धन्यवाद दिया और भगवान के चरणो मे पुत्र के मङ्गलार्थ प्रार्थना करके प्रणाम किया।

एक दिन शिक्षक ने पाठशाला में सब विद्यार्थियो के सामने हाथ मे एक पुस्तक लेकर कहा—"लडको, देखो हमारे हाथ में एक पुस्तक है। इस पुस्तक का नाम न्यू टेस्टमेंट है। यह पुस्तक

मैं उस विद्यार्थी को इनाम दूँगा जिसका चाल-चलन, रीति-नीति, आचार-व्यवहार, लिखना-पढना दूसरे विद्यार्थियों से अच्छा समझा जायगा। अतएव तुम सब लोग इसके पाने की कोशिश करो। देखें किसको मिलता है ?"

इनाम का नाम सुनते ही सब लडके बडे उत्साहित हुए और बडी मुस्तैदी के साथ परिश्रम करने लगे। परन्तु दो ही चार महीने के बाद मालूम होगया कि जेम्स को छोड दूसरा कोई उस इनाम के पाने का अधिकारी न होगा। अतएव वर्ष के अन्त मे जब स्कूल बन्द होने को था तब शिक्षक ने जो एक दिन जेम्स को पास बुलाकर सब विद्यार्थियों के सामने वह पुस्तक इनाम में दी तब किसी को ईर्ष्या-द्वेष अथवा आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि सभी ने उसकी योग्यता स्वीकार कर ली थी।

जबसे जेम्स को अपने सारे काम-काज के करने मे स्वाधीनता मिल गई तभी से मानो उसकी अवस्था दिन दिन उन्नत होती गई। पाठशाला के समस्त शिक्षक उसका बडा आदर करते थे, और उसकी असाधारण बुद्धि की प्रशसा किया करते थे। पाठशाला के समस्त विद्यार्थी भी उसके गुणों को देखकर उसकी ओर चुम्बक पत्थर की नाई आकर्षित होते थे। मतलब यह कि जो जो इसके ससर्ग में आते वे ही इसको जी से प्यार करते थे। ६ ही वर्ष की अवस्था मे उसने गाँव भर में जितनी किताबें माँग मूँग कर पाई सबको आद्योपान्त पढ डाला। इसके अतिरिक्त जब कभी उसे अवसर मिलता था वह खेती के काम

करने में अपने भाई टामस की सहायता किया करता था। जब पाठशाला खुली रहती तब वह पाठशाला जाता और केवल लिखने पढ़ने ही में अपना समय व्यतीत करता परन्तु जब पाठशाला बन्द रहा करती तब वह घर पर पाठ याद करता और अपने भाई की सहायता किया करता था। एक कहावत है कि "होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" अर्थात् जो वृक्ष अच्छी तरह उपजने वाला होता है उसके पत्ते पहले ही से चिकने मालूम होते हैं। हमारे जेम्स महोदय में भी कई एक ऐसे ही सुलक्षण दिखाई पड़ने लगे। पहली बात तो यह है कि इसकी मानसिक भूख-प्यास कभी मिटती ही न थी, अर्थात् चाहे कितनी ही नई चीजें वह क्यों न जान ले पर तो भी और अधिक जानने की अभिलाषा चित्त में बनी ही रहती थी। नई चीज़ों के जानने से उसकी तृप्ति ही न होती थी।

जेम्स के ही परिश्रम से उस समय उस गाँव मे गारफील्ड और बाइटन के लड़कों ने मिल कर एक समिति कायम की जिसमे दोनों परिवार के लड़के आते और शब्दों के उच्चारण तथा ठीक ठीक हिज्जे करने का अभ्यास किया करते थे। फल उसका यह हुआ कि वे लड़के स्कूल के और लड़कों से इस विषय में बहुत बढ़े-चढ़े हो गये।

पाँचवाँ परिच्छेद



आठ वर्ष की उम्र मे जेम्स रोज अपने भाई के साथ खेत में काम किया करता था, और जब कभी टामस आया जाया करता तब जेम्स ही अकेला खेत का सारा काम-काज किया करता था। वह लकडी काटने, गाय दुहने, खेत काटने तथा और भी बहुत से कामों के करने में बडा कुशल था।

एक दिन उसकी माता ने कहा, "बेटा जेम्स, देखो, जब तुम्हारे पिता की मृत्यु हुई थी तब टामस की उम्र ११ वर्ष की भी न थी। उसने उसी समय खेत का सारा भार अपने ऊपर ले लिया था।

अब तुम्हारी उम्र ८ वर्ष की है। तुम्हें भी उस काम के लिए प्रस्तुत होना चाहिए।"

जेम्स ने तुरन्त उत्तर दिया, "मैं कर सकता हूँ।"

माता ने पूछा, "क्या बिना सीखे ही तुम यह काम कर सकते हो ?

इस बात को सुनते ही उसने तुरन्त उत्तर दिया, "अगर

टामस इस काम को कर सका था तो मैं निश्चय जानता हूँ कि मैं भी कर सकूँगा ।"

"हाँ यह तो ठीक, पर कब ? जब तुम भी टामस की उम्र को पहुँच जाओगे ।"

"हाँ हाँ, ठीक है । मैं भी यही कहता था । खैर, अब गायों को दुहने का समय आ गया है" यह कहता हुआ जेम्स वहाँ से चला गया और अपने काम में लग गया, क्योंकि उसमें एक बडा भारी गुण यह था कि अपने जरूरी काम को छोड कर कभी वह खेल-कूद में अपना समय न गँवाता था ।

एक और गुण उसमें यह भी था कि वह किसी काम के करने से मुँह नहीं मोडता था । कोई काम उससे कहा जावे, तुरन्त उसका उत्तर वह यही देता था, कि "मैं कर सकता हूँ ।" इसी "मैं कर सकता हूँ" के कारण एक बार उसकी बडी हँसी हुई थी । सुनिए —

एक दिन वह अपने साथी के साथ, जिसका नाम एडविन मेप्स था, मुर्गी का अण्डा ढूँढने जाता था । उस समय उसकी उम्र आठ वर्ष की थी । एकाएक मेप्स को एक छोटी मुर्गी का अडा मिल गया और उसने उसे उठा कर कहा, "क्यों जेम्स, क्या यह बहुत छोटा नहीं है ?"

जेम्स ने तुरन्त ही उत्तर दिया, "मैं इसे निगल जा सकता हूँ ।"

"क्या सब का सब ?"

"हाँ, सबका सब।"

"तुम नहीं निगल सकते।"

"मैं उसे जरूर निगल सकता हूँ।" इतना कहते ही जेम्स उसे अपने मुँह में डाल लिया और उसे निगलने की कोशिश ा, परन्तु उसके गले के छेद से अडा अधिक बडा था इस ारण वह उसे पहली बार न निगल सका। पहली बार काम- ा न होने के कारण उसने फिर से उसे निगलने की कोशिश ा, परन्तु अडा बडा था और गले का छेद छोटा—जाय तो से जाय। अन्त में वह अडा उसके मुँह मे ही टूट गया और दबू जो मालूम हुई तो उस टूटे अडे को मुँह में लिये हुए वह र की ओर भागा। घर पहुँच कर उसने तुरन्त एक टुकडा रोटी कर उसी अडे की सहायता से उसे चबाने लगा। थोडी देर बाने के बाद वह किसी तरह नाक मुँह बन्द करके तुरन्त उसे निगल गया।

मेप्स जो इनके साथ साथ दौडता हुआ आया था उसने तमाम क़िस्सा जेम्स की माँ, बहन और भाई से कह दिया और तब लोगो ने इनकी खूब हँसी उडाई और इन्हें बेवकूफ बनाया परन्तु माता ने केवल यही कहा, "अरे बेवकूफ लडके।"

इसी "अरे बेवकूफ लडके" के भीतर एक ऐसी बात छिपी हुई थी जिसको माता ने कदाचित् कभी अनुभव ही न किया होगा। अक्सर ऐसा देखने मे आया है कि ऐसे बेवकूफ लडके ससार मे ऐसे बडे बडे काम कर जाते हैं कि जिनको देख कर

जेम्स ने पूछा —"लेकिन क्या घटों का वजना इन जङ्गलो में वहुत मधुर न मालूम होगा ?"

माता ने कहा—"घटों की आवाज न केवल मधुर, गम्भीर ही मालूम होगी वरन् इनके वजने से सुनसान जङ्गल भी हरा भरा मालूम होगा ।"

उस दिन से गारफील्ड के वच्चे सैवेथ को मानने लगे, और चाहे कोई सभा हो चाहे न हो, परन्तु भगवान् का भजन उस दिन होता ही था और सब काम-काज बन्द रहा करता था। जेम्स की विधवा माता ने ऐसा नियम बना रक्खा था कि बाइबिल के चार परिच्छेद प्रति दिन गिर्जे मे पढे जायँगे और चार से अधिक परिच्छेद सैवेथ के दिन पढे जायँगे ।

जब वाइबिल पढा जाता था तब सब बालक तरह तरह के प्रश्न पूछा करते थे । वाइविल के किस्से जेम्स को इतने प्यार लगते थे कि जब उसने लिखना-पढना सीख लिया तब, उसने इस पुस्तक को कई बार पढा और उसके तमाम किस्से उसे याद हो गये थे। यहां तक कि कौन सा किस्सा किस पन्ने में है यह भी वह कह सकता था ।

उसकी माता वाइबिल को ईश्वर की किताब कहा करती थी । इस कारण एक दिन उसने माता से कहा —"माता तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह ईश्वर की किताब है ?"

माता ने कहा —"क्योंकि मनुष्यो ने जितनी किताबें लिखी हैं कोई भी इसके तुल्य नहीं है ।"

"लेकिन तुमने एक दिन कहा था कि मूसा, ऐशा, डेभिड, मैथ्यू, पाल इन सभो ने इसको लिखा है।"

"हाँ ठीक है, उन्हीं लोगों ने इसको लिखा, परन्तु जैसा जैसा ईश्वर ने उनको आदेश किया वैसा ही वैसा उन्होंने लिखा है। कुछ अपने मन से नहीं लिखा। वे इसको विना सहायता के नहीं लिख सकते थे।"

जेम्स ने पूछा, तो "क्या तुम इसे इसी लिए ईश्वर की किताब कहती हो?"

"हाँ ठीक है। वे ही इसके लेखक हैं। यह दूसरी बात है कि उन्होंने इसको मनुष्यों के द्वारा ही लिखवाया।"

"क्या इसकी सब कहानियाँ सच्ची हैं?",

"हाँ सब सच्ची हैं।"

"क्या यह भी सच है कि जोजेफ के पास एक कुर्ता कई रङ्ग का था?"

"हाँ, मैं समझती हूँ कि यही बात है।"

"उसके पास एक रङ्ग का कुर्ता क्यों न था। क्या इसका बनाना सहल न था?"

"उसका बाप उसे और बच्चों से अधिक प्यार करता था। इस कारण उसने उसके लिए एक ऐसा कुर्ता बनवा दिया था।"

"तो क्या एक लडके को अधिक प्यार करना बाप के लिए उचित था?"

" नहीं, उचित तो न था।"

"क्या उसका बाप नेक आदमी था ?"

"हाँ, नेक आदमी तो था, परन्तु कोई कोई नेक आदमी भी किसी किसी समय भूल कर जाते हैं।"

"अगर नेक आदमी भूल करे तो तुम उन्हें बुरे आदमियों से कैसे पहचान सकते हो ?"

"वे इतने अधिक ख़राब काम नहीं करते जितना बुरे मनुष्य करते हैं।"

"क्या अच्छे आदमी बुरा काम करना छोड नहीं सकते ?"

"हाँ, ईश्वर की सहायता से छोड सकते हैं।"

"क्या, ईश्वर सर्वदा उन्हें सहायता नहीं देते ?"

"नहीं।"

"क्यो नहीं ?"

"शायद वे सहायता पाने के योग्य नहीं हैं।"

"क्या मनुष्य उनकी सहायता बिना अच्छे नहीं हो सकते ?"

"नहीं। वे अच्छे नहीं हो सकते, और न कभी होंगे।"

"क्यो न होंगे ?"

"क्योंकि ये बडे दुष्ट हैं।"

"तो फिर वे अच्छे कैसे हो सकते हैं ?"

इस कथोपकथन से जेम्स की चित्तवृत्ति और ज्ञान-लाभ करने की इच्छा का परिचय भली भाँति मिलता है। कभी कभी ऐसा होता था कि इसके लडकपन के प्रश्नों का उत्तर देने में माता के दाँत खट्टे हो जाते थे। परन्तु इस बात को अवश्य ही

ानना पड़ेगा कि माता के उपदेश जेम्स के लिए इतने उपकारी
 कि चालीस वर्ष की अवस्था में जब वे किसी सभा मे
याख्यान देते थे तब उनको बचपन की उपदेशपूर्ण वक्तृतायें
तनी मधुर और मनोहारिणी होती थीं कि लोग उनको कान
गा कर सुना करते थे और उनका असर उनके दिलो पर
हुत दिनो तक बना रहता था ।

जब जेम्स की उम्र आठ वर्ष की थी उस समय मदादि
ोपो के निवारण करने के लिए एक समिति बहुत प्रयत्न कर
ही थी इसका असर चारो ओर फैल गया था । ओहियो में भी
जब तब इसकी चर्चा हुआ करती थी । एक दिन जेम्स की
विधवा माता ने अपने पुत्र से कहा —"मदिरा पान करना
बहुत बड़ा पाप है । मैं इस बात से बड़ी प्रसन्न हूँ कि तुम्हारे
पिता का भी ऐसा ही मत था ।"

जेम्स ने पूछा —"क्या वे रम या भिस्की कुछ भी नहीं
पिया करते थे ?"

"योंही कभी कभी । क्योंकि वे मतवाले आदमियों की सगत
कभी करते ही न थे" ।

जेम्स ने पूछा —"यदि इससे नुक़सान पहुँचता है तो
लोग मद्य पीना छोड़ क्यों नहीं देते ?"

"यह कहना बहुत कठिन है कि वे क्यों नहीं छोड़ते । कोई
कोई तो ऐसा कहते हैं कि वे छोड़ ही नहीं सकते ।"

बहुत आश्चर्य में होकर जेम्स ने पूछा —"छोड़ नहीं सकते ?"

"ऐसा कहा जाता है कि वे छोड नहीं सकते क्योंकि व इसमें इतने आसक्त हो जाते हैं कि विना इसके रहो नहीं सकते।"

जेम्स ने बड़ी दृढ़ता से कहा—"मैं इसे अवश्य ही छोड़ूँगा।"

"इस बुरी चीज का न छूना ही अच्छा है।"

"लोग मद्य क्यो पीते हैं?"

"मैं समझती हूँ कि यह कहना कठिन होगा कि लोग इसे क्यों पीते हैं। ज्यादा आदमी इसे पीते हैं क्योंकि कदाचित् वे इसे पसन्द करते होगे।"

"क्या इसका स्वाद अच्छा होता है?"

"मैं समझती हूँ कि इसका स्वाद उन्हें अच्छा लगता है जो इसे पसन्द करते हैं।"

जेम्स ने कहा—"मैं भी इसे एक बार चीख कर देखूँगा कि कैसी लगती है।"

"हे मेरे प्यारे बेटे, मैं कहती हूँ कि तुम उसे चीखो ही नहीं। यदि तुम उसे कभी न चीखो तो इतना तो निश्चय है कि तुम मतवाले कभी न होगे। देखो, बाइबिल में लिखा है "तुम मद्य की ओर मत देखो जब कि यह लाल है और जबकि रङ्गत प्याली में दीख पड़ती है और जबकि यह तरल पदार्थ की नाईं स्वय बह सकती है। अन्त में यह सांप की तरह काटता है और बिच्छू की तरह डङ्क मारती है।"

जेम्स ने पूछा—"रम मे कौन सी ऐसी चीज है जो आदमी को नुकसान पहुँचाती है?"

"उसमें एक नशीली चीज होती है, इसी कारण लोग मतवाले हो जाते हैं। देखो, दूध या पानी पीने से किसी को कुछ नुकसान नहीं पहुँचता।"

"नहीं, ऐसा तो नहीं होता।"

"हाँ, इन बलकारक चीजों के पीने मे और मादक वस्तुओं के पीने में बडा भेद है। दूध या पानी मे मादक द्रव्य कुछ नहीं है।"

"यदि मादक चीजों के देने से लोगो को नुकसान होता है तो क्यों वे इन चीजों को इसमें छोडते हैं।"

जेम्स की विधवा माता से जहाँ तक बन पडा भलीभाँति इस अन्तिम प्रश्न का उत्तर देकर उसने अपने पुत्र को शान्त किया।

सातवाँ परिच्छेद

बहुत दिनो से टामस की इच्छा थी कि वह किसी प्रकार बन्दोवस्त करके रहने के लिए आरेंज में एक अच्छा मकान बनवावे। इस कारण धीरे धीरे चार पाँच साल के वीच मे उसने कुछ लकडी, लट्ठा, बांस, बल्ली इत्यादि सामान इकट्ठा कर रक्खा था। परन्तु रुपये के अभाव से कोई बढई नहीं लगाया जा सकता था, जो मकान को बना दे। इस कारण उसे अब रुपया कमाने की बड़ी चिन्ता हुई।

सौभाग्यवश थोडे ही दिन बाद सुनने में आया कि आरेंज से २०, २५, मील दूर पर मिचिगन नामी एक गाव मे जंगल की सफाई करने के लिए कुछ लोगो की जरूरत है। टामस इस बात के सुनते ही तुरन्त वहां जाने का विचार पक्का लिया, और उसने अपने छोटे भाई से अपना मतलब सुनाया।

जेम्स इस बात को सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला, "भैया, तुम मिचिगन जाओ, और मैं यहां रह कर अपने खेत में काश्तकारी करूँगा। तुम कितने दिनो के लिए वहां जाओगे और वे तुम्हे कितनी तनख्वाह देंगे।

टामस ने उत्तर दिया कि वहाँ मैं कम से कम छः महीने रहूँगा, और ज्यादा भी रह सकता हूँ। वे हमको प्राय ३० रुपया मासिक देंगे।"

जेम्स ने भी अपने भाई के साथ जाना चाहा परन्तु उसके जाने से खेती-बारी का काम कौन करता, माता के पास कौन रहता। जब यह युक्तिपूर्ण चिन्ता उसके दिमाग में आई तब वह चुप रह गया। उस समय जेम्स की अवस्था १२ वर्ष की थी और टामस २१ वर्ष का था। पहले ही से माता और पुत्रों में यह बात तै हो गई थी कि टामस २१ वर्ष की अवस्था में बाहर जाकर रुपया कमावेगा और जेम्स १२ वर्ष में खेती करेगा। लड़कपन में टामस ही ने ऐसा प्रस्ताव किया था। अतएव मौका आने पर जब टामस ने माता से अपने जाने का पूरा हाल कह सुनाया तब यद्यपि उनके चित्त में पुत्र के विच्छेद का कष्ट अनुभव होने लगा परन्तु तो भी वे इनकार न कर सकीं, क्योंकि पहले तो वे वचन हार चुकी थीं, और दूसरे यह कि वहाँ जाने से लड़के को कुछ अधिक अनुभव प्राप्त होगा और कुछ रुपया भी कमा लावेगा—यह सोच कर वे टामस की बात पर सहमत हो गई और उसे मिचिगन जाने की अनुमति दे दी।

इधर टामस मिचिगन जाने की तैयारी कर रहा था और उधर जेम्स अपनी नई जिम्मेदारी की चिन्ता कर रहा था, और इनकी माता दोनों को अपने परिश्रम और बुद्धि-द्वारा सहायता कर रही थीं।

दूसरे दिन टामस ने अपनी माता को प्रणाम करके और अपने भाई-बहनों का हाथ चूम कर उनसे विदा मांगी और सीधे मिचिगन की राह ली । उसी दिन से जेम्स ने भी अपने खेत का सारा भार अपने ऊपर लिया । किन्तु टामस के चले जाने पर जेम्स और उसकी माता को बड़ा दु:ख हुआ क्योंकि इन भाइयों में बड़ा ही प्रेम और सद्भाव था । वह इन्हीं मुँह ताक के अपने वैधव्य का कष्ट सहन करती हुई किसी प्रकार जीवन धारण करती थी ।

यद्यपि जेम्स को अपने भाई से छूट जाने पर बड़ा ही दु:ख हुआ किन्तु तो भी उसने बड़ी गम्भीरता से खेती का आरम्भ किया । खेती करना उसके लिए बिलकुल नया काम था, क्योंकि चार वर्ष से बराबर वह अपने भाई के साथ उस काम की देख भाल किया करता था और इस कारण, उसने इस काम में बहुत सा अनुभव प्राप्त किया था । लड़कपन में जब जेम्स खेत पर काम किया करता था तब लोग उसे किसान बालक कहा करते थे, परन्तु अब उसने पूरे तौर से किसान बन कर इस काम को आरम्भ कर दिया ।

एक दिन किसी पड़ोसी ने आकर गारफ़ील्ड की माता से कहा —"आपका लड़का अपने औज़ारों को लेकर ख़ूबी से खेत पर काम करता है ।"

माता को यह बात सुन कर बड़ा आनन्द हुआ और कहा —"हाँ, हमें भी ऐसा ही मालूम होता है ।"

पड़ोसी ने कहा —"हम अगुआओ की जिन्दगी हमेशा तकलीफ से भरी रहती है।"

गारफील्ड की विधवा माता ने भी इसी बात को स्वीकार किया और इन दोनो मे कुछ देर तक इसी तकलीफ के विषय मे बात-चीत हो ही रही थी कि इतने में जेम्स वहाँ आ पहुँचा।

पड़ोसी ने तुरन्त पूछा —"क्यों जेम्स, इस विषय में तुम्हारी क्या राय है ?"

जेम्स ने पूछा —"किस विषय मे ?"

"यही कि साधारण लोगो की अपेक्षा अगुआओं की जिंदगी हमेशा ज्यादा तकलीफ से भरी रहती है।"

जेम्स ने कहा —"जब और लोगों की तकलीफ के विषय मे मैं कुछ जानता ही नहीं तब भला मैं कैसे कह सकता हूँ कि किन लोगों की तकलीफ ज्यादा है। हम लोगों की या शहर वालों की। मैं समझता हूँ कि हम लोगो की मेहनत है, तकलीफ नहीं है, क्योकि मेहनत एक चीज है और तकलीफ दूसरी चीज। मेहनत को कभी तकलीफ नहीं कह सकते। जो मेहनत को तकलीफ कहा जाय तो हमारी समझ में शहर के अमीरो की मेहनत तकलीफ देनेवाली है, क्योंकि उनको अपने रुपयो का हिसाब-किताब और उसकी खबरदारी के लिए हमेशा फिक्र करनी पड़ती है, इस कारण उन्हे रात रात भर नींद नहीं आती। नींद न आने से खाना नहीं हजम होता, दस्त खुल कर नहीं होता और इस कारण शरीर नीरोग नहीं रहता। इस

यदि देखा जाय तो कहना पड़ता है कि अमीरों की मेहनत तकलीफ देनेवाली है, हम लोगों की नहीं।"

जेम्स कभी मेहनत को तकलीफ नहीं कहा करता था बल्कि मेहनत को वह इतना पसन्द करता था कि उसके ... के चले जाने पर जब वह खेत पर जाता और कठिन ... करता तब वह पहले से कहीं अधिक प्रसन्न होता।

एक दिन जेम्स हँसता हुआ अपनी माता के पास आया कहने लगा —"माँ, मैंने काम करने का एक नया ही ढंग निकाला है। वह यह कि "काम के बदले काम न कि काम के बदले दाम।" अर्थात् यदि तुम हमारा कुछ काम करदो तो मैं भी तुम्हारा कुछ काम कर दूँगा, उसके लिए न तुम मुझे कुछ दाम दोगी न मैं तुम्हें कुछ दूँगा और मैंने मिस्टर लेम्पर से इसका बन्दोबस्त किया है। मैं उनका थोड़ा बहुत काम कर दूँगा और वे मुझे अपने बैलो को देंगे, जिससे मैं अपना काम करूँ।" माता ने प्रसन्न होकर कहा —"यह तुमने बहुत अच्छा काम किया। इससे तुम्हारी भी भलाई होगी और तुम्हारे साथी की भी। तुम्हारे साथी बूढ़े आदमी हैं। उनकी राय तुम्हारे लिए बड़ी लाभदायक होगी।"

काम करने का नया तरीक़ा जो जेम्स ने जारी किया उससे दोनो को बड़ा लाभ पहुँचा। जेम्स को बैलों से बहुत बड़ी मिली, और मिस्टर लैम्पर भी जेम्स सरीखे बुद्धिमान् ... सहायता पाकर बहुत खुश हुए। जेम्स में — ...

ण यह था कि वह हर काम को बड़ी चतुराई से कर सकता ा। इस कारण लैम्पर साहब उसकी सहायता से बहुत प्रसन्न थे।

पाठक, तुमने कदाचित् जार्ज स्टीफनसन का नाम सुना होगा। इन्होंने रेल चलाने के इंजन का आविष्कार किया था। वे कहा करते थे—"मैंने कलों के विषय में किसी गुरु के पास कुछ भी नहीं पढ़ा था वरन् कल ही मेरा गुरु था।" थे एक पुतलीघर में काम किया करते थे। सनीचर के दिन जब आधे दिन की छुट्टी हो जाती और सब कुली मजदूर पुतलीघर से बाहर चले जाते तब ये अकेले वहाँ रह कर कलों को खोला करते और उनके पुर्जों को साफ किया करते थे और हर एक विषय को अच्छी तरह समझने की कोशिश किया करते थे। ऐसा करते करते इन्होंने स्वयं एक नये प्रकार की कल आविष्कृत की और इसी कल के द्वारा इन्होंने रेल चलाई। इनके विषय में जब आलोचना की जाती है तब यही कहना पड़ता है कि कल ही इनका गुरु था। इसी प्रकार यद्यपि जेम्स ने किसी पाठशाला में नहीं पढ़ा था, तोभी हमेशा उसको उसके खेत से सबक़ मिलता रहा था। उस खेत ने उसको बहुत सी अच्छी अच्छी बातें सिखाई थीं। उस खेत के कठोर परिश्रम के साथ रह कर उसमें प्रौढ़ता आगई थी। उसकी मेधाशक्ति प्रबल हो गई थी और उसका चरित्रगठन हो गया था।

इस काम के करते समय उसको पढ़ने के लिए बहुत थोड़ा

समय मिलता था, परन्तु जो कुछ समय मिलता था उसी में वह कुछ न कुछ पढ़ा करता था। पर तोभी उसकी विद्यातृष्णा कभी शान्त न होती थी।

जेम्स की माता प्राय कहा करती थी—"वेटा, तुम्हारे लिए केवल खेत जोतने का काम करना ठीक नहीं है। तुम्हारे लिए विद्या-उपार्जन करना भी उचित है।"

इस बात के उत्तर में जेम्स कहता था,—कि यदि ईश्वर को यही मजूर है कि मैं विद्वान् बनूँ और अच्छा काम करूँ तो वे ही कोई न कोई उपाय निकाल देंगे, परन्तु ऐसी अवस्था में विद्या का उपार्जन करना कठिन मालूम होता है।"

आठवाँ परिच्छेद


र्य नारायण डूबने ही पर थे। पश्चिमी आकाश में लालिमा छा गई थी। गडरिये अपनी भेड़-बकरियों को जगल से चरा कर लौट रहे थे। चिड़ियाँ अपने दिन भर की सैर के अनन्तर बसेरा लेने को जा रही थीं। बेचारे गरीब कुली मजदूर भी दिन भर के कठोर परिश्रम के बाद अपने अपने घर लौट रहे थे। इतने में जेम्स नाचता, कूदता, चिल्लाता घर आया और बोला—"माँ माँ, टामस आ रहा है।" इतना कह कर वह फिर निकल गया और टामस से मिलने को दौड़ा। माता ने इन बातों को सुन कर चाहा कि वह भी जेम्स की तरह दौड़ कर टामस से मिलने जाय परन्तु उसके बुढापे ने इस उमङ्ग को रोक दिया। वह दौड़ कर बाहर न जा सकी किन्तु घर के बाहर आकर खडी हो गई और टामस की राह देखने लगी। थोड़ी देर बाद क्या देखती है कि दोनों भाई परस्पर एक दूसरे का हाथ पकडे हुए प्रेम से बातें करते करते चले आ रहे हैं। जब वे घर पहुँचे तब माता ने तुरन्त टामस को अपनी छाती से लगा लिया और बड़ी देर तक दोनो माँ-बेटे उसी अवस्था में खडे रहे। दोनों आवाक्

थे। किसी के मुँह से कोई बात नहीं निकली। केवल जेम्स जब तब अपने लड़कपन की बातों से उस समय के को दूर कर देता था। सात महीने के वियोग को जेम्स एक मुहूर्त्त में बिलकुल भूल गया। उसके चित्त में शान्ति गई। माता को भी कुछ कम आनन्द नहीं हुआ।

जब सब लोग भीतर गये तब टामस ने अपनी जेब से दो तीन मुट्ठी सोने के सिक्के निकाल कर माँ की गोद में डाल दिये। जेम्स इन सिक्कों को देख कर बहुत ख़ुश हुआ मारे ख़ुशी के चिल्ला उठा और बोला, "माता, अब हम का नया मकान बन जायगा।"

टामस ने कहा —"अब एक बढ़ई मुकर्रर करना चाहिए, क्योंकि बढ़ई वगैरा का काम ठीक-ठाक करके मैं फिर चला जाऊँगा। मिचिगन में अभी बहुत काम है।"

दूसरे दिन एक होशियार बढ़ई, जिसका नाम मिस्टर ट्रीट था, बुलवाया गया और काम करने के लिए नियत किया गया। जेम्स और टामस दोनो भाई क्लीभलैण्ड से ईंट, चूना आदि लाने के लिए गये, और दो दिन बाद इन चीजों को लेकर लौट आये और देखा कि मिस्टर ट्रीट अपने काम को बड़ी और होशियारी के साथ कर रहा है।

जेम्स जब तब इस बढ़ई के पास आता और उसके काम को बड़े गौर से देखता और उसके औजारों को टटोला करता

ह देख कर मिस्टर ट्रीट ने एक दिन कहा —"जेम्स, मालूम
ता है कि तुम हमें मदद दिया चाहते हो ।"

जेम्स ने तुरन्त उत्तर दिया —"अगर कोई काम मुझे दो तो
करने को राजी हूँ ।"

मिस्टर ट्रीट ने कहा —"अच्छा इस रुखानी और हथौड़े
ो लो और इस तख्ते को छील कर उसमे गड्ढा करो जैसा
करता हूँ ।"

जेम्स ने बहुत जल्द उसमें गड्ढा कर दिया और कहा —
'मिस्टर ट्रीट, मैंने इसको कर लिया है और अब मुझे
सरा दो ।" मिस्टर ट्रीट ने चकित होकर पूछा —"इतनी
ल्दी कर लिया ! देखें ।" यह कह कर उस तख्ते को लिया और
सको अच्छी तरह जाँचा और कहा —"शाबाश रे बहादुर,
हुत अच्छी तरह किया है । मैं भी इससे अच्छा न कर सकता
ा । अच्छा लो । दूसरा बनाओ ।"

इसी तरह एक एक करके उसने ६ तख्तों में गड्ढा
देया और हर एक गड्ढे बड़ी सफ़ाई से बने हुए थे ।
ाना देने के बाद शाम हो गई और बढ़ई घर चला गया

दूसरे दिन जब बढ़ई आया तब उसने जेम्स से
'तुमने सूराख बनाना सीख लिया है । अब
ीखो ।

जेम्स ने बहुत खुश
करूँ ?"

बढई ने पूछा.—"तुम इन तख्तों को सफाई से गढ हो जैसा कि मैं करता हूँ ?"

जेम्स ने तुरन्त उत्तर दिया —"मैं जरूर गढ सकता हूँ ये तख्ते जब गढने ही के लिए बनाये गये हैं तब मैं जरूर सकूँगा । मुझे दीजिए ।"

बढई ने दो तख्ते जेम्स को दिये, और उसने उन्हें शुरू किया ।

उस समय रन्दे का रिवाज बहुत कम था, और आरेंज के गांव मे तो था ही नहीं । रन्दे का काम बसूले ही लिया जाता था, इस कारण रन्दे का काम बहुत मामूली का हुआ करता था। मकान भी बहुत मामूली तौर के जाते थे। आज कल जैसी सफ़ाई से काम लिया जाता है समय कोई इतनी सफाई पर ध्यान न देता था। रहने के जैसा तैसा मकान बना लेते थे ।

जिस समय बढई तख्तों को गढ रहा था उस समय जे ने उस काम को अच्छी तरह गौर से देखा था और उसे सी था। इस कारण वह इस काम को भी आसानी से लगा ।

कप्तान सामुयेल ब्राउन जो कि बडे प्रसिद्ध पुल वाले थे ट्वीड नदी के किनारे रहा करते थे । वे चा उसी ट्वीड नदी के आर पार झूलों - वा कि वे इसी विषय को सोच रहे थे

ो समय एक दिन सुबह को घूमते घूमते वे अपने बाग की
र गये। वहाँ अकस्मात् उन्होंने एक मकडी का जाला देखा।
। जाले को उन्होंने अच्छी तरह जाँचा और समझा कि वह
े बनाया गया है। उस जाले को देख कर उन्हें पुल बनाने
। उपाय सूझ गया। उन्होंने समझ लिया कि लोहे की जजीर
र लोहे के रस्सो को जोड जोड कर बनाने से वे भी एक
ले का पुल बना सकते हैं। ऐसे जाले कदाचित् हम लोग
ज देखा करते हैं, किन्तु उन्हें देख कर हमें पुल बनाने की
त नहीं सूझती। कारण इसका यह है कि हमारी आँखें अन्धी
। ऐसा होने के लिए आँखों की दृष्टि तीक्ष्ण होनी चाहिए,
द्धि में तेजी होनी चाहिए। जेम्स की दृष्टि भी ऐसी ही तीक्ष्ण
ी। इस कारण बढई को गढने का काम करते देख कर उसने
ुरन्त गढना सीख लिया। जब वह दो एक तख्तों को गढ चुका
ब उसने कहा—"मिस्टर ट्रीट, इस काम में मुझे बडा मजा
आता है। यह बहुत अच्छा काम है।"

मिस्टर ट्रीट ने कहा—"हाँ ठीक है, परन्तु जब तुम्हें
दिन दिन भर इसी काम में लगा रहना पडेगा तब तुम्हें मजा न
आवेगा क्योंकि इस काम को अच्छा तरह करने में चोटी से एडी
तक पसीना आता है।"

जेम्स ने कहा—"सिर्फ पसीने ही की जरूरत नहीं वरन
और भी किसी चीज की आवश्यकता होती है, अर्थात् बुद्धि की
जरूरत होती है।"

मिस्टर ट्रीट इस उत्तर पर बहुत खुश हुआ
बोला —"तुमने ठीक समझ लिया है और तुम इस
जरूर अच्छी तरह कर सकोगे। हमें आशा होती है कि
एक अच्छे बढ़ई हो सकते हो।"

जेम्स ने दु:खित होकर कहा—"लेकिन हमारे लिए
बनना कुछ सहज काम नहीं है क्योंकि हमे मौका नहीं है।

मिस्टर ट्रीट ने कहा —"तुम ठीक कहते हो, परन्तु
कहावत है—'जो चाहता है वह पाता है'।"

जेम्स ने कहा —"माँ भी ऐसा कहा करती हैं।
कहावत से इतना लाभ तो अवश्य ही होता है कि बहुत से का
काम सहल हो जाते हैं।

जब तख्ते रन्दे के जरिए साफ हो गये तब मिस्टर ट्री
कहा —"जेम्स, तुम्हारे लिए एक दूसरा काम है, करोगे?

जेम्स ने बडी खुशी से पूछा —"वह काम क्या है
दीजिए।"

ट्रीट ने कहा —"बरतों में कांटा ठोकना है। इस काम
ज्यादा मेहनत की जरूरत नहीं है। केवल एक बात का
रखना कि कांटे के ठीक सर पर हथौड़ा मारना चाहिए।
इधर उधर पड़ने से ठीक न होगा।"

इतना कहने के बाद मिस्टर ट्रीट ने दो तख्ते निकाल
और कहा —"इनमें जैसे मैं कील ठोकता हूँ वैसे ही तुम ठों

उन तख्तों को जोड कर जब जेम्स ने कील ठोकी तब उसका निशाना कुछ तिरछा पडने से कांटा झुक गया, और मिस्टर ट्रीट हँसने लगे, और कहा —जेम्स, इसमें होशियारी चाहिए।"

दूसरी बार तख्तों को जोड कर और कांटा ठीक स्थान पर रख जेम्स ने कहा —मिस्टर ट्रीट, अब मेरी होशियारी देखिए।" इतना कहते उसने ऐसा हथौडा मारा कि कांटा उन तख्तों में धँस गया।

यह देख कर ट्रीट बहुत खुश हुआ और बोला —जो लडके अपनी हार पर लज्जित नहीं होते वरन् दूनी मुस्तैदी से काम करते हैं वे ही अन्त में जीतते हैं और दिग्विजयी पुरुष होते हैं। देखो, क्यूरेन, जो कि आयरलैण्ड का रहने वाला था, एक बडा प्रसिद्ध वक्ता हो गया है। वह लडकपन में बडा तुतला था। जिस दिन वह पहली वक्तृता देने के लिए उठा उस दिन वह इतना तुतलाया कि उसके मुँह से बात तक न निकली। यह देख कर लोग हँसने और ताली बजाने लगे। इन अपमान-सूचक बातों ने उस बालक के अन्तरात्मा को हिला दिया और उसने कहा —"आज तुम लोग जितना चाहो हँस लो, परन्तु मैं इस तुतलेपन को अवश्य ही दूर करूँगा और तब तुम हमारी वक्तृता सुन कर दांतों में उङ्गली दबाओगे।" क्यूरेन ने जैसा कहा थोडे दिन में वैसा ही कर दिखाया। इसका कारण यह है कि वह अपनी हार पर लज्जित नहीं हुआ वरन् तुतलापन को दूर करने पर दृढप्रतिज्ञ हो गया और अन्त में वह जीत गया।"

इसके बाद जेम्स ने कई तख्तों में कीलें लगाईं और उस काम को पूरा कर दिया।

मकान पूरा हो जाने पर बढ़ई घर चला गया, परन्तु जेम्स के चित्त में यह बात समाई कि वह बढ़ई का काम करके कुछ रुपया कमावे। उसने अपने मन की बात किसी से प्रकाशित नहीं की। वह दिन रात चुपचाप सोचा करता था।

जब बहुत दिन बीत गये और वह इस बात को छिपा न सका तब उसने एक दिन अपनी माँ से कहा —"मैंने रुपया कमाने का एक उपाय सोचा है। यदि अनुमति दो तो कहे।"

माता ने कहा —"वह क्या है, कहो बेटा।"

उसने कहा —"बढ़ई का काम करके रुपया कमाऊँगा। मिस्टर ट्रीट के पास जाने से वे हमें कुछ न कुछ काम अवश्य ही दे देंगे।" इसके पहले वह मिस्टर ट्रीट से काम का बन्दोबस्त कर आया था। ज्योंही माता इस बात पर राजी हुई उसने तुरन्त कहा —"मैं कल सवेरे काम करने जाऊँगा। मिस्टर ट्रीट ने मुझे काम दिया है।"

माता इस बात को सुन कर बहुत चकित हुई और कहने लगीं, "तुम काम करने तो जाओ परन्तु दो तीन घण्टे से अधिक काम कदापि न करना। दो तीन घंटे में ही लौट आना।"

जेम्स ने कहा —"माता, यदि कल मैं दो तीन घंटे में लौट आऊँ तो तुम समझना कि या तो मेरा कोई अङ्ग भङ्ग हो गया

है अथवा वह काम पूरा हो गया है, इस कारण लौट आया हूँ। दो तीन घटे मे लौटने का कोई दूसरा कारण न होगा।"

दूसरे दिन सवेरे जेम्स मिस्टर ट्रीट के पास गया। उसने उसको रन्दा करने के लिए तख्ते निकाल दिये और कहा —"मैं तुम्हे पचास तख्ते रन्दा करने के लिए एक रुपया दूँगा।"

ये बाते है हो जाने पर जेम्स ने अपने कपड़ों को उतार कर रन्दा करना आरम्भ किया और वह दिन भर बराबर वही काम करता रहा।

उसने शाम को कहा —" मिस्टर ट्रीट" मैंने सौ तख्ते छील डाले हैं।"

ट्रीट को यह बात सुन कर बडा आश्चर्य हुआ, परन्तु गिन कर जब देखा तो पूरे सौ तख्ते छिले हुए मिले। उसने कहा —"देखो जेम्स, इतनी मेहनत तुम्हारे लिए अच्छी नहीं है क्योंकि इससे तुमको बडी हानि होगी। तुमने जितना काम आज किया है उसका आधा भी करना उचित नहीं है।"

जेम्स ने इन बातो पर कुछ भी ध्यान न दिया। अन्त मे दो रुपया पाकर हँसता कूदता अपनी माँ के पास गया और झट पट दो रुपये निकाल कर माँ की गोद में डाल दिये।

माँ इन रुपयो को पाकर कुछ बोल न सकी। चुप रह गई।

नवाँ परिच्छेद ।

मिस्टर वाइटन नाज रखने के लिए एक खत्ता बनवाना चाहते थे, और उन्होंने मिस्टर ट्रीट को इस काम के लिए मुकर्रर किया था । जब मिस्टर ट्रीट ने काम करना आरम्भ कर दिया उसके दो तीन दि नके बाद वह एक दिन जेम्स की विधवा माता से मिलने गया । उनसे मिलकर उसने कहा —"यदि जेम्स को काम करने का अवसर हो और काम करने की इच्छा भी हो तो कृपा करके उसे मेरे पास भेज दीजिएगा, क्योंकि मेरे पास खत्ता बनाने का एक काम आया है ।"

इस बात के समाप्त होते न होते जेम्स वहाँ आ पहुँचा और उसने बडी प्रसन्नता से कहा —"मिस्टर ट्रीट, मुझे अवसर भी है और काम करने की इच्छा भी पूरी है । क्या मैं कल से काम करने आऊँ ?"

ट्रीट ने कहा —"हाँ कल सवेरे से तुम आना । मैं तुम्हें एक रुपया रोज दूँगा ।" इतना कह कह कर मिस्टर ट्रीट वहाँ से चला गया ।

जेम्स की माँ ने कहा —"देखो बेटा, तुम इस काम को नहीं जानते । इसे तुमको सीखना होगा । एक बात याद रखना

कि जिस किसी काम को तुम करो उसे पूरी तौर से सीख कर करो। अधूरा काम अच्छा नहीं होता।"

जेम्स ने इन बातों को मान लिया और माँ ने जैसा कहा वैसा ही किया।

दूसरे दिन सबेरे वह मिस्टर ट्रीट के मकान पर गया और जाते ही उससे कहा—"मिस्टर ट्रीट, मुझे क्या करना होगा। कृपा करके बता दीजिए और एक बार दिखा दीजिए ताकि मैं उसे अच्छी तरह सीख लूँ और तब करूँ।"

मिस्टर ट्रीट ने कहा—"मैं जिस काम को कर रहा हूँ उसे तुम गौर से देखो और समझने की कोशिश करो। जहाँ समझ में न आवे वहाँ हमसे पूछ लेना। मैं तुमको सब बातें बताता रहूँगा।"

जेम्स ने वैसा ही किया और ट्रीट भी उसे दिन भर काम दिखाता, बताता और सिखाता रहा। अन्त में उसने दिन भर में काम को अच्छी तरह सीख लिया, और दूसरे दिन काम करना शुरू किया।"

चालीस दिन के बाद काम समाप्त हो गया। तब मिस्टर ट्रीट ने प्रसन्न होकर कहा—"जेम्स, तुमने चालीस दिन में चालीस रुपये कमाये हैं उनको लो और घर जाओ, और फिर जब कभी काम लगेगा मैं तुम्हें बुला लूँगा।"

मिस्टर ट्रीट को सलाम कर जेम्स उछलता-कूदता अपनी

माँ के पास गया और सब रुपये उनकी गोद में रख दिये। माँ भी बहुत खुश हुई।

जाड़े के दिनों में जब स्कूल खुला तब उसने भी और लड़कों के साथ स्कूल जाना आरम्भ किया। छुट्टियों में उसने घर पर गणित शास्त्र को अच्छी तरह पढ़ा था। इस कारण उसमें उसने बड़ी निपुणता प्राप्त कर ली। पाठशाला के लड़कों का यह ख़याल था कि जेम्स उन लोगों के शिक्षक से भी अधिक जानता है।

एक दिन ऐसा हुआ कि मास्टर साहब ने क्लास में एक सवाल दिया जिसको कोई लड़का न कर सका। तब मास्टर साहेब ने स्वयं उसको किया परन्तु उनका भी जवाब किताब से न मिला। तब उन्होंने कहा—"किताब में जवाब गलत है। ख़ैर, मैं इसे कल फिर करूँगा।"

दूसरे दिन मास्टर साहब ने फिर लड़कों से पूछा—तुमने सवाल किया है?" लड़कों ने उत्तर दिया—"सवाल तो किया है परन्तु जवाब किताब से नहीं मिलता।"

तब मास्टर साहब ने बड़ी दृढ़ता से कहा—"किताब का जवाब अवश्यही गलत है।"

इतने में जेम्स खड़ा हुआ और बोला—"मैंने उस सवाल को किया है और मेरा जवाब किताब से भी ठीक मिलता है।"

मास्टर ने उसकी स्लेट को अच्छी तरह जाँचा और देखा कि जवाब ठीक है। तब उनको बड़ा क्रोध हुआ और वे कुछ

एक दिन वह अपनी छोटी विल्ली को साथ लेकर बाग में घूमने गया। वहाँ उसका मित्र डेभिड भी अकस्मात् आ पहुँचा। डेभिड ने वहाँ जाते ही उस बिल्ली पर ईंट फेंकना आरम्भ किया। यह देख कर डरके मारे विल्ली घर भाग गई। तब जेम्स ने डेभिड से कहा —"पशुओं पर अत्याचार करना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। वे अनबोल जानवर हैं, थोड़े ही मे डर जाते हैं।"

डेभिड ने कहा —"मैं नहीं जानता था कि यह बिल्ली तुम्हारी है। नहीं ढेला न फेकता। मैंने उसको मारा तो नहीं।"
जेम्स ने कहा —"मारा नहीं, परन्तु डर तो दिखाया, और दूसरे यह कि वह चाहे मेरी बिल्ली हो और चाहे किसी की हो तुम्हें उन पर अत्याचार करना ही न चाहिए।"

डेभिड इस उत्तर पर बहुत लज्जित हुआ और जेम्स की बातो पर मजाक करता हुआ घर चला गया।

चाहे मजाक करके डेभिड ने अपनी लज्जा प्रकट न होने दी परन्तु उसने अपनी मूर्खता अवश्य ही प्रकाश की।

जेम्स की विचारशक्ति और सहानुभूति की भी बानगी देख लीजिए —

जिस पाठशाला में जेम्स पढा करता था उसी में एक छोटा लडका भी पढता था। उस बेचारे का बाप न था और कोई बडा भाई भी उसकी मदद के लिए न था। पाठशाला के लडके प्राय उस बेचारे को छेडा करते थे।

जेम्स था तो केवल १३ वर्ष का बालक, परन्तु उसके हाथ-पैर आदि अग बड़े लम्बे चौड़े और बलिष्ठ थे, देखने में वह एक दृढ युवा मनुष्य मालूम होता था ।

एक दिन उसने लडको से कहा —"देखो, उस बेचारे अनाथ को छेड़ना तुम लोगों को उचित नहीं है। उसका कोई बडा भाई भी नहीं है कि जो उसकी मदद करे । अतएव आज से तुम लोग उसे मत छेड़ना । यदि उसे छेडना हो तो मुझे छेड लेना।"

इतना सुनते ही लडको ने हँसी दिल्लगी करना आरम्भ किया। उनमें से एक ने कहा —"तो क्या आज से तुम उसके बाप और भाई का काम करोगे।"

जेम्स ने उत्तर दिया —"कम से कम जब तक वह स्वय अपनी सहायता नहीं कर सकता तब तक मैं उसकी सहायता करूँगा।"

बडी देर तक हँसी-दिल्लगी करने के बाद सब लड़के मान गये। उस दिन से सबने उसको छेडना बन्द कर दिया।

छुट्टियो में उसने अँगरेजी की कई किताबे पढी थी । उनमें से राबिन्सन् क्रूसो को वह बहुत पसन्द करता था। और कई बार उसने उसको पढ़ा था। एक और पुस्तक जिसका नाम "एलोनजो मेलिसा" था उसको भी उसने कई बार पढा था, परन्तु वह कहा करता था कि वह पुस्तक राबिन्सन् क्रूसो के तुल्य न थी ।

मिस्टर ट्रीट को फिर एक खत्ता बनाने की जरूरत हुई। इस कारण उसने एक दिन जेम्स से मिल कर कहा —"यदि काम किया चाहते हो तो कहो, मेरे पास काम है।"

जेम्स ने कहा —"जरूर करूँगा, कबसे करना होगा, बताइए।"

"जबसे तुम्हारा जी चाहे।"

"अच्छा, कल से आऊँगा।"

मिस्टर ट्रीट ने इतना कह कर उनसे विदा ली और जाते समय कह दिया कि तुम्हारा मेहनाता उतना ही होगा जितना पहले था।

दूसरे दिन से जेम्स काम पर जाने लगा और एक महीने में काम समाप्त होगया।

अबकी बार मिस्टर ट्रीट को कुछ बताना नहीं पडा। जेम्स ने स्वय ही सब काम कर लिया।

काम के पूरा होने पर मिस्टर ट्रीट ने तीस रुपये निकाल कर जेम्स को दिये और जेम्स उनको लेकर वैसा ही नाचता-कूदता घर गया, और उसने सब रुपये माँ को जा दिये।

इसी प्रकार जेम्स लिखता-पढता भी था और साथ ही बढई का काम करके रुपया भी कमाता था।

एक और घटना का उल्लेख करके इस परिच्छेद की समाप्ति की जायगी।

एक दिन एडमिन् मेपस ने उससे कहा —"भाई, मैं अपने बाप से भेंट करने क्लीभलैण्ड जाऊँगा और चाहता हूँ कि तुम भी मेरे साथ चलो ।"

जेम्स सम्मत हो गया और बोला —"मैं इस बात को माँ से पूँछ लूँ ।"

उसकी माता ने कुछ रोक टोक न की और दूसरे दिन सवेरे दोनो मित्रों ने अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर क्लीभलैण्ड की ओर यात्रा आरम्भ कर दी।

दोनो निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये और काम समाप्त करने के बाद लौट भी आये। इन दोनो के घोडे बहुत तेज थे, इस कारण जब वे बडी तेजी से चले आ रहे थे तब रास्ते में एक और आदमी इनके पीछे पीछे आरहा था। वह किसी तरह इनके आगे नहीं बढ सकता था, इसलिए इन लोगो को गालियाँ देता था कि तुम लोग हट जाओ। भला ये लोग कब हटनेवाले थे। एडमिन मेपस ने कहा —"यदि सामर्थ्य हो तो आगे बढ जाओ, रास्ता तो पडा है।"

इस बात पर वह और झुँझला गया, परन्तु कर कुछ न सका।

रास्ते में एक पडाव आया। वहाँ दोनों मित्र उतरे और थोडी देर तक आराम करते रहे। इतने में वह आदमी भी घोडा दौडाता वहाँ आ पहुँचा। आते ही उसने इन दोनो को गालियाँ

देनी शुरू कीं और कहा —"वदमाश लडको, जी मे आता है कि तुम लोगो को एक एक चाबुक मारूँ।"

इतने में जेम्स आगे वढ आया और बोला —"यदि मारने का इरादा करते हो तो पहले मुझे मार लो तव उसे मारना।"

जेम्स के वलिष्ठ हाथ-पैरों को देख कर वह डरा और उसने कहा —"तुम्हे नहीं, तुम्हे नहीं, उसको मारूँगा।"

तब जेम्स ने घुडक कर कहा "तुम उसे क्यों मारोगे। दोष तो तुम्हारा ही है। तुम्हारे लिए रास्ता वहुत था, तुम गये क्यो नहीं। तुम्हारा घोडा तेज नहीं दौड सकता था। अतएव गलती तुम्हारे घोडे की है, न कि उसकी। तुम उसे व्यर्थ गालियां दे रहे हो। खबरदार, अब गाली मत बको। यदि अपनी भलाई चाहते हो तो घर लौट जाओ।"

इतना सुनते ही वह डर गया और तुरन्त घोडे पर सवार हो निकल भागा।

इसके बाद दोनो मित्र हँसते हुए घर लौट आये।

दसवाँ परिच्छेद ।

एक किसान, जिसका नाम मिस्टर स्मिथ था श्रौर जो पोदीना की खेती किया करता था, एक दिन जेम्स की विधवा माता से मिला श्रौर बोला —"पोदीना बोने का समय आगया है। इस कारण मैंने बीस लड़कों को उस काम के लिए नियत किया है। मैं चाहता हूँ कि जेम्स को भी उसी काम में लगाऊँ, क्योंकि मैंने देखा है कि जेम्स लड़कों से बहुत अच्छी तरह काम ले सकता है। उसकी सहायता मिलने से हमारा काम बहुत अच्छी तरह हो जायगा। यदि आप आज्ञा दीजिए तो मैं उससे इस विषय में बातचीत करूँ।"

जेम्स की माता ने कहा —"आज कल वह अपनी खेती के काम में ऐसा फँसा हुआ है कि उसको बिलकुल फुर्सत नहीं है।"

मिस्टर स्मिथ ने बहुत कुछ विनती की श्रौर कहा —"आप कृपा करके किसी तरह उसको मेरे काम में नियुक्त करा दीजिए, नहीं तो यह काम रुक जायगा।"

इसके बाद दोनों में बहुत तर्क वितर्क हुआ परन्तु अन्त में

वह राजी हो गई और जेम्स को वहाँ काम करने को आज्ञा दे दी ।

दूसरे दिन जेम्स काम पर गया और जाते ही उसने लड़कों से दोस्ती कर ली और अपनी स्वाभाविक मुस्तैदी से काम आरम्भ किया, और थोढे ही दिनो में काम पूरा कर दिया ।

जब जेम्स की उम्र १५ वर्ष की थी तब वह मिस्टर ट्रीट के साथ एक गोदाम बनाने के काम मे लगा हुआ था । गोदाम का मालिक इस लडके का रग-ढग, चाल-ढाल देख कर बहुत मोहित होगया था और चाहता था कि उसको अपने काम में लगा ले ।

जब उन लोगों का गोदाम बनाना पूरा होगया तब गोदाम के मालिक मिस्टर वार्टन ने एक दिन जेम्स से कहा —"यदि तुम हमारे कारखाने में काम करना स्वीकार करो तो मैं तुम्हें २८) रुपये मासिक दूँगा, और लोगो को यद्यपि २४) ही रुपये देता हूँ, परन्तु तुम्हें चार रुपये अधिक दूँगा ।"

जेम्स ने कहा —"मैं अपनी माता से बिना पूछे इस बात का कुछ भी उत्तर नहीं दे सकता ।"

मिस्टर वार्टन ने कहा —"अच्छा तुम अपनी माता से पूछ कर बहुत जल्द इस बात का उत्तर देना क्योंकि मैं बहुत चिन्तित रहूँगा ।"

जेम्स ने कहा —"यदि मैं काम करूँ तो आगामि सोमवार

को अवश्यही आपके पास उपस्थित हूँगा और यदि न करूँ तो न आऊँगा।" यह कह कर जेम्स वहां से घर चला गया।

मिस्टर वार्टन एक सौदागर थे जो सज्जी मिट्टी का कारोबार किया करते थे। राख खरीद कर उससे सज्जी निकालना उनका व्यवसाय था।

जेम्स ने जब अपनी माता से उस नये काम के विषय में कहा तब उन्होंने उत्तर दिया कि वह काम तुम्हारे लिए अच्छा न होगा, क्योंकि उस काम में अनपढ़े नीच लोगही रहा करते हैं। यदि तुम उनकी सगत में पड़ोगे तो तुम्हारा चरित्र भी दूषित हो जायगा।

यह बात जेम्स के जी में खटक गई और उसने कहा—"मैं वहां काम करने जाऊँगा या अपना चरित्र बिगाड़ने। जिस समय काम न रहेगा उसी समय चरित्र बिगाड़ना सम्भव हो सकता है, और वहां जाकर मैं इस बात को भी जानना चाहता हूँ कि मेरा चरित्र उस सगत में भी रह कर वैसाही निर्मल और पवित्र रहेगा जैसा कि अब है।"

माता ने उत्तर दिया—"बेटा, मनुष्य की विचारशक्ति हर घड़ी ठीक नहीं रहती, किस समय विचलित होती है कोई नहीं कह सकता। इसलिए बुरों से दूर रहना ही अच्छा है।"

जेम्स ने कहा—"माता, मेरे वहां जाने के दो कारण हैं। पहला—मासिक २८) रुपये का प्रलोभन, और दूसरा यह कि मैं संसार को यह दिखा सकूँ कि यदि मैं अपने कर्त्तव्यों पर अटल

बना रहूँ तो बुरी सगत भी मेरे ऊपर कोई असर नहीं डाल सकती।"

अन्त मे माता ने पुत्र की बात मान ली और उसे वहां जाने की आज्ञा दे दी।

सोमवार के दिन प्रात काल जेम्स ने अपना सामान इकट्ठा करके घोडे पर सवार होकर क्लीभलैण्ड की ओर यात्रा की और दस मील रास्ता तै करके वह दो तीन घटे में वहाँ पहुँच गया।

वहाँ मिस्टर वार्टन जेम्स की राह देख रहे थे। अतएव उसको ठीक समय पर पाकर वे बहुत खुश हुए। उसके रहने के लिए उन्होंने कमरा बता दिया और उसका सामान उसी कमरे में रखवा दिया और तब उसे साथ लेकर कारखाने में गये।

कारखाना बहुत ही मैला कुचैला था। चारो ओर राख, धुआँ और कारिख से भरा हुआ था, परन्तु जेम्स को उस मैले धुआँदार कारखाने मे बैठ कर काम करने की जरूरत न हुई। मिस्टर वार्टन ने उसको हिसाब-किताब रखने के काम में नियुक्त किया। बेचने-खरीदने का काम भी वही किया करता था। इस काम को उसने बहुत ईमानदारी और होशियारी से निबाहा। थोड़े ही दिन में मिस्टर वार्टन को विश्वास हो गया कि यह बहुत ईमानदार लडका है। इस कारण कारखाने का सब काम इसी के अधीन कर दिया।

एक दिन एक आदमी कई बोरो मे भर कर राख लाया

श्रौर बोला —"इनमें २५ मन रास है। इनको श्राप ले लीजिए श्रौर मुझे दाम दीजिए"।

जेम्स ने कहा —"इनको उतारो। मैं पहले उन्हें तोल कर देख लूँ तब दाम दूँगा।"

जेम्स के इस काम पर श्राने के पहले रास वाले जितना कहा करते मिस्टर वार्टन उतना ही विश्वास करके दाम दे दिया करते थे। श्रब जेम्स के पास एक नई बात सुन कर सबके सब चकित हुए, पर कुछ बोल न सके। बोरे तोले गये श्रौर २५ मन की जगह २२ ही मन निकले। जेम्स इनको २२ मन रास का दाम देही रहा था कि इतने में मिस्टर वार्टन वहाँ श्रा पहुँचे। वे सब हाल सुन कर बहुत प्रसन्न हुए श्रौर जेम्स की बड़ी प्रशंसा करने लगे।

जेम्स जिस कमरे मे रहा करता था उसी कमरे की एक श्रालमारी में कई पुस्तकें थीं। जब वह कारख़ाने का काम समाप्त करके घर श्राता तब उन्हीं पुस्तको को पढा करता श्रौर गणित के सवाल लगाया करता था।

मिस्टर वार्टन तो पढे लिखे न थे पर इनकी एक गृहणी लडकी थी। यह श्रच्छी पढी लिखी थीं। ये पुस्तकें उसी की खरीदी हुई थीं। वह लडकी भी प्राय इनके पास श्राकर बैठती श्रौर कहती "तुमने फलानी किताब पढी है। वह किताब श्रच्छी है उसको पढो।" ऐसी ऐसी बातें वह प्राय' कहा करती थी।

प्रति दिन जेम्स १२ बजे रात तक पढा करता था और जब घर के सब लोग सो जाते तब वह सोता था।

एक दिन ऐसे ही पढते पढते रात के बारह बज गये और प्राय एक बजने के लगभग था कि वह अपनी चारपाई पर गया, परन्तु उसे नींद न आई। कई एक चिन्तायें उसके मन को विकल कर रही थीं। वह अपने मनही मन सोचता था कि कितने दिन तक मैं इसी सब्जी बेचने के काम में लगा रहूँगा। दुनिया में कितनी नई चीजें हैं, कितने नये काम रोज हुआ करते हैं, मैं उनको कुछ भी नहीं देखता। उनके विषय में कुछ भी नहीं जानता। मैं केवल एक अँधेरी कोठरी में बन्द हूँ। मुझे यहाँ से बाहर जाना ही होगा और जैसे बने दुनिया को देखूँगा। यह सोचते सोचते उसने अपने मन मे कहा कि मैं जहाज का मल्लाह बनूँगा। इस ख्याल ने उसके चित्त को ऐसा अधीर किया कि उसे नींद नहीं आई। वह रात भर योंही करवटे बदलता रहा। उसने अपने मन मे सकल्प कर लिया कि जितनी जल्दी हो सकेगा मैं यहाँ से निकलूँगा और मल्लाह बनूँगा।

इसके बाद बहुत दिन तक उसे वहाँ रहना न पडा। एक घटना ने उसके चित्त को ऐसा दु खित किया कि उसे वहाँ से चला जाना पडा। वह घटना यह है —"मिस्टर वार्टन की लडकी का विवाह नहीं हुआ था। विवाह का बदोवस्त होरहा था। एक लडका इस लड़की से मिलने के लिए आया करता था। इसी के साथ विवाह का बन्दोवस्त होरहा था। एक दिन

वह लड़का रात को आया और एक बड़े कमरे में बैठ कर उस लड़की से बातें कर रहा था। उसके माता-पिता भी उसी कमरे में एक कोने में बैठे बातें कर रहे थे, और जेम्स भी उसी कमरे में बैठ कर गणित का हिसाब लगा रहा था। जब रात बहुत बीत गई तब माता-पिता, वहाँ से उठ कर चले गये पर जेम्स बैठा हुआ अपना हिसाब ही लगाता रहा। उस नव-दम्पति को जेम्स का वहाँ रहना बहुत बुरा मालूम होता था। इस कारण लड़की ने घृणापूर्वक कहा —"वेतन-भोगी नौकरों के लिए इतनी रात तक बैठे बैठे पढ़ना अच्छा नहीं है। अब तुम जाओ, सोओ।" जेम्स को यह कटाक्ष बहुत ही असह्य मालूम हुआ। वह चुपचाप उठ कर वहाँ से चला गया और अपने बिछौने पर लेट गया। नींद नहीं आई—आई केवल वही एक चिन्ता 'वेतन भोगी नौकर'। जेम्स ने दृढ संकल्प किया कि आज से अब मैं वेतनभोगी नौकर न रहूँगा। ऐसी दुश्चिन्ता में किसी तरह रात कटी। सुबह होते ही उसने मिस्टर वार्टन से कहा —"आप मेरी तनख्वाह चुका दीजिए। मैं अब यहाँ न रहूँगा, मैं घर जाऊँगा।" मिस्टर वार्टन ने कितना ही समझाया पर उसने एक न सुनी। वह रुपया लेकर घर चला ही गया।

ग्यारहवाँ परिच्छेद



म्स ने घर लौट कर अपनी माता से कहा —"अब मैं नौकरी न करूँगा। बहुत हो चुका। अब मैं और कुछ करने की कोशिश करूँगा जिससे ससार में हमारी भी कुछ प्रतिष्ठा हो।"

माता ने आश्चर्य में होकर पूछा —"क्यों। क्या हुआ? इतने नाराज क्यो मालूम होते हो? क्या रुपया नहीं दिया?"

जेम्स ने ११२ रुपये निकाल कर मां के सामने रख दिये और कहा —"रुपया तो हमको पूरा मिल गया और मिस्टर वार्टन बडे नेक आदमी हैं। उन्होंने हमारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया, परन्तु उनकी लडकी के व्यवहार से हमारा चित्त बहुत दु:खी हुआ है।"

यह कह कर जेम्स ने उस रात का सारा हाल कह सुनाया। जेम्स की माता ने कहा —"बेटा, तुमने इस काम मे बहुत जल्दी की।"

जेम्स ने कहा —"जल्दी या देरी मैं कुछ नहीं जानता, परन्तु मैंने नौकरी छोड दी।"

"तुम्हें मिस्टर ? वार्टन की कृपाओं पर अधिक ध्यान रखना

चाहिए था, उस लडकी की बातों का नहीं। वेतनभोगी नौकर होने में कोई बेइज्जती नहीं है।"

जेम्स ने कहा—"मैं जानता हूँ कि वेतन लेकर नौकरी करने में कोई बेइज्जती नहीं है, परन्तु जिस रीति से उस लडकी ने कहा था वह बहुत अपमानसूचक है। खैर जो हो, मैंने भी ठान लिया है कि मैं भी ससार में कोई बडा काम अवश्य ही करूँगा।"

माता के साथ इतनी बात-चीत करके जेम्स को अपनी खेती का ध्यान आया और वह तुरन्त उठ कर खेत देखने के लिए चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने खेत का काम-काज अच्छी तरह देखा भाला और फिर घर लौट आया। दूसर दिन सवेरे उठ कर प्रात क्रिया समाप्त करने के बाद जेम्स अपने खेत पर गया और उस दिन से अपनी खेती के काम में जी-जान से लग गया।

कुछ दिन तक अपने खेत पर काम करने के बाद उसने सुना कि उसके एक चाचा जो कि न्यूवर्ग में रहा करते हैं वे एक जगल कटवा रहे हैं और इस कारण उन्हे लकडी चीरने वालों की जरूरत है। जेम्स ने खबर पाते ही तुरन्त अपनी माँ से इस विषय को कह सुनाया और कहा कि मैं वहाँ जाऊँगा।

माता ने इस बात को सुन कर कहा —"तुम वहाँ जासकते हो, क्योंकि तुम्हारी बहिन भी वहीं ब्याही है। वहाँ रहने में तुम्हे किसी प्रकार का कष्ट न होगा।"

दूसरे दिन जेम्स ने न्यूबर्ग की राह ली और वहां पहुँच कर उसने अपने चचा से भेंट की और अपना मतलब कह सुनाया।

चचा ने इस बात को सुन कर कहा—"मैं तुम्हारे आने से बहुत प्रसन्न हुआ। तुम देखने में पूरे एक जवान आदमी मालूम पडते हो और हमें आशा होती है कि तुम इस काम को अच्छी तरह कर सकोगे, परन्तु यह बहुत कठिन काम है। कदाचित् तुम इस काम को करते करते ऊब उठोगे, और फिर सामने ही गर्मी का मौसिम आने वाला है। उस समय तुम काम न कर सकोगे।" जेम्स ने कहा —"मैं इस काम को बहुत आसानी से कर सकूँगा पर इतना कहना अपना ठीक है कि गर्मी में मैं न कर सकूँगा, परन्तु दो महीने तो अवश्य ही कर सकूँगा। आप कितना काम कराना चाहते हैं ? "

मैं सब मिला कर सौ कुन्दे चिरवाया चाहता हूँ। हर एक कुन्दे आठ फुट लम्बे, चार फुट चौडे और चार ही फुट मोटे होंगे।"

जेम्स ने पूछा —"इस काम के लिए आप कितनी मजदूरी देंगे ?"

चचा ने कहा—"एक रुपया फ़ी कुन्दा चिरवाई दूँगा।"

"तो मैं पचास दिन में इस काम को समाप्त कर दूँगा।"

जेम्स की बात सुन कर चचा को बडा आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा —"दो कुन्दे रोज चीरना कुछ सहल काम नहीं है।

जो लोग हमेशा लकडी चीरने का काम किया करते हैं वे भी मुश्किल से दो कुन्दे रोज चीर सकते हैं।"

जेम्स ने कहा—"मुझे विश्वास है कि मैं इतना काम रोज आसानी से कर लूँगा।"

इतना कह के जेम्स वहाँ से चला गया और अपनी वहिन के पास गया और सब हाल कह सुनाया।

छोटे भाई को बहुत दिन के बाद देखने से बहिन बहुत खुश हुई और उसने उसका बडा आदर-सत्कार किया।

दूसरे दिन सवेरे से जेम्स ने काम करना शुरू कर दिया।

जिस मैदान में लकडियां चीरी जा रही थीं उसी के सामने कुछ दूरी पर एक प्रशान्त सागर था। उसकी बडी बडी लहरें आ आ कर किनारे पर टकराती थीं, और छोटे बडे सैकडों हजारों जहाज बहते हुए देख पडते थे। उन जहाजों को देख कर जेम्स का जी आनन्द के मारे नृत्य किया करता था और वह सोचा करता था कि वह दिन कब आवेगा जब मैं भी इसी तरह जहाज पर सवार होकर विदेशों में भ्रमण करूँगा। वह घटों इसी सोच में खडा रहता और उन जहाजों की ओर देखा करता।

हफ्ते भर के बाद देखा कि उसके एक साथी ने भी उतने ही कुन्दे चीरे हैं जितने कि उसने चीरे हैं। और उसकी कुल्हाडी भी उतनी तेज नहीं चलती थी जितनी कि जेम्स की। अतएव उसने अपनी वहिन से इसका कारण पूछा।

बहिन ने कई एक कारण बताये पर उसको एक भी पसन्द हुआ । अन्त में उसने स्वय ही इसका कारण स्थिर करके बतां कि मेरा साथी सुबह से शाम तक बराबर अपना काम ही कर रहता है, समुद्र अथवा जहाज आदि उसके चित्त को आकर्षि नहीं करते । यही कारण है कि वह इतने कुन्दे चीर सका है उस दिन से जेम्स होशियार हो गया और पचास दिन में का पूरा कर दिया और सौ रुपये लेकर बहन को अपने खाने-पी का खर्चा देकर मकान लौट गया और बाकी रुपये माँ जा सौंपे ।

बारहवाँ परिच्छेद ।

लकड़ी चीरने का काम पूरा करके जब जेम्स घर लौटा तबसे उसका चित्त बहुत दुखी रहा करता था। किसी काम में उसका जी न लगता। अपनी माता से भी अधिक बात-चीत न किया करता था। चित्त का परिवर्तन देख कर माता सोचा करती थी कि कदाचित् उसका पुत्र समुद्र-यात्रा के लिए व्याकुल है और इसी कारण वह किसी से बात-चीत नहीं करता, परन्तु इस विषय को पुनरुत्थापन करने का साहस माता में न था इस कारण वे भी चुप साधे हुए थीं।

कुछ दिन ऐसी अवस्था में बीतने के बाद जेम्स ने एक दिन कहा —"माता, तुम नहीं जानती हो कि समुद्र-यात्रा के लिए हमारा चित्त कितना व्याकुल है, और जब मैं तुमसे इस विषय को कहता हूँ तभी तुम इन्कार कर देती हो और नाराज हो जाती हो। इससे हमारा मन बहुत दुखी होता है। आज तुम हमसे कहो कि तुम हमें समुद्र-यात्रा के लिए जाने दोगी या नहीं।"

माता ने पूछा —"कहाँ जाओगे?"

"कहाँ जाऊँगा इसका पता नहीं है, परन्तु जहाज में नौकरी करके देश-भ्रमण करने के लिए अटलाटिक महासागर के पार जाऊँगा।"

माता ने कहा —"यही तो पागलपन है । कहाँ जाओगे उसका पता नहीं और कहते हो 'जायँगे' ।" ऐसी दशा में भला तुम्हारा जाना कैसे सम्भव हो सकता है । मेरी बात याद रक्खो कि समुद्र की नौकरी तुम्हे कभी अच्छी न लगेगी और तब तुम सोचोगे कि माँ का कहना मानते तो अच्छा होता ।"

जेम्स ने कहा —"यदि समुद्र की नौकरी हमें अच्छी न लगेगी तो मैं नौकरी छोड कर घर लौट आऊँगा ।"

माँ ने कहा —समुद्र की नौकरी क्या ऐसी वैसी थोडी ही होती है कि जब जी चाहा घर लौट आये । समुद्र की नौकरी मे आज तुम यहाँ हो, दस दिन बाद हजार मील दूर पर जा पडोगे । और, मान लो कि यदि तुम जहाज में सवार होकर चीन देश में पहुँच गये और वहाँ जाकर तुम्हारा जी घबराया और तुमने घर आना चाहा तो क्या तुम किसी तरह तुरन्त घर आ सकते हो ? तुमको घर लौटने में महीनो लग जायँगे और सैकडो रुपये खर्च हो जायँगे । यदि तुम समुद्र की नौकरी करना ही चाहते हो तो यहाँ पास ही आएरी नामक एक झील है । वहाँ जाकर किसी जहाज़ में नौकरी कर लो ताकि जब जी चाहे घर लौट आ सको ।"

कुछ काल तक सोचने के बाद जेम्स ने कहा —"अच्छा, मैं वहीं जाऊँगा । तुम हमें वहाँ जाने की आज्ञा देती हो न ?"

माता ने कहा —"हाँ, वहाँ जा सकते हो ।"

माता की अनुमति पाकर जेम्स बहुत खुश हुआ और अपना सामान बाँध कर ठीक ठाक करने लगा।

दूसरे दिन सूर्योदय के पहले उसने आएरी झील की ओर यात्रा कर दी और बारह बजते बजते वह वहाँ पहुँच गया। आएरी झील उसके मकान से १७ मील दूर थी।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि एक जहाज उसी किनारे पर लंगर डाले हुए खड़ा है।

उसने एक आदमी से पूछा—"क्यों भाई, जहाज के कप्तान साहब कहाँ हैं? मैं उनसे कुछ बातें किया चाहता हूँ।"

उस आदमी ने उत्तर दिया—"कप्तान साहब जहाज की दूसरी ओर गये हैं। अभी आवेंगे। आप ठहरिए।"

यह सुन कर जेम्स ने उसे धन्यवाद दिया और वहीं खड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद एक आदमी जहाज की दूसरी ओर से गरजता हुआ, गालियाँ बकता हुआ आता मालूम हुआ। उस जहाज के आदमी ने जेम्स से कहा—"वे कप्तान साहब आ रहे हैं।"

कप्तान साहब से मिलने के लिए जेम्स आगे बढ़ा, और जब कप्तान साहब सामने आये तब उसने उन्हें सलाम किया।

कप्तान साहब ने अपने स्वभावानुसार भौं चढ़ा कर गालियाँ बकते बकते पूछा—"तू कौन है बे, क्या चाहता है?"

जेम्स ने बड़ी नम्रता से पूछा—"क्या आपको अपने जहाज के लिए कुछ और आदमियों की जरूरत है ?"

कप्तान ने कहा—"अबे है तो सही, पर तेरा क्या। यहाँ से भाग, नहीं तो ऐसी लात मारूँगा कि याद करेगा।"

जेम्स इन बातों को सुन कर भौचक सा रह गया और चुपके से वहाँ से खसक गया। उसको इतना दुःख हुआ कि वह वहाँ ठहर भी न सका, तुरन्त वहाँ से हट गया और एक पेड़ तले जा बैठा और अपनी मुसीबत की बात सोचने लगा। बड़ी देर तक सोचता रहा कि अब क्या करना चाहिए। इतने में पीछे से किसी ने पुकारा—"जिमी जिमी !"

यह सुन कर जेम्स चौक उठा और पीछे फिर कर जो देखा तो क्या देखता है कि उसका चचेरा भाई एमोस फ्लेचर एक डोंगी पर सवार चला आ रहा है। उसने आते ही पूछा —"जेम्स तुम यहाँ कैसे आये ?"

जेम्स ने कहा —"तुम कैसे आये ?"

एमोस फ्लेचर ने कहा —"मैं पीटस्बर्ग से कच्चा तांबा लाने जाता हूँ। पर तुम कहाँ आये थे ?"

जेम्स ने अपना सारा किस्सा कह सुनाया।

तब फ्लेचर ने कहा —"जहाज के कप्तान प्राय ऐसी ही प्रकृति के लोग हुआ करते हैं। खैर जो हुआ सो हुआ। क्या अब तुम नौकरी किया चाहते हो ?"

जेम्स ने कहा —"हां नौकरी करने ही के लिए यहां आया हूँ। क्या तुम हमें नौकर रक्खोगे ? कितनी तनख्वाह दोगे ?"

फ्लेचर ने कहा —"२४) रुपया मासिक दूँगा, यदि मञ्जूर हो तो चले आओ।"

जेम्स राजी होगया और तुरन्त डोगी पर जा पहुँचा।

ये डोगियां खच्चरो के द्वारा खींची जाती थीं। डोगियो में बडी बडी रस्सियां बांध कर दो दो खच्चर जोते जाते थे और वे झील के किनारे किनारे डोंगी को खींचते हुए चलते थे। इन खच्चरों को ठीक तौर से चलने के लिए हांकने वालो की जरूरत होती थी। जेम्स इसी काम में नियुक्त किया गया।

कुछ दूर तक जाने के बाद जेम्स ने चाहा कि खच्चरो को तेज चलावे। उसने वैसा ही किया। खच्चर बहुत तेज भागने लगे। अन्त में ऐसे एक स्थान में आ पहुँचे जहां सामने ही एक पुल था। जेम्स ने चाहा कि उस पुल से बचा कर डोगी और खच्चरो को ले जाय परन्तु ऐसा न हो सका। रस्सियां पुल से टकरा ही गई और उस धक्के से दोनों खच्चर और उनके सवार पानी में गिर गये। तुरन्त डोंगी पर से कई आदमी उतर आये और उन तीनो जीवों को पानी से निकालने में लग गये। अन्त में जेम्स और दोनों खच्चर पानी से बाहर निकल आये। तब जहाज के लोगों ने बडी हँसी उडाई और सभी ने मिल कर जेम्स को बेवकूफ बनाने की कोशिश की। जेम्स बेचारा अकेला क्या बोलता। वह भी बेवकूफ बन गया।

एक दिन फ्लेचर ने जेम्स से कहा—"भाई जेम्स, हमने सुना है कि तुमने अच्छी विद्या हासिल की है, तो तुम किसी पाठशाला में शिक्षक का काम क्यो नहीं करते ?" यह कह कर फ्लेचर ने जेम्स से कहा —"मैं तुमसे भूगोल, इतिहास, गणित व्याकरण आदि मे कुछ प्रश्न पूछा चाहता हूँ ! तुम उनका उत्तर, दो ।"

जेम्स ने कहा —"पूछिए, परन्तु बहुत कठिन प्रश्न न पूछिएगा ।"

मिस्टर फ्लेचर ने तीन साल तक शिक्षक का काम किया था और इस कारण उन्हे अपनी विद्या का बडा अहकार था ।

उन्होने कई प्रश्न जेम्स से पूछे ।

जेम्स ने भी उनका उत्तर खूब विस्तारपूर्वक दिया। मिस्टर फ्लेचर बहुत खुश हुए।

तब जेम्स ने कहा —"अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँ और आप उनका उत्तर दीजिए ।"

जेम्स ने कई प्रश्न पूछे पर वे एक का भी उत्तर न दे सके । तब वे बहुत लज्जित हुए । वास्तव मे फ्लेचर से जेम्स बहुत अधिक जानता था ।

फ्लेचर ने इनकी बडी प्रशसा की और कहा —"तुम्हारे लिए समुद्र की नौकरी करना और अपनी विद्या को समुद्र के जल में फेंक देना उचित नहीं है । तुम ससार में रह कर लोगों

को बहुत लाभ पहुँचा सकते हो। घर लौट जाओ और किसी पाठशाला में शिक्षक का काम करो।"

जेम्स ने कहा—"हमारी माता भी ऐसे ही कहा करती हैं और हमें समुद्र में नहीं जाने देतीं, परन्तु हमें दुनिया देखने की बड़ी इच्छा है।"

फ्लेचर ने फिर कहा —"ऐसे विद्वान् पुरुष के लिए मल्लाह का काम करना कदापि उचित नहीं है। तुम्हारी माता ठीक कहती हैं। तुम जरूर उनकी बात मानो।"

इन बातों को सुन कर जेम्स बहुत खुश हुआ और सोचने लगा कि कदाचित् हम में कुछ विद्या अवश्य ही है, नहीं तो फ्लेचर ऐसी बात न कहता।

तेरहवाँ परिच्छेद



डी बडी नहरो में, जहाँ किश्ती और डोंगी चला करती हैं वहाँ, प्राय जगह जगह पुल बने रहते हैं और उन पुलों में डोंगियो के आने जाने के लिए फाटक बने रहते हैं।

उन फाटको से एक समय में केवल एक ही डोंगी जा सकती है ज्यादा नहीं। मिस्टर फ्लेचर की डोगी रात दस बजे के लग भग ऐसे ही एक पुल के पास पहुँची। कप्तान फ्लेचर ने तुरन्त माझी को फाटक खोलने की आज्ञा दी। माझी भी तुरन्त फाटक पर पहुँच कर फाटक खोलने ही को था कि अन्धेरे में किसी ने चिल्ला कर कहा —"फाटक मत छुओ, हम लोग यहाँ पहले आये हैं अतएव हमीं लोग पहले भीतर जायँगे।"

इतना कहना था कि कप्तान फ्लेचर का माझी लडने को खडा हो गया और उसकी देखा-देखी उसके सब साथी भी तैयार खडे हो गये। उधर दूसरी डोंगी वाला माझी भी अपने साथियो को इकट्ठा कर खडा हो गया और दोनो मे गाली-गलौज होने लगी।

ऐसी लडाइयाँ प्राय हुआ करती थीं और कप्तान भी कभी कुछ न कहा करते थे। अतएव कप्तान फ्लेचर चुप-चाप खडे तमाशा देख रहे थे। इतने में जेम्स वहाँ आ पहुँचा और उसने

कप्तान साहब के कन्धे पर हाथ धर कर कहा—"कप्तान फ्लेचर, यह क्या मामला है। क्या तुम ही इस फाटक के अधिकारी हो जो उन बेचारों को जाने नहीं देते और मुझ उनसे लड़ते हो?"

कप्तान फ्लेचर ने उत्तर दिया—"यदि न्याय-पूर्वक देखा जाय तो यह फाटक हमारा नहीं है लेकिन हम लोगों में ऐसा रिवाज है कि जो यहाँ पहले पहुँच जाय वही पहले भीतर जा सकता है। इसके सिवा जब कभी दो डोंगीवाले एक साथ यहाँ पहुँचते हैं तब उन दोनो में लड़ाई होती है क्योंकि दोनों यही कहते हैं कि मैं पहले आया हूँ। इस कारण मुझे पहले जाना चाहिए।"

जेम्स ने कहा—"यदि यह फाटक तुम्हारा नहीं है तो व्यर्थ लड़ना उचित नहीं है। उन लोगो को पहले जाने दो और तुम यहाँ रुके रहो।"

कप्तान फ्लेचर ने जेम्स की बात समझ ली और उसी की बात पर अपनी सम्मति दी, और जोर से चिल्ला कर माझी को आज्ञा दे दी—"फाटक छोड दो। उन लोगो को जाने दो। लड़ो मत।"

डोंगी के सब लोग कप्तान के ऐसे आदेश पर बहुत आश्चर्यित हुए, परन्तु सिवा फाटक छोड देने के वे कुछ करही न सकते थे, क्योंकि कप्तान की आज्ञा थी। इस कारण उन्होंने फाटक छोड दिया और दूसरे डोंगीवालों ने जाने की तैयारी की।

कप्तान फ्लेचर की डोंगी एक किनारे खडी थी। डोंगी के लोग अपना अपना काम बन्द करके हँसी-दिल्लगी में लगे हुए थे। डोंगियो के नौकर बिलकुल जगली होते थे इस कारण दिल्लगी भी वेतुकी किया करते थे। उधर दूसरे डोंगी वाले फाटक के भीतर डोंगी ले जाने की तदबीर कर रहे थे कि इतने मे अकस्मात् उस डोगी से छिटक कर एक रस्सी मारफ़ी के सिर में लगी और उसकी टोपी पानी में गिर गई। कप्तान फ्लेचर के एक माँझी का नाम मारफी था। वह बडा लडाका और क्रोधी स्वभाव का आदमी था। जब टोपी पानी मे गिरी तब जेम्स ने अफ़सोस करके कहा —"मिस्टर मारफी, क्या करोगे, भगवान को धन्यवाद दो कि तुम्हारी जान बच गई। केवल तुम्हारी टोपी ही पानी मे गिर गई। तुम बच गये। नहीं तो जिस झोके में रस्सी इधर आई थी उससे तुम्हारे बचने की कोई सम्भावना न थी।"

इन बातों को सुन कर मिस्टर मारफी ने सोचा कि जेम्स इनसे दिल्लगी करता है। इस कारण मारे गुस्से के वह आग बबूला हो गया, और वहाँ से ऐसी तेजी से गरजता हुआ आया कि मानो एक ही धक्के मे जेम्स को उसी टोपी के पास भेज देगा, परन्तु ज्योंही वहाँ पहुँच कर उसने जेम्स पर हाथ उठाया उसी दम जेम्स ने उसको पकड कर ऐसे जोर से पछाडा कि वह सभी के सामने चारों कोने चित्त गिर गया और जेम्स उसकी छाती पर चढ बैठा और उस पर सवार हो गया।

फ्लेचर ने चिल्ला कर जेम्स से कहा —"अब इस बदमाश से गाली देने का बदला क्यो नहीं लेते ?"

जेम्स ने उत्तर दिया —"अब मारफी तो मेरे क़ाबू मे है। मैं इसे जिधर चाहूँ उधर ही घुमा सकता हूँ। यह मेरा कुछ भी नहीं कर सकता। इस कारण मैं इसे मारूँगा नहीं क्योंकि हमारी राय में किसी को मारना उचित नहीं है। दूसरो से अपने को बचाना चाहिए, परन्तु बचाने के माने यह नहीं हैं कि उसी को पकड कर पीटो। मैंने अपने को बचा लिया है। अब इसे मारना कायरपन होगा।"

इन बातो को सुन कर सब लोगो ने समझ लिया कि जेम्स कापुरुष नहीं है वरन् वह एक बडा साहसी वीर लडका है। यद्यपि वह एक बालक साही है तथापि उसकी शारीरिक शक्ति किसी युवा पुरुष से कम नहीं है। इस कारण उस दिन से सब लोग उसकी इज्जत करने लगे। मारफी ने जब अपनी हार मान ली तब जेम्स ने उसे छोड दिया और उठ कर उससे हाथ मिलाया और उसी समय से उन दोनो में बडी मित्रता हो गई।

कप्तान फ्लेचर की डोंगी पर एक और माझी था। उसका नाम था हैरी। वह बेचारा बडा सीधा साधा आदमी था। परन्तु शराब पिया करता था। इस कारण उसका स्वास्थ्य अच्छा न था। वह जेम्स को बहुत प्यार किया करता था। एक दिन जेम्स ने उससे कहा —"प्यारे हैरी, यदि तुम शराब

जब जेम्स घर लौटने की बात सोच रहा था उसी समय उसे ज्वर की बीमारी हो गई और कई दिन तक वह बिछौने से हिल न सका। जब अच्छा हुआ तब बहुत ही दुर्बल हो गया था। उसने कप्तान फ्लेचर से घर जाने की छुट्टी माँगी। कप्तान फ्लेचर ने बिना रोक टोक के उसे छुट्टी तो दे दी पर उसे छोड़ कर वे बहुत दुखी हुए और डोंगी के सब लोग बहुत शोकाकुल हुए।

जेम्स ने एक डोंगी पर सवार होकर क्लीभलैण्ड की ओर यात्रा की और सूर्य अस्त होने के पहले ही वह वहाँ पहुँच गया। वहाँ से घर की ओर पैदल ही चला। रात के ग्यारह बजे तक वह घर पहुँच गया। वह चुपके से घर के भीतर गया और देखा कि उसकी माता एक कोने मे घुटना टेके हुए बैठी है और सामने एक पुस्तक खुली हुई है। जेम्स ने सोचा कि माता पढ रही हैं, परन्तु दूसरे ही मुहूर्त्त में उसने देखा कि वे कुछ पढ नहीं रही हैं वरन् सामने बाइबिल खुली हुई है निश्चल चित्त से ईश्वर के पास पुत्र के मङ्गलार्थ प्रार्थना कर रही हैं। हाय रे माता का हृदय! तू क्या ही स्नेहपूर्ण है। यदि ससार के सारे पदार्थो को और सारे भावों को एक ओर रक्खे और मातृहृदय को दूसरी ओर तो भी वे सब मिल कर इस विशाल हृदय की बराबरी नहीं कर सकते।

जेम्स ने माँ के कधे पर हाथ धर कर कहा—"माँ, माँ, क्या कर रही हो?"

भेंट हो गई थी और उसकी डोंगी पर नौकरी मिली थी और कैसे वह १७ बार पानी में डूबने से बचा था।

माता ने उसका सारा वृत्तान्त चुपचाप सुना और अन्त में इतना ही कहा —"ईश्वर ने तुमको सदा बचाया है और उसने हमारी प्रार्थनाओं को भी मंजूर किया है जो तुम्हें घर भेज दिया।"

जेम्स ने कहा —"सत्य है, माता, उस दिन रात को ईश्वर ही ने मुझे डूबने से बचाया था। मैं तो मरही चुका था।"

पुत्र के मन में ईश्वर पर विश्वास देख माता का हृदय आनन्द से प्रफुल्लित होगया। उन्होंने जेम्स से कहा —"बेटा, रात बहुत हो गई। अब तुम विश्राम करो। कल सवेरे और और बातें सुनूँगी।"

माँ, बेटे दोनो अपने अपने बिछौनों पर गये। जेम्स तो जाते ही सो गया, पर उसकी माता की आँखों में नींद न आई। वह सारी रात जागती रही। उस रात को विधवा माता अपने छोटे पुत्र की भूत, वर्त्तमान तथा भविष्य जीवन की समालोचना कर रही थी और ईश्वर को धन्यवाद देती थी कि उनकी प्रार्थनायें दिन पर दिन पूरी होती जाती हैं। माता का चित्त बहुत प्रसन्न था। एक तो प्रिय पुत्र का बहुत दिन बाद माता की गोद को शीतल करने के लिए घर लौट आना, दूसरे उनकी प्रार्थना का सफल होना और तीसरे पुत्र के मन में ईश्वर पर भक्ति—येही सब बातें मिल कर माता के हृदय-सागर में आनन्द की लहरें उठा रही थीं।

चौदहवाँ परिच्छेद

जब जेम्स ने अपना सिर माता की गोद से हटा लिया तब उसकी माता ने उससे पूछा—"बेटा तुम इतने दुर्बल क्यों मालूम होते हो ?"

जेम्स ने कहा—"हाँ माँ, मैं बहुत दुर्बल हो गया हूँ मुझे अन्तरा ज्वर आता था। और इसी कारण मैं घर लौट आया हूँ।"

जेम्स की विधवा माता ने कहा—"बहुत अच्छा हुआ कि तुम घर लौट आये परन्तु एक बडे आश्चर्य की बात है कि जहाज पर तुम्हें अन्तरा ज्वर होगया। समुद्र में यह बीमारी प्राय नहीं होती।"

जेम्स ने कहा—"मैं समुद्र पर नहीं गया था। मेरी डोंगा नहर में ही थी। अब तक मैं नहर ही की नौकरी करता रहा।"

माता ने बडे आश्चर्य में होकर पूछा—"तुम नहर में थे। क्या तुम आयरी झील पर नहीं गये ?"

तब जेम्स ने माता से सब घटनाओं का पूरा पूरा इतिहास कह सुनाया और यह भी कह दिया कि कैसे वह जहाज के कप्तान से घुडका गया था, कैसे एमोस फ्लेचर से अकस्मात्

ोट हो गई थी और उसको डोगी पर नौकरी मिली थी और कैसे
ह १७ वार पानी में डूबने से बचा था।

माता ने उसका सारा वृत्तान्त चुपचाप सुना और अन्त मे
तना ही कहा —"ईश्वर ने तुमको सदा बचाया है और उसने
मारी प्रार्थनाओ को भी मञ्जूर किया है जो तुम्हे घर भेज दिया।"

जेम्स ने कहा —"सत्य है, माता, उस दिन रात को ईश्वर
ी ने मुझे डूबने से बचाया था। मैं तो मरही चुका था।"

पुत्र के मन में ईश्वर पर विश्वास देख माता का हृदय
ानन्द से प्रफुल्लित होगया। उन्होंने जम्स से कहा —"बेटा,
त बहुत हो गई। अब तुम विश्राम करो। कल सवेरे और
ौर बातें सुनूँगी।"

मां, बेटे दोनों अपने अपने बिछौनो पर गये। जेम्स तो जाते
ी सो गया, पर उसकी माता की आंखो में नींद न आई। वह
ारी रात जागती रही। उस रात को विधवा माता अपने
ाटे पुत्र की भूत, वर्त्तमान तथा भविष्य जीवन की समा-
ोचना कर रही थी और ईश्वर को धन्यवाद देती थी कि उनकी
प्रार्थनाये दिन पर दिन पूरी होती जाती हैं। माता का चित्त
बहुत प्रसन्न था। एक तो प्रिय पुत्र का बहुत दिन बाद माता की
गोद को शीतल करने के लिए घर लौट आना, दूसरे उनकी
प्रार्थना का सफल होना और तीसरे पुत्र के मन में ईश्वर पर
भक्ति—येही सब बातें मिल कर माता के हृदय-सागर में आनन्द
की लहरें उठा रही थीं।

सवेरा होते ही विधवा माता जेम्स के कमरे में गई और देखा कि वह गहरी नींद मे सो रहा है । कुछ काल तक बाहर खड़ी बाट करती रहीं । अन्त में जब दिन चढ गया तब वे उसके कमरे में फिर गईं तो देखा कि जेम्स जाग उठा है । माँ को पास देख उसने कहा —मैं आज खूब सोया । ऐसी नींद मुझे हफ्ते भर में नहीं आई थी । आज मैं पहले से कुछ अच्छा भी हूँ।"

अन्तरा ज्वर का नियम है कि एक रोज बाद ज्वर होता है और तब रोगी को विकल कर देता है और फिर दूसरे ही दिन रोगी चगा हो जाता है ।

वह दिन तो खुशी खुशी मे कट गया । दूसरे दिन फिर ज्वर आया तब जेम्स की माता ने उस की राय लेकर एक डाकृर बुलाया । डाकृर की चिकित्सा आरम्भ हो गई परन्तु कई हफ्ते तक वह बीमार रहा और बिछौने से हिल न सका ।

जिस समय जेम्स बीमार पडा रहा उसी समय आरेंज का स्कूल खुला । वहाँ के शिक्षक मिस्टर बेट्स बडे योग्य थे । वे बडे धार्मिक, विद्वान्, और दयालु थे और जवान लडकों का चित्त आकर्षण करने में बडे ही चतुर थे ।

जेम्स की विधवा माता ने इनसे मुलाकात की और अपने पुत्र के विषय में बहुत कुछ कहा । उसने उनसे कहा कि उनका पुत्र है तो बहुत जहीन परन्तु उसका चित्त समुद्र-यात्रा के लिए व्याकुल है और इस कारण लिखने-पढने की ओर ध्यान नहीं देता । यदि किसी प्रकार उसका चित्त लिखने-पढने की ओर

एक बार खींचा जा सके तो कदाचित् समुद्र-यात्रा से उसका जी हट आवे।

मिस्टर बेट्स इन बातों को सुन बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा—"मैं जेम्स से शीघ्र ही किसी दिन मिलूँगा और इस बात की कोशिश करूँगा कि उसका मन लिखने-पढ़ने में लगे।"

विधवा अपने मकान को लौट गईं और जेम्स की सेवा करने लगीं। उन्होंने कहा—"बेटा, बहुत अच्छा हुआ कि इस बीमारी के समय तुम घर पर उपस्थित हो, नहीं तो कौन जानता है कि तुम कैसी विपत्ति में पड़े होते।"

जेम्स ने कहा—"यदि मैं बीमार न पड़ता तो कदाचित् मैं हफ्ते भर पहले ही मकान पर आ जाता।"

माता ने पूछा—"क्यों? क्या तुमने समुद्र की नौकरी छोड़ देने का विचार किया था?"

जेम्स ने कहा—"मिस्टर फ्लेचर कहते हैं कि तुम्हारी जैसी विद्या-बुद्धि है उसको समुद्र के पानी में फेंक देना उचित नहीं है, तुमको चाहिए कि तुम और कुछ दिन तक विद्याभ्यास करो और ज्ञान-लाभ करने के बाद किसी पाठशाला के अध्यापक बनो। तभी तुम्हारी विद्या-बुद्धि का उचित सम्मान हो सकता है।"

माता ने कहा—"मैं फ्लेचर की राय खूब पसन्द करती हूँ, और तुम भी जानते हो कि मैं तुमसे हमेशा यही कहा करती

हूँ। क्या तुमने फ्लेचर की राय मान ली और समुद्र-यात्रा का सकल्प त्याग दिया ?"

जेम्स ने उत्तर दिया —"मैंने समुद्र-यात्रा का सकल्प बिलकुल तो नहीं छोडा है किन्तु मैं उस विषय को अभी तक सोच रहा हूँ।"

माता-पुत्र में इस तरह बातचीत हो ही रही थी कि इतने में जेम्स से मिलने के लिए मिस्टर बेट्स उनके घर पर आपहुँचे। उन्होंने जेम्स से बहुत देर तक बातचीत की परन्तु पहली मुलाकात मे लिखने-पढने के सम्बन्ध में उन्होंने कुछ भी चर्चा नहीं की।

जब मिस्टर बेट्स चले गये तब माता ने कहा —"क्यों बेटा, तुम्हारी क्या राय है ? मिस्टर बेट्स बहुत नेक आदमी हैं न ? मैं समझती हूँ कि लडके उनको बहुत प्यार करते होंगे।"

जेम्स ने कहा —"हाँ वे बहुत अच्छे आदमी हैं और मैं चाहता हूँ कि उनके साथ स्कूल जाया करूँ।"

"यदि तुम चाहो तो अवश्य ही जा सकते हो। देखो, यदि तुम कुछ दिन और पढ लो तो तुम कुछ दिन के लिए किसी स्कूल में शिक्षक का काम कर सकते हो। और इस काम में जो रुपया कमाओ उसी की सहायता से तुम फिर पढना आरम्भ कर सकते हो। इस तरह तुम्हारा पढना-पढाना दोनों साथ साथ हो सकता है। तुम रुपया भी कमा सकते हो और प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकते हो।"

जेम्स ने कहा —यह तो सब ठीक है, परन्तु समुद्र का पानी, उसकी बड़ी बड़ी लहरें और उन पर बहने वाले बड़े बड़े जहाज ऐसे जी लुभाने वाले हैं कि जब कभी मैं उनके विषय में सोचता हूँ तभी मेरा जी भीतर से नाचने लगता है, इस कारण मैं कहता हूँ कि एक बार मुझे समुद्र में और जाने दो।"

माता ने कहा —"परन्तु अब तो तुम समुद्र अथवा नहर में लौट जाना पसन्द नहीं करते। मैंने सोचा था कि तुमने समुद्र जाने का सङ्कल्प बिलकुल छोड़ दिया है।"

निदान माँ-बेटे में बहुत देर तक इसी विषय में तर्क-वितर्क होता रहा। जब माता ने देखा कि लड़का किसी तरह नहीं मानता तब बुद्धिमती माता ने सोचा कि ऐसे समय में पुत्र को एकदम रोकना अच्छा न होगा, बल्कि समुद्र-यात्रा में भी कुछ न कुछ उत्साह देना चाहिए। यह सोच कर उन्होंने कहा —"जो तुम नहर का काम करने जाओ अथवा किसी जहाज में मल्लाह का काम करो तो तुम पूरे साल भर तो काम कर नहीं सकते, कुछ दिन तक तुम्हें चुपचाप बैठा रहना पड़ेगा। क्योंकि जाड़े में जहाज का काम बन्द रहेगा, अतएव इस समय तुम स्कूल मे जाओ और शिक्षक का काम करो और गर्मियो में जहाज चलाना, इस तरह तुम दोनो काम कर सकोगे।"

जेम्स की विधवा माता को डर था कि जेम्स को समुद्र-यात्रा के विचार से एकदम रोकना कदाचित् असम्भव होगा,

इस कारण उन्होंने उससे कहा था कि जाड़ो में तुम स्कूल में पढाओ और गर्मियो मे जहाज चलाओ। इस आशा पर कि यदि एक बार वह पुस्तको के प्रेम में पड जाय तो उसका समुद्र जाने का सारा विचार जाता रहेगा।

मिस्टर बेट्स प्राय॰ जेम्स से मुलाक़ात करने आया करते थे। एक दिन बात बात में दोनों में बडी बहस छिड़ गई—जेम्स कहता था—"मैं जहाज चलाऊँगा।" और बेट्स कहते थे, "तुम पढाने का काम करो।" अन्त में मिस्टर बेट्स ने कहा—"देखो, विद्यार्थी और मल्लाह मे इतना भेद है जैसा कि जमीन और आसमान में। अतएव यदि तुम यह चाहते हो कि ससार में लोग तुम्हारा सम्मान करे तो विद्यार्थी बनो और नहीं तो जैसा चाहो वैसा करो।"

मिस्टर बेट्स ने फिर कहा—"तुम मेरे साथ पहली मार्च से स्कूल चलो। पहले तुम इस बात को तै कर लो कि उस दिन से तुम मेरे साथ स्कूल जाओगे। इसके बाद और बातें आप से आप ठीक होती जायँगी।"

जेम्स ने बडे दृढ स्वर से उत्तर दिया—"मैं अवश्य ही स्कूल जाऊँगा।"

मिस्टर बेट्स ने कहा—"शाबाश, यही तो बहादुरों की सी बात है लेकिन याद रक्खो कि तुमने कहा है कि स्कूल जायँगे अगर तुम अपनी बात पर क़ायम रहोगे तो जरूर तुम

पने भविष्य जीवन में सफलता-लाभ करोगे क्योंकि यहीं से म्हारे जीवन का परिवर्तन आरम्भ होगा।"

इन बातों ने जेम्स के चित्त मे बडा असर पैदा किया और ह स्कूल जाने के लिए दृढ-संकल्प होगया। स्कूल जाने के पहले सने अपने चचेरे भाई विलियम और हेनरी को भी साथ ले ाने का प्रबन्ध किया।

जिस समय जेम्स का स्कूल जाना तै होगया उसी समय ाक्टर राबिन्सन एक बडे नामी डाक्टर आरेंज में किसी रोगी ो देखने आये थे। जेम्स ने बिना किसी को बताये हुए चाहा के डाक्टर साहब से मुलाकात करके पूछे कि उसके दिमाग में ऐसी शक्ति है या नहीं कि वह पठन-पाठन का काम कर सके। स कारण चुपके से वह एक दिन डाक्टर साहब से मिलने के लिए निकल गया।

डाक्टर साहब के पास पहुँच कर उसने उनको सलाम केया।

डाक्टर साहब ने सलाम का उत्तर देकर पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ से आये हो और क्या चाहते हो?

जेम्स ने कहा—"मेरा नाम जेम्स गारफील्ड है। मैं आरेंज से आया हूँ और आप से अकेले में कुछ बात पूछा चाहता हूँ।"

डाक्टर साहब ने कहा—मैं तुम्हारे माता-पिता को पहचानता हूँ और तुमको भी मैंने बचपन में देखा था। अब तुम जवान हो गये हो। क्या कहा चाहते हो, बोलो।"

जेम्स और डाकूर साहब एक कोठरी में गये । वहां जाकर जेम्स ने कहा—"डाकूर साहब, कृपा करके आप मेरे सब अङ्ग-प्रत्यङ्गों को अच्छी तरह परीक्षा करके देखिए तो सही कि मेरे दिमाग में इतनी शक्ति है या नहीं कि मैं पठन-पाठन का काम अच्छी तरह कर सकूँ ।"

डाक्टर साहब इस विचित्र प्रश्न को सुन कर बड़े आश्चर्य में हुए । लेकिन उन्होंने जेम्स की नाडी, दिल, फेफड़े, गुर्दा, मस्तिष्क आदि सब अङ्गों की अच्छी तरह परीक्षा की और अन्त में कहा —"मिस्टर जेम्स, केवल तुम्हारे मस्तिष्क ही में अजीब शक्ति नहीं है बल्कि तुम्हारे हाथ पैर भी ऐसे मजबूत हैं कि तुम जैसा काम चाहो कर सकोगे, और बड़ी सफलता से कर सकोगे । तुम काम करने से कदापि मत डरो । काम सदा करते रहो । कोई काम तुम्हें हरा न सकेगा ।"

डाक्टर साहब की बात सुन कर जेम्स बहुत खुश हुआ और उसको पूरी तौर से विश्वास होगया कि वह विद्याभ्यास करने के योग्य है ।

स्कूल जाने की राय पक्की होगई, और उसकी विधवा माता ने २२) रुपये इकट्ठे किये ।

जेम्स ने कहा —"प्रारम्भ में इतना रुपया काफी होगा । इसके बाद मैं और कमा लूँगा ।"

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

पहली मार्च को चेस्टर का स्कूल खुल गया। आरेंज से चेस्टर प्राय १० मील दूर था। जेम्स और उसके चचेरे भाई, विलियम और हेनरी, स्कूल खुलने पर, अपने अपने लिखने-पढने और खाने-पीने का सामान कन्धो पर लाद कर ले चले। दस मील रास्ता उन्होंने पैदल ही तै किया और चेस्टर पहुँच कर वहाँ के अध्यापक से भेंट की। अध्यापक महाशय, जिनका नाम मिस्टर ब्रांच था, किसी किसी विषय मे बडे विद्वान् थे, परन्तु कुछ थोडे बहुत सनकी भी थे।

ये तीनो लडके मिस्टर ब्रेंच से मिले और जेम्स ने उनसे कहा —"हम लोग आपके स्कूल में पढने के लिए आये हैं।"

मिस्टर ब्रेंच ने उनका नाम-धाम पूछा।

जेम्स ने उत्तर दिया और कहा —"मेरा नाम जेम्स ए गारफील्ड है। ये दोनों मेरे चचेरे भाई हैं। इनका नाम विलियम और हेनरी बाईटन है। हम लोग आरेंज से आ रहे हैं।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा —"वाह! मैं तुम लोगों को देख कर बहुत खुश हुआ।"

उन लडको के फटे पुराने कपडो को देख कर उन्होंने कहा —"मालूम होता है कि तुम लोग किसी अमीर के लड़के नहीं हो।"

जेम्स ने कहा —"जी हाँ महाशय, हम लोग बहुत ग़रीब हैं। हम लोगो की झोलियो मे रुपये-पैसे अधिक नहीं हैं, खाने पीने और लिखने-पढने का सामान ही है।"

मिस्टर ब्रेच ने पूछा —"तुम लोग अपने खाने पीने और रहने का बन्दोवस्त तो स्वयं ही करोगे न ?"

जेम्स ने कहा —"जी हाँ, हम लोग अपना बन्दोवस्त आप ही करेंगे, लेकिन क्या आप कृपा करके हम लोगों को कोई जगह रहने के लिए बता दीजिएगा ?"

अध्यापक महाशय ने एक बुढिया का मकान दिखा दिया और कहा —"उसी बुढिया के साथ रहने का तुम लोग बन्दोबस्त कर लो। हमें आशा है, कि वहाँ तुम लोग आराम से रहोगे।"

लडकों ने बुढिया के साथ रहने का बन्दोवस्त कर लिया और वे वहीं रहने लगे।

दूसरे दिन उन्होंने स्कूल में नाम लिखाया। शिक्षक ने जेम्स के पढने के लिए चार कोर्स ठीक किये —पदार्थ-विज्ञान (Natural Philosophy) व्याकरण (Grammar), गणित (Arithmetic) और बीजगणित (Algebra)

उस स्कूल में लडके और लडकियां मिला कर प्राय सौ विद्यार्थी पढा करते थे । इतने विद्यार्थियो के साथ पढना जेम्स के लिए एक नई बात थी ।

मिस्टर ब्रेंच विद्यार्थियो को व्याकरण पढाया करते थे ।

पहले बता चुके हैं कि जेम्स जिस किसी विषय को सीखता था, उसको बिना अच्छी तरह समझे न छोडता था, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो । यहाँ व्याकरण पढते पढते एक कठिनाई आपडी । अँग्रेजी में एक शब्द बट (but) है जिसका अर्थ है "परन्तु"। व्याकरण में यह शब्द अव्यय (अर्थात् Conjunction) है । अध्यापक महाशय ने इसको क्रिया (अर्थात् Verb) बताया था । इस कारण जेम्स ने एक दिन मिस्टर ब्रेंच से पूछा —"महाशय, क्या बट (but) अव्यय (Conjunction) नहीं है ?"

उन्होने कहा —"नहीं, यह क्रिया है ।"

जेम्स ने कहा —"व्याकरण में इसको अव्यय ही कहते हैं ।"

अध्यापक ने पूछा —"तुमने कौन सा व्याकरण पढा है ?"

कर्कमैन साहब का बनाया हुआ व्याकरण जेम्स को कण्ठ था । उसने कहा —"मैंने कर्कमैन का व्याकरण पढा है ।"

अध्यापक ने कहा —"कर्कमैन का व्याकरण बिलकुल गलत है ।"

जेम्स ने कहा —"मैंने इसके पहले जिन जिन शिक्षकों के पास पढा है वे सब यही कहा करते थे कि यह अव्यय है ।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा —"उन लोगो ने चाहे जिस किसी व्याकरण से पढाया हो परन्तु मैं अपना ही बनाया हुआ व्याकरण पढाता हूँ ।"

तिस पर जेम्स ने कहा.—"यदि 'वट' क्रिया है तो एण्ड (and) जिसके माने हैं, 'और' वह भी क्रिया है ।"

अध्यापक ने कहा —"अवश्य, वह भी क्रिया है, क्योंकि इसके माने हैं जोडना ।"

यह सुन कर जेम्स हँस पडा और उसने दूसरे विद्यार्थियों की ओर देखा ।

अध्यापक ने समझ लिया कि जेम्स को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ । उन्होंने फिर कहा —"देखो, and के माने केवल और ही नहीं हैं वरन् इसके माने जोडना भी है। इस बात को मैं अभी प्रमाण से सिद्ध किये देता हूँ। यह कह कर उन्होंने कहा —"जैसे तुम और हेनरी दो लडके हो, और मैं कहता हूँ कि तुम और हेनरी दोनो मिल कर फलाने काम को करो। इसका मतलब यह होगा कि हेनरी तुम में जोड दिया गया है, इस कारण 'और' क्रिया है, अव्यय नहीं है ।"

जेम्स चुप हो गया और कुछ बोला नहीं ।

व्याकरण के घंटे में जेम्स और अध्यापक से प्राय' ऐसा ही तर्क हुआ करता था । इस तर्क से लडके बहुत खुश होते थे । लेकिन अध्यापक महाशय बहुत चिढते थे । परन्तु इतना उन्होंने

अवश्य ही समझ लिया था कि जेम्स एक साधारण लड़का नहीं है। इस कारण उसको पढ़ाने में वे कुछ हिचकते भी थे।

जेम्स के भाइयों ने जब देखा कि अध्यापक और जेम्स में प्राय तर्क वितर्क हुआ करता है और अध्यापक महाशय ठीक ठीक, उत्तर न दे सकने के कारण चिढ़ते भी थे तब उन लोगों ने जेम्स, को राय दी कि वह व्याकरण छोड़ कर कोई दूसरा कोर्स ले ले।

जेम्स ने व्याकरण छोड़ कर दूसरा कोर्स ले लिया। अध्यापक भी इस बात पर बहुत खुश हुए।

कुछ दिन बाद जेम्स ने देखा कि उसके २२ रुपये प्राय चुकने पर हैं, तब उसने अपने भाइयों से कहा—"यदि मैं इस समय कुछ रुपया न कमाऊँ तो मेरा दिवाला निकल जायगा क्योंकि अब मेरी थैली खाली हो चली है।"

विलियम ने पूछा—"भला यहाँ क्या काम करोगे?"

जेम्स ने कहा—"यहाँ बढ़ई का काम करूँगा। मिस्टर उडवर्थ नामी एक बढ़ई यहाँ रहते हैं। मैं उनसे मिल कर कुछ काम करने का बन्दोबस्त करूँगा जिससे कुछ रुपया कमा सकूँ।"

यह राय तै होने पर जेम्स ने मिस्टर उड्वर्थ से मुलाक़ात की और अपना मतलब बयान किया।

उड्वर्थ ने पूछा—"तुमने कभी इस काम को किया है।

यदि तुमने कभी किया हो तो कल स्कूल के बाद आना मैं, देखूँगा कि तुम्हे कुछ काम दे सकता हूँ या नहीं।"

जेम्स ने कहा—"मैंने मिस्टर ट्रीट के पास कुछ दिन काम किया है और मैं इस काम को अच्छी तरह जानता हूँ और कर सकता हूँ। आप मुझे काम दीजिएगा। मैं अगर अच्छी तरह न कर सकूँ तो मुझे छुडा दीजिए। मैं यह नहीं चाहता कि मुझे मुकर्रर करने मे आप मुझ पर कुछ मेहरबानी कीजिए। मेरा काम देखिए। यदि काम अच्छा हो तो दाम दीजिए। नहीं तो मत दीजिए।"

मिस्टर उड्वर्थ ने इन बातो पर बहुत ख़ुश हो कर कहा—"तुम कल से यहां आना। मैं तुम्हे काम दूँगा।"

जेम्स घर लौट गया और उड्वर्थ के कथनानुसार दूसरे दिन से सुबह शाम वहां जाने लगा और काम करने लगा। नतीजा उसका यह हुआ कि स्कूल से छुट्टी होने पर लिखने-पढने, खाने-पीने और रहने में जो कुछ खर्चा हुआ सब उसने अपनी ही कमाई से किया और घर जाते समय पांच छ रुपया साथ भी लेगया था।

स्कूल का नियम ऐसा था कि प्रत्येक विद्यार्थी को सब शिक्षकों और विद्यार्थियों के सामने खडे होकर हफ़्ते मे दो दिन वक्तृता देनी पडती थी। वक्तृता का विषय कभी तो अध्यापक महाशय स्वयं चुन देते और कभी विद्यार्थी ही अपने आप लिख लाते थे।

"जेम्स को जिस दिन पहली वक्तृता देनी पड़ी उस दिन उसकी विचित्र दशा थी। हाथ-पैर काँपते थे, जीभ लड़खड़ाती थी और गला घुटता सा था, परन्तु किसी प्रकार उसने अपनी वक्तृता समाप्त की। घर पहुँच कर अपने भाइयों से कहा— "हमारे भाग्य अच्छे थे कि जिस स्थान पर खड़ा होकर मैं वक्तृता दे रहा था वहाँ मेरे पैर के सामने एक पर्दा पड़ा हुआ था नहीं तो सबको पता लग जाता कि मेरे पैर काँप रहे थे।"

हेनरी ने पूछा—"क्या तुम घबरा गये थे?"

जेम्स ने कहा—"हाँ, मैं बहुत घबरा गया था।"

"लेकिन तुम्हारी वक्तृता बहुत अच्छी हुई थी। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ था कि इस फटे चिथड़े के भीतर इतना मसाला भरा हुआ है।"

स्कूल के विद्यार्थियों ने मिल कर तर्क-वितर्क करने की एक साधारण सभा कायम की थी। जेम्स भी उस सभा का एक मेंबर था। उस सभा में प्रायः वक्तृता और बहस आदि हुआ करती थी। जेम्स की आदत थी कि वक्तृता देने के पहले वह उस विषय को अच्छी तरह सोच लेता था। इस कारण उसकी वक्तृता सब लड़कों से अच्छी हुआ करती थी। लड़कों को विश्वास होगया था कि भविष्य में जेम्स एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध वक्ता होगा। जेम्स की रुचि और वृत्ति देख कर शिक्षक गण भी ऐसी ही बात कहा करते थे।

स्कूल के पुस्तकालय से जेम्स ने "हेनरी सी राइट" की जीवनी पढी थी । पढते समय उसके जीवन व्यतीत करने का नियम जेम्स को बहुत पसन्द आया था । उसने एक दिन अपने भाइयो से कहा —"मैं हेनरी राइट की तरह अपना जीवन व्यतीत किया चाहता हूँ ।"

हेनरी ने पूछा —"सो कैसा ?"

जेम्स ने कहा —"केवल दूध और रोटी खा कर दिन काटूँगा । इसमें हमारा खर्चा भी कम होगा और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा ।"

हेनरी ने कहा —"दूध पीने से खर्चा तो अवश्य कम हो सकता है परन्तु स्वास्थ्य कैसे अच्छा रह सकता है ।"

जेम्स ने कहा —"मास खाने वालों की अपेक्षा दूध पीने वालों का मस्तिष्क और उनका शरीर अधिक बलिष्ठ होता है और इस कारण वे उनसे अधिक विद्वान् होते हैं । इसका प्रमाण हमें मिल चुका है ।"

जेम्स की बाते सुन कर हेनरी और विलियम दोनों ने मजाक करना आरम्भ किया । पर जेम्स ने कहा —"तुम लोग चाहे मजाक करो और चाहे हँसो । लेकिन मैं तो केवल दूध ही पीऊँगा ।"

जेम्स ने वैसा ही किया ।

सोलहवाँ परिच्छेद ।

स्कूल मे गर्मियो की दो महीने की छुट्टी हुई, जैसा हर जगह हुआ करता है। छुट्टियो में जेम्स अपने भाइयो के साथ घर गया। टामस भी घर पर था, और वह चाहता था कि अपनी मां के रहने के लिए एक कोठा बनावे। इस कारण धीरे धीरे कई महीनों मे उसने बाँस बल्ली इत्यादि सामान इकट्ठा कर रक्खा था। जब जेम्स घर आया तब उसने कहा —"जेम्स, तुम तो कोठे का ठाट बाँध सकोगे न, क्योकि तुमने बहुत बनाया है ?"

जेम्स ने उत्तर दिया —"यदि बीजगणित (*Algebra*) और विज्ञान (Philosophy) ने मेरे दिमाग से कोठा और ठाट बनाने का ज्ञान मिटा न दिया हो तो मैं अवश्य ही बना सकता हूँ।" टामस ने कहा —"मुझे आशा होती है कि गणित और विज्ञान की सहायता से तुम कोठे को पहले से भी ज्यादा अच्छी तरह बना सकोगे।"

कुछ काल तक दोनों भाइयों में इसी प्रकार की बाते होती रहीं। अन्त में इन्हीं दोनों ने मिलकर बिना किसी और आदमी

की सहायता के कोठा तैयार कर दिया। अब मां के रहने के लिए एक दूसरा मकान बन गया।

कोठे का बनना समाप्त होने पर जेम्स दूसरा कोई काम करने की चिन्ता करने लगा। काम भी तुरन्त ही मिल गया। उसके पडोस में एक किसान रहता था। उसको खेत बोने के लिए किसी आदमी की जरूरत थी। इस कारण उस किसान ने तुरन्त जेम्स को नियत कर लिया। जेम्स ने बडी मुस्तैदी के साथ काम किया और थोडे ही दिनों मे उसका काम पूरा कर दिया। उस काम के पूरा हो जाने पर जेम्स ने दो एक जगह और भी काम किया, और इन कामों के पूरा होने के साथ साथ उसकी छुट्टी भी पूरी हो गई।

छुट्टियो मे जेम्स दिन भर तो काम किया करता था और रात को गणित विज्ञान आदि पुस्तकों को पढा करता था।

उसके लिखने-पढने की ओर अनुराग देख-कर उसकी विधवा माता को अनुमान होगया कि कदाचित् उसके पुत्र के मन से समुद्र-यात्रा का ख्याल दूर हो गया है। वह भी उस भूली हुई बात की चर्चा नहीं छेडती थी, जैसे जेम्स ने समुद्र-यात्रा के विषय में कुछ नहीं कहा वैसे ही उसकी माता ने भी कुछ नहीं कहा।

स्कूल की छुट्टी पूरी हो गई और जेम्स फिर चेस्टर जाने को तैयार हुआ। माता ने कहा.—"बेटा, तुम विदेश जा रहे

हाँ, और तुम्हारे पास केवल एक अठन्नी ही है, कुछ रुपये और ले जाओ।"

जेम्स ने कहा —"मैं अपने खाने-पीने और लिखने-पढने का बन्दोबस्त चेस्टर ही में ठीक कर लूँगा। मुझे कुछ रुपये की जरूरत नहीं है।" माता ने कहा —"प्रारम्भ में खाली हाथ जाने की अपेक्षा कुछ थोडा रुपया ले जाना अच्छा है।"

जेम्स ने कहा —"प्रारम्भ में कुछ रुपया लेके जाने और अन्त में खाली हाथ लौटने की अपेक्षा खाली हाथ जाना और अन्त में पाकेट गरम करके लौटना अच्छा होगा।"

माता ने कहा —"इस बात से तो ऐसा मालूम होता है कि तुम घर लौटते समय कुछ रुपया साथ लेके लौटोगे।"

जेम्स ने कहा —"जरूर कुछ रुपये लाऊँगा। अगर रुपये लाऊँ तो जाडे में शिक्षक का काम कैसे करूँगा।"

माता ने खुश होकर पूछा —"क्या तुमने शिक्षक बनना स्थिर कर लिया है।"

जेम्स ने कहा —"इच्छा तो ऐसी ही है, इसके बाद हर-इच्छा।"

माता ने कहा —"यदि शिक्षक बनने की तुम्हारी इच्छा हुई तो भगवान् तुम्हारी इच्छा अवश्य ही पूरी करेंगे। इसके अतिरिक्त यदि तुम शिक्षक हो जाओ तो तुम इतना रुपया कमाओगे कि दूसरे साल तुम अपने पढने और खाने-पीने का खर्चा आपी से चला सकते हो।"

दूसरे दिन सवेरे जेम्स और उसके दोनों चचेरे भाई चेस्टर को रवाना हुए। चेस्टर पहुँच कर जेम्स ने अपने भाइयों से कहा —"मेरे पास केवल एक अठन्नी है। यह बेचारी जेब में अकेली घबराती है। झट पट इसका कोई साथी ठीक कर देना चाहिए।"

इस बात के कहने के दो दिन बाद ही सैबेथ डे (Sabbath Day) आ पहुँचा, और जेम्स कोई काम न कर पाया था।

सैबेथ के दिन सब लोग गिर्जे मे बैठे हुए भजन सुन रहे थे। जेम्स भी वहाँ था। भजन पूरा होने पर पादरी साहब ने चन्दे का बक्स सब लोगों के पास भेजा। जिस से जो देते बना उसने उतना ही दिया। जेम्स के पास केवल वही अठन्नी थी। जब उसके पास बक्स आया तब उसने भी चुपके से वह अठन्नी निकाल कर बक्स मे डाल दी।

जेम्स और उसके दोनों भाई पहले की तरह मिस्टर राइट की नाई, दूध पीकर ही जीवन बिताने लगे। ऐसा करने से उनका खर्चा बहुत कम होगया, परन्तु विलियम और हेनरी दोनों भाई ऐसे भोजन से असन्तुष्ट थे। इस कारण हेनरी ने एक दिन कहा —"देखो भाई, यह भोजन कुछ बुरा नहीं है। पर हम देखते हैं कि इससे हमारी शक्ति दिन दिन मानो घटती जाती है।"

जेम्स ने कहा —"तुम्हारी शक्ति घट रही है परन्तु मेरी

शक्ति दिन दिन दूनी हो रही है। मैं अभी तुम दोनो को दवाये रख सकता हूँ।"

हेनरी ने कहा —"ईश्वर ने तुम्हारे शरीर की ऐसी काठी बनाई है कि तुम यदि मिट्टी के लड्डू बना के खाओ तब भी तुम्हारा शरीर बलिष्ठ होता रहेगा।"

विलियम ने कहा :—" यह सब तो हँसी की बात छोड दो। परन्तु हम लोगो को अपने खाने पीने का सामान कुछ अच्छा करना ही होगा।"

हेनरी ने भी इस बात पर जोर दिया। इस कारण जेम्स आहार बदलने पर लाचार हुआ। नये आहार में उन लोगो का एक एक रुपया प्रति सप्ताह हर एक का लगता था।

जेम्स सुबह शाम उसी उड्वर्थ बढई के यहाँ काम किया करता और अपना खर्चा चलाता।

जेम्स ने अपने अध्यापक से शिक्षक बनने का अभिप्राय कुछ भी न बतलाया था, लेकिन मिस्टर ब्रैंच जेम्स को बहुत प्यार करते थे और वे चाहते थे कि वह कुछ दिन तक विद्या पढ़े। व यह भी जानते थे कि जेम्स बहुत गरीब का लडका है। इस कारण उन्होंने एक दिन जेम्स को पास बुला कर कहा —"तुम शिक्षक का काम करना पसन्द करोगे ?"

जेम्स ने बडी खुशी से कहा —" मेरी माता मुझे इस काम को करने के लिए बहुत दिनों से कह रही हैं और मैं भी चाहता हूँ कि मैं इसे करूँ।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा —"तुम जो अपनी माता की बात मानते हो, इससे मैं बहुत खुश हुआ। अच्छा लडका इसी का नाम है और अच्छे लडके का यही काम है। विद्या पढाने से तुम्हारी दूनी भलाई होगी। इससे तुम्हारी आर्थिक उन्नति होगी और दूसरे लडके भी तुम से उपकृत होगे?"

जेम्स ने पूछा —"क्या मैं ऐसा काम पा सकता हूँ ?"

" दस वर्ष पहले स्कूल भी कम थे, पढ़ने-पढाने वाले भी कम थे, परन्तु अब यह बात नहीं है। अब स्कूल भी बहुत हैं, पढने वाले भी बहुत हैं और शिक्षको की भी बहुत जरूरत होती है, परन्तु हर आदमी इस काम में सफल नहीं होता, लेकिन हमें आशा है कि तुम इसको अच्छी तरह कर सकोगे और इस काम में कृतकार्य होगे।"

"आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं इस काम में कृतकार्य हूँगा।"

मिस्टर ब्रेंच ने कहा —"पहली बात तो यह है कि तुमने अच्छी विद्या पाई है, और शिक्षक के लिए इसका होना बहुत जरूरी है। दूसरे यह कि तुम में विचारशक्ति बहुत तेज है और तुम किसी विषय को सुन कर गूढ तत्व को विचारने की कोशिश करते हो। शिक्षक में इस गुण का भी होना बहुत जरूरी है। और तीसरे यह कि तुम विना किसी कठिनाई के स्कूल को अच्छी तरह चला सकोगे। और आखिर बात यह है कि जो

लडका अपने सहपाठियों में मिलनसार होता है वही अच्छा शिक्षक हो सकता है।"

जिस समय जेम्स स्कूल में पढता था उस बीच की एक घटना उल्लेख योग्य है। स्कूल के किसी दुष्ट लडके ने पडोस के किसी लडके को मारा और गाली दी। इस कारण लडके के बाप ने अध्यापक महाशय से इसकी नालिश की। अध्यापक महाशय उस अपराधी लडके को निकाल देने का दण्ड देना विचार रहे थे। उस समय उस अपराधी लडके के कई साथी भी इकट्ठे होकर यही परामर्श कर रहे थे कि यदि बेल (लडके का नाम) निकाल दिया जाय तो हम लोग भी उसी के साथ साथ स्कूल छोड देंगे।

यह बात जेम्स के कान में पहुँची। तब उसने उन लडकों से पूछा —"क्यों भाई, यदि कोई लडका अपराध भी करे तो भी हम लोग उसका साथ देंगे ?"

उन लडकों ने कहा —"अपना सम्मान स्थिर रखने के लिए हम लोगों को ऐसाही करना चाहिए।"

जेम्स ने कहा —"कभी नहीं। यदि मेरा कोई मित्र अपनी दुष्टता से कष्ट में पड जाय तो मैं उसकी सहायता न करूँगा।"

बेल के मित्र ने कहा —"मैं समझता हूँ कि यह उस पडोसी का कमीनापन है जो वह एक विद्यार्थी के नाम नालिश-

करता है केवल इस वजह से कि वह उस समय अपनी दुरुस्त न रख सका था।"

जेम्स ने कहा—"मैं तुम्हारी बात नहीं मान् क्योंकि मैं समझता हूँ कि बेल को अपनी जबान का उतना भाव से व्यवहार करना चाहिए जितना कि वह अपने ह को करता है।"

बेल के दोस्त ने कहा—"हाँ, यह सब ठीक है, परन्तु वह बे जाने धोखे में पड जावे तो उसकी मदद करना जरूरी

जेम्स ने तुरन्त कहा—"उस हालत मे उसकी जरूर करूँगा। पर कब? जब वह अपने किये पर लज्जित दु खित हो।"

"तो मैं समझता हूँ कि तुम मदद करने पर नाराज हो वरन् हम लोगों के ढँग पर नाराज हो।"

जेम्स ने कहा—"हाँ ठीक है। यदि बेल उस पडोसी मुआफी मांगे और मिस्टर ब्रेच के पास इस बात की शप करने को राजी हो कि वह भविष्य में कभी ऐसा काम न करे तो मैं पहले उसके लिए कहूँगा।"

बेल ने वैसा ही किया और उसका अपराध क्षमा हो गया

सत्रहवाँ परिच्छेद ।

घर पहुँचने के दूसरे ही दिन जेम्स किसी स्कूल की नौकरी ढूँढने निकला । जाते जाते एक स्कूल के व्यवस्थापक से भेंट हुई । उनके पास जाकर जेम्स ने अपना मतलब बयान किया ।

व्यवस्थापक ने कहा —"तुम्हारी उम्र बहुत थोडी है और तुम स्कूल का काम न कर सकोगे ।"

जेम्स ने कहा —"गीग सेमिनेरी * के अध्यापक, मिस्टर मेंच का सार्टिफिकेट मेरे पास है । आप उसको देखिए ।"

सिकत्तर ने कहा —"मैं मानता हूँ कि तुमने अच्छी विद्या प्राप्त की है और तुम बहुत कुछ जानते हो, परन्तु हम लोग तुम्हें नियत नहीं कर सकते, क्योंकि तुम्हारी उम्र बहुत थोडी है और हम लोग लडकों को शिक्षक नहीं बनाया चाहते ।"

निराश होकर जेम्स वहाँ से निकल आया । बाहर निकल कर फिर आगे बढा । जाते जाते फिर एक और व्यवस्थापक से भेंट हुई ।

---

* गीग सेमिनेरी उसका नाम है जहाँ जेम्स पढ़ा करता था । सेमिनेरी स्कूल को कहते हैं और गीग उस जगह का नाम है ।

स्कूल में वहाँ के एक विद्यार्थी थे। वे बडे लायक़ आदमी थे श्रौर बडे नेक भी थे।"

दोनों मे बात-चीत करते करते रात हो गई। इस कारण मिस्टर नेलमन कहा —"आप आज रात को मेरे ही मकान पर रह जाइए। कल सुबह को जहाँ जी चाहे जाइएगा क्योंकि अब रात ज़्यादा हो गई है श्रौर आपको बहुत दूर जाना पडगा।"

जेम्स ने इस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया श्रौर रात को वह वहीं रह गया। सवेरा होते ही जेम्स उठा श्रौर अपने शिकार की तलाश में निकला। तमाम दिन घूमता रहा। पर कोई शिकार हाथ न लगा। अन्त में निराश होकर घर लौट गया श्रौर अपनी माता से कहा —"स्कूल की नौकरी मिलनी हमें असम्भव मालूम पडती है क्योंकि प्राय सब स्कूलो में शिक्षक नियत हो चुके हैं, श्रौर एक-आध जगह जो खाली भी है तो वे हमे रखना नहीं चाहते क्योंकि हमारी उम्र बहुत कम है।"

माता ने लडके को उत्साहित करके कहा —"बेटा, घबराओ नहीं। ईश्वर ने अवश्य ही तुम्हारे लिए कोई उपाय सोच रक्खा है, श्रौर वह उपाय क्या है इस बात का भी पता तुम्हें बहुत जल्द लग जायगा।"

जेम्स ने नैराश्यजनक वचन से कहा —"देखे ईश्वर ने क्या उपाय सोच रक्खा है। हमें तो कुछ भी नहीं सूझता।"

माता ने कहा —"तुम बहुत थक गये हो। अब खा-पीकर सोओ। कल जो होगा देखा जायगा।"

माँ बेटे दोनों खा-पीकर सो गये। दूसरे दिन प्रात काल के समय दरवाजे पर किसी के पुकारने का शब्द सुनाई पडा। उसकी आवाज सुनते ही जेम्स की विधवा माता बाहर निकल आई और उससे पूछा —"आप क्या चाहते हैं?"

उस पडोसी ने कहा —"मैं आपके कनिष्ठ पुत्र जेम्स को चाहता हूँ। क्या वह हमारे स्कूल में शिक्षक का काम करेगा?"

जेम्स उस समय सो रहा था। अपने नाम के साथ स्कूल का नाम सुनते ही वह उठ खडा हुआ और उस आगन्तुक के सामने गया।

उस पडोसी ने जेम्स से पूछा —"क्या तुम हमारे स्कूल मे शिक्षक का काम करना पसन्द करोगे? हम लोग २४ रुपया मासिक वेतन और खाना देगे।"

जेम्स ने कहा —"मैं ऐसी ही नौकरी ढूँढ रहा था। परन्तु शाम को मैं इसका जवाब दूँगा।"

पडोसी चला गया और माता-पुत्र दोनों घर के भीतर गये।

जेम्स ने कहा —"माता, तुम तो जानती हो कि उस स्कूल के लडके कितने दुष्ट हैं। वहाँ का शिक्षक होना कितना कठिन है। पहले तो यह कि कोई शिक्षक वहाँ टिकने नहीं पाता और दूसरे यह कि यदि पहले ही पहल मैं उस काम को करूँ और

थोड़े ही दिन में मुझे भी छोड़ कर भागना पड़े तो बड़ी लज्जा की बात होगी और इसमें हमारी बड़ी बदनामी होगी।"

माता ने कहा —"यह तो ठीक है, परन्तु स्कूल के सब लड़के तुम्हें अच्छी तरह पहचानते हैं और सब तुम्हारी प्रतिष्ठा करते हैं। इस अवस्था में यदि तुम एक बार उन लोगों को अपने क़ाबू में कर लो और उनके बुरे अभ्यास को छुड़ा दो तो निश्चय जानो कि तुम्हारी प्रतिष्ठा जम जायगी और सब लोगों को ऐसा अनुमान हो जायगा कि तुम एक अच्छे शिक्षक हो। मेरी तो यही राय है कि तुम इस काम को कर लो, परन्तु एक बार तुम अपने चचा ऐमोस बाइटन से भी पूछ लो। देखो वे क्या कहते हैं।"

दुपहर को खाने पीने के बाद जेम्स ने मिस्टर बाइटन से मुलाक़ात की और अपना सारा हाल कह सुनाया।

मिस्टर बाइटन ने बहुत देर तक सोच-विचार कर वही कहा जो उसकी माता ने कहा था।

चचा और माता की राय जब एक सी मिल गई तब जेम्स ने उसी स्कूल में पढ़ाना स्वीकार किया और शाम को उस पड़ोसी से कह आया कि मैं आपके स्कूल में पढ़ाऊँगा।

दो तीन दिन में यह बात चारों ओर फैल गई कि जिम गारफ़ील्ड जाड़े में पढ़ाने का काम करेगा। लड़के जब कभी आपस में मिलते यही कहते —"जिम बहुत अच्छा आदमी है। हम लोग उसके पास बहुत खुशी से पढ़ेंगे।"

जिस दिन स्कूल खुला उस दिन जेम्स ने अपनी मां से कहा—"मैं स्कूल जाता हूँ। लेकिन शायद दोपहर तक मुझे लौट आना पडेगा।"

माता ने कहा —"नहीं बेटा, हमें विश्वास है कि तुम इस काम को बहुत सफलता से करोगे।"

जेम्स ने अपने मन में ठान लिया था कि वह स्कूल में जहां तक बन पडे किसी लडके को बेंत न मारेगा और कोई कठिन नियम भी जारी न करेगा। वह चाहता था कि स्कूल मे उसकी हुकूमत मजबूत हो परन्तु यह नहीं चाहता था कि किसी पर कुछ अत्याचार हो, इस कारण उसने आते ही लडको से अपना मतलब बयान किया और कहा —"लडको, मेरे यहां आने का उद्देश यह है कि मैं तुम लोगो को तुम्हारे लिखने-पढने में, जहां तक सम्भव हो, सहायता करूँ, जिससे तुम लोग अपने काम में उन्नति करो। तुम सब लोग बडे लडके हो और सब बुद्धिमान हो। इस कारण तुम अपनी और अपने स्कूल की भलाई-बुराई अच्छी तरह समझते हो। मैं हर तरह से इस बात का प्रयत्न करूँगा कि यह एक अच्छा स्कूल हो जाय, और जो तुम लोग भी मेरी सहायता करो तो कदाचित् थोड़े ही दिनो में इस गांव भर में यह स्कूल सबसे अच्छा हो जायगा।"

लडको ने जिम गारफील्ड की बात मान ली। बडे बडे लडके आपसे आप उसके क़ाबू में होते गये, और जिन जिन बदमाशियो के लिए स्कूल पहले से बदनाम था वे बदमाशियाँ

धीरे धीरे दूर होने लगीं। लडको ने धीरे धीरे बदमाशी छोड लिखने-पढने की ओर ध्यान देना आरम्भ किया। जेम्स लडको के खेल-कूद मे वैसा ही शरीक होता था जैसा कि उनके लिखने-पढने में होता था। तात्पर्य यह कि थोडे ही दिन में जेम्स की प्रतिष्ठा अच्छी तरह जम गई।

जेम्स भी पारी बाँध कर विद्यार्थियो के घर में रहा करता था। इस कारण नहीं कि वह केवल लडको ही को अपनी बात चीत से मोहित करता था वरन् उनके पिता-माता भी उनके व्यवहार पर लट्टू हो गये थे।

जाडा बीतने पर जब जेम्स ने स्कूल छोडा तब स्कूल के कार्य-कर्ताओं और विद्यार्थियो के माता-पिता ने मिल कर एक सार्टिफिकेट दिया जिसमे लिखा था कि "जबसे यह स्कूल कायम हुआ है तबसे हम लोगो ने मिस्टर गारफील्ड से बढ कर कोई शिक्षक नहीं पाया।

स्कूल खुलने पर वह फिर गीग सेमिनेरी लौट गया और फिर पढने लगा। वहाँ की पढाई पूरी होने पर उसने दूसरे जाडे में दूसरे स्कूल में मास्टरी की। वहाँ उसको ३२) मासिक वेतन और खाना मिलता था।

इस स्कूल मे एक बडे लडके ने रेखागणित (Geometry) पढना चाहा। जेम्स ने कुछ दिन उसे टाला और इसी बीच में उसने रेखागणित की एक पुस्तक खरीद कर रात को पढना आरम्भ किया। कुछ दिन मे उसने उस विषय को अच्छी तरह

पढ़ लिया और तब उस लडके को उसने पढाना शुरू किया। उस लडके को इस बात का पता न लगा कि उसका शिक्षक उस विद्या को नहीं जानता था।

जेम्स जब तब कहा करता था —"जब कोई आदमी किसी काम को करता है तब उसको जान लेना चाहिए कि वह उस काम को न करने वालो से ज्यादा जानता है।"

एक दिन लड़कों के साथ खेलते खेलते जेम्स गिर पडा और उसकी पतलून फट गई। इस कारण वह बहुत दु खित हुआ। उस समय वह मिसेस स्टैलस के यहाँ रहा करता था मिसेस स्टैलस ने इन्हें दु खित देख कर कारण पूछा।

तब जेम्स ने कहा —"मेरी पतलून फट गई है; और मेरे पास दूसरी पतलून भी नहीं है।"

मिसेस स्टैलस ने कहा —इसके लिए दु खी मत हो। रात । जब तुम सोओगे तब मैं तुम्हारी पतलून सी दूँगी और किसी को न मालूम होगा कि यह फटी थी।

स्कूल बन्द होने पर जेम्स घर लौट गया।

पढ लिया और तब उस लडके को उसने पढाना शुरू किया। उस लड़के को इस बात का पता न लगा कि उसका शिक्षक उस विद्या को नहीं जानता था।

जेम्स जब तब कहा करता था—"जब कोई आदमी किसी काम को करता है तब उसको जान लेना चाहिए कि वह उस काम को न करने वालो से ज्यादा जानता है।"

एक दिन लडकों के साथ खेलते खेलते जेम्स गिर पड़ा और उसकी पतलून फट गई। इस कारण वह बहुत दुःखित हुआ। उस समय वह मिसेस स्टैलस के यहाँ रहा करता था। मिसेस स्टैलस ने इन्हें दुःखित देख कर कारण पूछा।

तब जेम्स ने कहा—"मेरी पतलून फट गई है; और मेरे पास दूसरी पतलून भी नहीं है।"

मिसेस स्टैलस ने कहा—इसके लिए दुःखी मत हो। रात को जब तुम सोओगे तब मैं तुम्हारी पतलून सी दूँगी और किसी को न मालूम होगा कि यह फटी थी।

स्कूल बन्द होने पर जेम्स घर लौट गया।

भविष्य वाणी करना शुरू किया था कि जेम्स एक बहुत बड़ा वक्ता और धर्मशिक्षक होगा।"

गीग सेमिनरी के अध्यापक महाशय, मिस्टर ग्रेंच, भी यही कहा करते थे कि एक दिन वह एक बड़े समाज में वक्तृता देगा।

लड़के भी यही कहते थे कि जिमी बहुत बड़ा धर्म-शिक्षक होगा। सब लोगों को मानो ऐसा विश्वास हो गया था कि भगवान् ने उसको धर्मशिक्षा देने ही के लिए बनाया है।

गीग सेमिनरी में गर्मी की छुट्टी होने पर जेम्स घर लौट गया और छुट्टी बिताने के लिए काम ढूँढने लगा। अब की बार गीग सेमिनरी का एक लड़का उसके साथ काम करने की इच्छा से आया था।

दोनों काम की खोज में निकले। जाते जाते एक किसान से मुलाक़ात हुई और जेम्स ने उससे अपना मतलब कह सुनाया और पूछा—"तुम्हें किसी आदमी की भी जरूरत है ?"

उस किसान ने पूछा—"तुम लोग क्या काम कर सकते हो ? तुम लोग तो विद्यार्थी मालूम होते हो।"

जेम्स ने कहा—"हाँ, हम लोग विद्यार्थी हैं, और हम लोग इसी तरह काम करके विद्या-उपार्जन करते हैं। जो काम आपका जी चाहे हम लोगों को दीजिए, हम लोग उसे कर देंगे।"

किसान ने पूछा—"तुम लोग क्या वेतन लोगे ?"

इन बातो को सुन कर जेम्स बहुत खुश हुआ और उसने कहा।—"अब तो मैं देखता हूँ कि कालेज में पढना मेरे लिए सम्भव मालूम होता है क्योकि मैं बहुत तरह के काम कर सकता हूँ और काम करने मे मैं न थकता हूँ, न ऊबता हूँ।"

फिर जेम्स ने पूछा—"कितने दिन में मैं बी० ए० पास कर सकता हूँ और कितना मेरा खर्चा पडेगा ?"

विद्वान् ने कहा—"चार वर्ष मे तुम बी० ए० पास कर सकते हो, और ४००) वार्षिक से कम मे किसी तरह खर्चा नहीं चल सकता।"

जेम्स ने कहा—"मुझे बी० ए० पास करने मे कदाचित् अधिक समय लगेगा क्योंकि मैं स्कूल में मास्टरी भी करूँगा और कालिज मे भी पढूँगा, परन्तु यदि १२ वर्ष मे भी बी० ए० पास कर सकूँ तो भी मैं बिना पास किये न छोड़ूँगा।"

उसने और भी कई उपाय बतलाये जिससे जेम्स वहाँ जरूर पढ सके। जेम्स ने भी कालेज मे पढने का दृढ सकल्प कर लिया और इस कारण उसने लैटिन और ग्रीक दो भाषाये सीखनी आरम्भ कर दीं क्योंकि कालिज मे ये दो भाषाये पढाई जाती हैं।

उसी समय जेम्स ने "कृस्तान-धर्म-महा-मण्डल" मे अपना नाम लिखाया और धर्म के विषय मे उसने कई एक वक्तृताये दी। उसकी वक्तृताये ऐसी लुभावनी और युक्तिपूर्ण हुआ करती थीं कि लोग दूर दूर से सुनने आया करते थे। तब से लोगो ने

भविष्य वाणी करना शुरू किया था कि जेम्स एक बहुत बडा वक्ता और धर्मशिक्षक होगा।"

गीग सेमिनरी के अध्यापक महाशय, मिस्टर ब्रेंच, भी यही कहा करते थे कि एक दिन वह एक बडे समाज में वक्तृता देगा।

लडके भी यही कहते थे कि जिमी बहुत बडा धर्म-शिक्षक होगा। सब लोगो को मानो ऐसा विश्वास हो गया था कि भगवान् ने उसको धर्मशिक्षा देने ही के लिए बनाया है।

गीग सेमिनरी में गर्मी की छुट्टी होने पर जेम्स घर लौट गया और छुट्टी बिताने के लिए काम ढूँढने लगा। अब की बार गीग सेमिनरी का एक लडका उसके साथ काम करने की इच्छा से आया था।

दोनों काम की खोज में निकले। जाते जाते एक किसान से मुलाक़ात हुई और जेम्स ने उससे अपना मतलब कह सुनाया और पूछा —"तुम्हें किसी आदमी की भी जरूरत है ?"

उस किसान ने पूछा —"तुम लोग क्या काम कर सकते हो ? तुम लोग तो विद्यार्थी मालूम होते हो।"

जेम्स ने कहा —"हाँ, हम लोग विद्यार्थी हैं, और हम लोग इसी तरह काम करके विद्या-उपार्जन करते हैं। जो काम आपका जी चाहे हम लोगो को दीजिए, हम लोग उसे कर देंगे।"

किसान ने पूछा —"तुम लोग क्या वेतन लोगे ?"

जेम्स ने कहा —"जितना आप ठीक समझेंगे उतना ही दीजिएगा।"

किसान ने उनकी बात मान ली और वह उन लोगों को खेत में ले गया। खेत में तीन आदमी काम कर रहे थे। उन आदमियो से किसान ने कहा —"ये दो लडके तुम्हारी सहायता करेंगे। तुम इनको काम बता दो, और इन से काम लो।"

जेम्स और उसके साथी ने काम करना शुरू किया और उन्होंने चाहा कि उन तीन आदमियो को हरा दे। इस कारण उन्होंने बहुत शीघ्रता से काम करना शुरू किया। उनका मालिक भी वहीं खडा तमाशा देख रहा था। घंटे भर बाद जब उसने देखा कि उन आदमियो की अपेक्षा इन दो लडकों ने बहुत काम किया है तब उसने चिल्लाकर कहा —"रे काहिलो, बडी लज्जा की बात है कि दो बालको ने तुम तीनों को हरा दिया।" उन लोगो ने इस बात पर कुछ भी ध्यान न दिया। वे चुपचाप अपना काम करते रहे। किसान वहाँ से चला गया।

जब काम पूरा हो गया तब किसान ने सभी को दाम देने के लिए बुलाया और जेम्स और उसके साथी से कहा —"लडको, तुम लोग कितना दाम लोगे ?"

जेम्स ने कहा —"जो कुछ आप ठीक समझें वही दीजिए।"

उसने कहा —"तुम लोग आखिर लडके ही हो, इस कारण तुम को लडकों का सा दाम मिलना चाहिए।"

जेम्स ने कहा—"लेकिन हम लोगों ने काम आदमियों का सा किया है, बल्कि उनसे भी ज्यादा। इसलिए दाम आदमियो का सा मिलना चाहिए।"

"बाजे लडके आदमियो का सा काम करते हैं परन्तु वे लडके ही कहलाते हैं।"

"यह सब ठीक है, परन्तु दाम तै करते समय मैंने आपसे कहा था कि जो दाम आप ठीक समझेंगे, वही दीजिएगा। अब जो दाम आप दे रहे हैं क्या वह ठीक है। यदि आप ठीक समझें तो हमें लेने में कोई इनकार नहीं।"

किसान इस बात पर लज्जित हुआ और आदमियो की सी मजदूरी देकर उनको विदा किया। उन लोगो के जाते समय उसने जेम्स से कहा—"यदि तुम इस बीच में कहीं वक्तृता दो तो मुझे खबर देना मैं तुम्हारी वक्तृता सुनने आऊँगा।" यह कह कर उन दोनों को आशीर्वाद देकर किसान ने विदा किया।

जेम्स ने अपने साथी से कहा—"हमें बहुत आश्चर्य मालूम होता है कि क्यों लोग यह कहते हैं कि मैं [illegible] या धर्म-शिक्षक होऊँगा।"

उसके साथी ने कहा—"क्योंकि वे [illegible] हैं कि तुम में वक्तृता देने के गुण उपस्थित हैं।"

उस समय दासत्व निवारिणी सभा [illegible] रही थी। चारो ओर नित्य ऐसी सभाये स्थापित [illegible]

इस बात की कोशिश करते थे कि किसी प्रकार संसार से दासत्व की प्रथा उठा देवें । गीग सेमिनेरी के शिक्षक और विद्यार्थी गण भी इसी की चर्चा किया करते थे। एक दिन जेम्स ने कहा —"बड़े शर्म की बात है कि जिस देश के लोगो ने ब्रिटेन-निवासियों की अधीनता से छूटने का इतना प्रयत्न किया था वे ही लोग अपने देश-वासियों पर इतना अत्याचार करें कि उनके अमूल्य जीवन को नीच दासत्व की शृङ्खला में जकड के उनकी स्वाधीनता और सुख-सम्पत्ति सदा के लिए छीन लेवें। यदि दासत्व दूर न किया जाय तो इस देश का कल्याण होना असम्भव है। यदि अब भी हम लोग इस विषय पर ध्यान न दे तो फिर यह देश सदा के लिए अज्ञान की गोद में पड़ा रहेगा।"

इससे यह मालूम होता है कि जेम्स लड़कपन ही से दासत्व की प्रथा से बड़ी घृणा रखता था।

तीन वर्ष तक गीग सेमिनेरी मे पढने के बाद जब जेम्स स्कूल छोड कर घर लौटने को था उसी समय उस स्कूल की वार्षिक प्रदर्शिनी होने वाली थी। उस प्रदर्शिनी में जेम्स ने एक वक्तृता दी थी। स्कूल में वही उसकी अन्तिम वक्तृता हुई। उस वक्तृता को सुन कर लोगों ने उसकी बडी प्रशंसा की और बडों ने आशीर्वाद दिया कि वह अपने भविष्य जीवन में प्रत्येक कार्य में पूरी सफलता लाभ करे।

स्कूल का पाठ समाप्त करके जेम्स घर गया। वहाँ पहुँच

कर देखा कि उसकी माता अपने किसी कुटुम्बी से मुलाक़ात करने के लिए जाने की तैयारी कर रही है। इनके कई कुटुम्बी मस्किगम नगर में रहा करते थे । आरेंज से मस्किगम प्राय ३०—४० मील दूर था। जब जेम्स घर पहुँचा तब उसकी माता ने कहा —"तुम भी हमारे साथ मस्किगम चलो। वहाँ मैं तीन चार महीने रहूँगी। तुम अपने पढने की किताबें ले चलो। उन्हे पढना और इसके सिवा यदि और कोई काम मिल जाय तो वह भी करना।"

जेम्स ने खुश होकर कहा —"मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ वहां जाऊँ और दूर दूर के मुल्कों को देखूँ, परन्तु मैंने कालिज मे पढने का विचार भी किया है और हमें उसके लिए बन्दोबस्त करना होगा।"

जब जेम्स की माता ने सुना कि जेम्स कालिज में पढना चाहता है तब उसका हृदय आनन्द से गद्गद हो गया। उन्होंने कहा —"तुम वहाँ जाकर अपना समय व्यर्थ न खोना। अपने पढने की किताबें ले चलो। वहाँ पढा करना। यदि कोई काम मिल जाय तो उसे करना।"

जेम्स राजी हो गया और माँ-बेटे दोनों ने क्लीभलैण्ड के लिए यात्रा कर दी। क्लीभलैण्ड पहुँच कर जेम्स को उस जहाज के कप्तान की बात याद आई। और, अपनी नहर की नौकरी की बात याद आई। परन्तु उसने कुछ कहा नहीं।

क्लीभलैण्ड से रेल पर जाना पडता था। जेम्स ने इसके पहले रेल कभी न देखी थी। उसको रेल देख कर बहुत आनन्द हुआ। रेल पर वे जाते जाते कोलम्बस पहुँचे। वहाँ पहुँच कर जेम्स ने राजदरबार और सरकारी विचारालय देखे। उन्हे देख कर उसका चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। वहाँ पर उसने यह भी सीखा कि राज्य-शासन किसे कहते हैं और राज्य का काम कैसे किया जाता है। उसने अपनी माता से एक दिन कहा—"मेरे परम भाग्य थे कि मैं तुम्हारे साथ आया, नहीं तो इन सब बातो को न देख पाता। एक महीना स्कूल पढाने से हमे जितना आनन्द मिलता उससे बहुत अधिक आनन्द इनके देखने से हमें मिला है।"

इन सब दृश्यो को देखते हुए माँ-बेटे दोनो जेनेसवेली पहुँचे। वहाँ से नाव भाडा करके वे मस्किगम पहुँचे। इनके कुटुम्बी इनको देख कर बहुत खुश हुए।

चार पाँच दिन तक बडे आनन्द मे समय बिताने के बाद जेम्स का चित्त काम करने के लिए व्याकुल हो उठा।

उसकी चची ने कहा—"तुम्हें यहाँ मास्टरी का काम मिल सकता है। तुम्हारे चचा आवे तो तुम्हे बतावेंगे कि कहाँ वह स्कूल है और किसके पास अर्जी भेजनी चाहिए।"

चचा ने जब पता बता दिया तब जेम्स ने एक अर्जी भेज दी। अर्जी मञ्जूर हो गई, और जेम्स ने २४) मासिक वेतन

वहीं वह अच्छी तरह झाड़ू नहीं दे सकता। जेम्स ने उन दोनों कामों को बड़ी सफाई से निबाहा।

एक दिन उसके एक साथी ने कहा —"तुम पढ़ने में जितना परिश्रम करते हो झाड़ू देने में भी उतना ही परिश्रम करते हो। इसका क्या कारण है? प्राय लड़कों का नियम होता है कि अच्छे काम में जितना परिश्रम करते हैं, नीच और भद्दे काम में उतना नहीं करते।"

जेम्स ने कहा —"तुम्हारे विचार बड़े भद्दे हैं। हर आदमी को चाहिए कि जिस काम को वह करे उसी को सफाई से करे, चाहे वह कितनाही भद्दा क्यों न हो। भद्दा हो लेकिन बुरा काम न हो, क्योंकि बुरा काम किसी को करना ही न चाहिए।"

उस साथी ने जेम्स की बात मान ली और अपनी हार स्वीकार की।

उस इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में बहुत से विद्यार्थी पढ़ा करते थे। उनमें एक स्त्री भी पढ़ती थी जिसका नाम मिस बूथ था। उसके साथ जेम्स की बड़ी प्रीति थी क्योंकि वह लिखने-पढ़ने में बड़ी तेज थी और जेम्स से किसी किसी विषय में अधिक जानती थी। जेम्स ने उस स्त्री से बहुत सहायता ली।

सभापति महाशय ने पूछा —"अच्छा, हमें इस बा
कैसे पता लगे कि तुम झाड़ू देने और घंटा बजाने
अच्छी तरह कर सकोगे ?"

जेम्स ने कहा —"मुझे आप दो हफ्ते
देख लीजिए। अगर मैं कर सकूँ तो वाह
चुपचाप यहां से चला जाऊँगा।"

जेम्स की बात पर सब लोग प्रसन्न हु
कर लिया गया।

"थोड़े ही दिनों में शिक्षकों और
गया कि जेम्स एक असाधारण लड़का

एक दिन उसने प्रिन्सिपल से
कृपा करके बता दीजिएगा कि मैं
मुझे अधिक लाभ हो ?"

प्रिन्सिपल ने कहा —"अभी
जाता है वही पढ़ो। दूसरे साल

सभापति महाशय ने पूछा —"अच्छा, हमें इस बात का कैसे पता लगे कि तुम झाड़ू देने और घंटा बजाने का काम अच्छी तरह कर सकोगे ?"

जेम्स ने कहा —"मुझे आप दो हफ्ते तक परीक्षा करके देख लीजिए। अगर मैं कर सकूँ तो वाह वाह और नहीं तो मैं चुपचाप यहां से चला जाऊँगा।"

जेम्स की बात पर सब लोग प्रसन्न हुए। वह स्कूल में भर्ती कर लिया गया।

"थोड़े ही दिनों में शिक्षकों और विद्यार्थियों को मालूम हो गया कि जेम्स एक असाधारण लड़का है।"

एक दिन उसने प्रिन्सिपल से कहा —"क्या आप मुझे कृपा करके बता दीजिएगा कि मैं कौन सा कोर्स पढ़ूँ, जिससे मुझे अधिक लाभ हो ?"

प्रिन्सिपल ने कहा —"अभी तो जो कोर्स स्कूल में पढ़ाया जाता है वही पढ़ो। दूसरे साल देखा जायगा कि कौन सा कोर्स तुम्हें दिया जाय।"

घंटा बजाने का काम किसी काहिल और सुस्त लड़के के लिए बहुत कठिन काम था क्योंकि उस काम में एक मिनट इधर उधर होने से सारे काम बिगड़ जाने की सम्भावना थी। झाड़ू देना भी कोई सहल काम नहीं है क्योंकि उसमें सफाई का ध्यान रहना चाहिए। जिस आदमी के चित्त में सफाई का ध्यान

नहीं वह अच्छी तरह झाड़ू नहीं दे सकता। जेम्स ने उन दोनो कामों को बड़ी सफाई से निबाहा।

एक दिन उसके एक साथी ने कहा —"तुम पढने में जितना परिश्रम करते हो झाड़ू देने में भी उतना ही परिश्रम करते हो। इसका क्या कारण है? प्राय लडको का नियम होता है कि अच्छे काम में जितना परिश्रम करते हैं, नीच और भद्दे काम में उतना नहीं करते।"

जेम्स ने कहा —"तुम्हारे विचार बडे भद्दे हैं। हर आदमी को चाहिए कि जिस काम को वह करे उसी को सफाई से करे, चाहे वह कितनाही भद्दा क्यो न हो। भद्दा हो लेकिन बुरा काम न हो, क्योंकि बुरा काम किसी को करना ही न चाहिए।"

उस साथी ने जेम्स की बात मान ली और अपनी हार स्वीकार की।

उस इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में बहुत से विद्यार्थी पढा करते थे। उनमें एक स्त्री भी पढती थी जिसका नाम मिस बूथ था। उसके साथ जेम्स की बडी प्रीति थी क्योंकि वह लिखने-पढने में बडी तेज थी और जेम्स से किसी किसी विषय में अधिक जानती थी। जेम्स ने उस स्त्री से बहुत सहायता ली।

एक साल तक दरवान का काम करने के बाद जेम्स की तरक्की हुई और वह उस विद्यालय का शिक्षक बनाया गया। वह इस स्कूल में किसी किसी दर्जे को पढाया करता और स्वयं भी

पढा करता था। उसी समय उपरिलिखित मिस बूथ से मित्रता हुई।

मिस बूथ पहले पहल जेम्स से दर्जे मे कुछ बढी हुई थी परन्तु थोडे दिनों में जेम्स उसके साथ होगया और दोनों साथ पढने लगे। दोनों एक दूसरे की सहायता पाते और पढने की उन्नति करते थे।

एक दिन प्रिन्सिपल साहब ने जेम्स को व्याख्यान लिखने के लिए कहा। आज्ञा पाते ही जेम्स तुरन्त मिस बूथ के कमरे में गया और कहने लगा—"मैं आपकी सहायता चाहता हूँ।"

मिस बूथ ने पूछा —"किस काम में सहायता माँगते हो? मैं देने को राजी हूँ।"

"एक व्याख्यान लिखने में।"

वह राजी हो गई। दोनों मिल कर उस व्याख्यान को लिखने बैठे। उस विषय का व्याख्यान बनाने और लिखने में दोनों इतने डूबे हुए थे कि उनको समय का कुछ भी ख्याल न था। लिखते लिखते सारी रात बीत गई। अन्त मे जब प्रातःकालीन सूर्य की किरणों की सुनहरी छटा कमरे के झरोखों से झांकने लगी तब दोनों चौक उठे और देखा तो सबेरा हो गया था। दोनों प्रातःक्रिया समाप्त करके फिर लिखने बैठे और लिखना समाप्त करने के बाद भोजन आदि किया।

जेम्स को अपने धर्म मे बहुत बडा अनुराग था। इस कारण हिराम के पादरी साहब जब कभी कोई व्याख्यान देते तभी

जेम्स को अपने पास बुला लेवे और कभी कभी उससे भी कोई कोई वक्तृता दिलाते थे ।

जब कभी पादरी महोदय गाँव में उपस्थित न रहते थे तब वे जेम्स ही को अपना आसन ग्रहण करने के लिए निमन्त्रण करते और जेम्स भी उस काम को बहुत अच्छी तरह निवाहता था । सुनने वाले बहुत प्रसन्न होते और पादरी साहब भी बहुत आनन्दित होते थे ।

एक दिन पादरी साहब उससे व्याख्यान दिलाने के लिए उसे गिर्जे में ले गये थे, और जिस समय पादरी साहब व्याख्यान दे रहे थे उसी समय कई आदमियों ने आकर जेम्स को पकड कर कहा —"आप कृपा करके हम लोगो की सभा मे एक राष्ट्रीय वक्तृता देने को चलिए क्योंकि आज वहाँ के व्याख्यान-दाताओं की चेष्टा निष्फल हो रही है और लोग असन्तुष्ट होकर उठ उठ कर चले जा रहे हैं ।"

बिना कुछ कहे जेम्स उठ खडा हुआ और उन लोगो के साथ चल दिया । जब कई सीढी उतर गया तब पादरी साहब ने देखा और कहा —"जेम्स, मत जाओ, लौट आओ ।" फिर क्या सोच कर उन्होंने श्रोताओ की ओर फिर कर कहा —"खैर उसको जाने दो । वह लडका अवश्य ही किसी न किसी दिन 'युनाईटेड स्टेट्स का प्रेसीडेन्ट' * होगा ।"

जेम्स जिस समय चेस्टर के गीग सेमिनेरी में पढता था

* युनाईटेड स्टेट्स के राजा को प्रेसीडेन्ट कहते हैं ।

उस समय एक लडकी वहाँ पढती थी जिसका नाम ल्युक्रिशिया रुडाल्फ था। वह वडी नेक और बुद्धिमती थी। लिखने-पढने मे भी वह वडी तेज थी। जेम्स उस लडकी की नम्रता, भद्रता और बुद्धिमत्ता की वडी प्रशसा किया करता था। जब जेम्स हिराम के विद्यालय में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का काम करता था उस समय उस लडकी के माता-पिता हिराम में आये थे जिसमे कि उस लडकी को अच्छी शिक्षा दे सके। ल्युक्रिशिया रुडाल्फ ने इसी इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में नाम लिखाया। जेम्स भी एक ऐसे तेज विद्यार्थी को पाकर बहुत ख़ुश हुआ। वह उसको लैटिन और ग्रीक पढाया करता था और उसको उसके पाठ में बहुत सहायता करता था। उस समय जेम्स यह न जानता था कि उससे और उस लडकी से गुरु-शिष्य का सम्बन्ध छोड कर और भी कोई सामारिक सम्बन्ध होगा या नहीं। परन्तु जब जेम्स ने स्कूल छोडा उस समय उस लडकी ने कहा —"जब तुम कालिज की पढाई समाप्त करके कोई नौकरी पाओगे तब मैं तुमसे विवाह करूँगी।"

गुणवती मिस ल्युक्रिशिया रुडाल्फ के अनुपम सौन्दर्य ने जेम्स के हृदय पर अधिकार जमा लिया। लोग इस अधिकार को असामयिक अधिकार समझ कर यह आशङ्का किया करते थे कि कदाचित् जेम्स के लिखने-पढने की यहीं इतिश्री न हो जाय। उनका ऐसा सोचना अनुचित न था क्योंकि प्राय देखने में आता है कि यदि छात्रावस्था में कोई विद्यार्थी प्रेम के

बन्धन मे बँध जाता है तो उसका लिखना-पढना चौपट हो जाता है, परन्तु जो लोग ऐसा सोचा करते थे उनको जेम्स की चित्त-वृत्ति और सकल्प-सिद्धि का पूरा पूरा हाल मालूम न था। प्रेम-शून्य-हृदय निर्जीव जड पदार्थ के तुल्य है। जेम्स के जड शरीर मे जब मिस रुडाल्फ की प्रेमरूपी जीवनी शक्ति पैठ गई तब उसका शून्य हृदय खिल गया और उसने अपनी जिम्मेदारी के भार को पूरी तौर से समझ लिया। उस जीवनी शक्ति के चकसने से जेम्स दिन पर दिन उन्नति करता रहा और दो ही वर्ष में कालिज का पाठ समाप्त कर लिया।

एक बार जून के महीने में जब स्कूल मे एक मही की छुट्टी हुई तब सब लडको ने मिल कर रुडाल्फ जाना चाहा जो कि २५ मील दूर था। जेम्स भी उनके साथ था। वह सब लडको को हँसाता खिलाता जाता था, और सभो को तरह तरह के क़िस्से, बडे लोगो की जीवनी और तरह तरह की कवितायें सुनाता हुआ मार्ग का परिश्रम दूर करता हुआ जाता था। इन सब कारणो से सब लोग उसको प्यार करते थे।

एक बार ऐसा हुआ कि क्लीभलैण्ड का रहने वाला एक वकील हिराम में आकर रहने लगा। बहुत दिनों तक वहाँ रहने से परिवार के लोगो से भेंट नहीं हुई थी। इस कारण घर के लिए उसका मन बहुत घबराया हुआ था। वह लिखता है—"जब मेरा जी बहुत घबराया हुआ था, उस समय मैं एक दिन इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट देखने के लिए गया। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि

एक जवान आदमी एक दर्जे मे बीजगणित पढा रहा था। वह मेरी शोचनीय अवस्था देख कर मेरे पास आया और मेरे कन्धे पर हाथ धर कर मेरा हाल पूछने लगा। मेरे कन्धे पर उसके हाथ रखते ही मेरी व्याकुलता दूर हो गई।"

इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट मे पढना समाप्त होने के बाद प्रिन्सिपल साहब ने एक दिन जेम्स से पूछा.—"क्या तुम बेथनी कालिज में पढोगे ?"

जेम्स ने कहा —"पहले हमारा यही विचार था, परन्तु अब मैं सोचता हूँ किसी और कालिज मे पढूँ।"

प्रिन्सिपल के कारण पूछने पर जेम्स ने कहा —"बेथनी कालिज की पढाई बहुत थोडी होती है।"

"तो तुम अधिक विद्या पढना चाहते हो ?"

जेम्स ने कहा —"बेथनी कालिज हमारी ही मण्डली के लोगो ने स्थापित किया है, और मैं चाहता हूँ कि अपनी मण्डली के बाहर क्या है, उसको भी सीखूँ और विद्या भी कुछ अधिक पढूँ और तीसरा कारण यह है कि बेथनी कालिज के लोग दासत्व के बडे पक्षपाती हैं। इन्हो तीन कारणो से मैं चाहता हूँ कि न्यू इँगलैण्ड के किसी कालिज मे पढूँ।"

"तुमने न्यू इँगलैण्ड के किस कालिज में पढने का विचार किया है ?"

"मैंने अभी ठीक तौर से स्थिर नहीं किया कि किस कालिज में पढूँगा, परन्तु मैं वहाँ के तीन बडे बडे कालिजों को लिखनेवाला

हूँ । वहाँ से जवाब मिलने पर मैं बता सकता हूँ कि मैं किस कालिज में पढ़ूँगा और कितने दिन मुझे पढना पडेगा ।"

जेम्स ने तीनो कालेजो के प्रिन्सिपलों को चिट्ठी लिख दी ।

थोडे दिनों मे सब कालिजों से जवाब आ गया । सब लोग उसे अपने यहाँ लेने को राजी थे और सभी की यही राय थी कि दो वर्ष में वह कालिज की पढाई समाप्त कर लेगा । विलियम कालिज के प्रिन्सिपल, डाकृर हापकिन्स ने जेम्स को लिखा था —"तुम यहाँ आओ और तब मैं तुम्हारे लिए जो कुछ कर सकता हूँ, करूँगा ।"

जेम्स उस चिट्ठी को पढ कर बहुत खुश हुआ और उसने विलियम्स कालिज ही जाने का विचार किया ।

विलियम्स कालिज जाने के दो तीन हफ्ते पहले जेम्स के भाई ने उससे पूछा —"तुमने विलियम्स कालिज में पढने के लिए रुपये का क्या बन्दोबस्त किया है ?"

जेम्स ने कहा —"रुपये का कुछ बन्दोबस्त तो नहीं किया है, परन्तु मैंने सोचा है कि वहाँ भी कोई काम करूँगा और उस काम को करके जो रुपया कमाऊँगा उसीसे अपने पढने का खर्च चलाऊँगा ।"

उसके भाई ने कहा —"तुम्हें वहाँ काम करने की फुरसत न मिलेगी ।"

जेम्स ने कहा —"स्कूल में पढाने का काम करके हो चाहे बढ़ई का काम करके हो, जैसे हो, मैं जरूर रुपया कमाऊँगा ।"

भाई ने कहा—"तुम मुझसे कुछ रुपया उधार लो, और उनसे अपने पढने का खर्चा चलाओ।"

"उधार लेना तो बडी बात नहीं है, परन्तु चुकाऊँगा कैसे और कब ?"

"जब तुमसे देते बने तभी दे देना।"

जेम्स ने कहा.—"यदि देने के पहले मैं मर जाऊँ तो क्या होगा।"

"वह नुक़सान तो मेरा होगा।"

"नहीं मेरे लिए तुम्हारा नुकसान क्यो हो। परन्तु यदि तुम मुझे रुपया दिया ही चाहते हो तो मैं एक उपाय कर सकता हूँ। मैं हजार रुपये का अपना जीवन-बीमा करा लूँ। अगर मैं मर जाऊँ तो वह रुपया तुम्हें मिल जायगा और यदि जीवित रहा तो मैं स्वय ही तुम्हारा रुपया अदा कर दूँगा।"

इस बात पर भाई राजी हो गया और जेम्स ने अपना जीवन-बीमा १०००) का करा लिया।

बीसवाँ परिच्छेद

विलियम्स कालेज में गर्मी की छुट्टी समाप्त हो चुकी थी और कालिज खुलने पर नये लड़के भरती किये जा रहे थे। जेम्स भी ठीक समय पर वहाँ पहुँचा और डाक्टर हापकिन्स से मिला और अपना नाम-धाम बताया।

यह कहा जा चुका है कि जेम्स गारफील्ड बहुत ही सादी चाल-ढाल से रहता था। पढ़ने-लिखने के सामने उसको अपने खाने-पीने और कपड़े-लत्ते का किसी प्रकार का भी शौक़ न था। जब वह जेम्स हापकिन्स से मिलने गया तब भी वह वही साधारण फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था। उसके बलिष्ठ शरीर, गँवारों का सा चेहरा और फटे-पुराने कपड़ों को देख कर प्रेसी-डेंट साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे अपने मन में कहने लगे कि "जिसकी भाषा में इतना माधुर्य, इतना लालित्य है उसकी बाहरी बनावट कुछ भी नहीं।"

जेम्स ने अपनी भरती के लिए जो पत्र प्रेसीडेंट साहब को लिखा वह अत्यन्त सुललित भाषा में लिखा गया था। उसको पढ़ कर प्रेसीडेंट साहब का चित्त आकर्षित हो गया था और

इसी कारण उन्होंने लिखा "कि यदि तुम यहाँ आओ तो जो कुछ मैं तुम्हारे लिए कर सकता हूँ ख़ुशी से करूँगा ।" फिर प्रेसीडेंट साहब ने सोचा कि यह लड़का शौकीनी करने मे उतना समय नहीं विताता जितना कि वह अपने लिखने-पढने में विताता है ।"

उस समय विद्यार्थियो को भरती करने के लिए परीक्षायें हो रही थीं । जेम्स की भी परीक्षा ली गई । उसने उस परीक्षा को बहुत अच्छी तरह पास किया और वह कालिज में भरती कर लिया गया। उसको जूनियर क्लास के विद्यार्थियों के साथ पढना पडा । अमरीका के कालेजो में चार वर्ष पढाई होती है। तीसरे वर्ष का नाम जूनियर क्लास और चौथे या अन्तिम वर्ष का नाम सीनियर क्लास था। सीनियर क्लास पास करने से ग्रेजुएट (Graduate) की पदवी मिलती है। जेम्स इसी पदवी को प्राप्त करने के लिए वहाँ गया था।

उस कालेज में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था । डाक्टर हाप किन्स ने एक दिन जेम्स से कहा —"यदि गर्मियो की छुट्टी में तुम अपने घर या और कहीं न जाओ तो तुम्हारे लिए यह पुस्तकालय खुला रहेगा और जो पुस्तक तुम्हारा जी चाहे पढ सकते हो । सिर्फ़ यही नहीं बल्कि कालेज खुले रहने पर भी जो पुस्तक चाहो तुम पढ सकते हो ।"

उस समय जेम्स को अपना ख़र्चा चलाने के लिए रुपयों की चिन्ता न करनी पडती थी, क्योंकि उसके ख़र्च के लिए

उसका भाई उसे रुपये दिया करता था । इस कारण गर्मियो की छुट्टियो में उसने खूब जी लगा कर पढा ।

बहुत दिन से उसकी इच्छा थी कि वह शेक्सपियर के सारे ग्रन्थ पढजाय परन्तु अवसर न मिलने के कारण उसकी इच्छा मन ही मन मे रह गई थी । यहाँ कालेज के पुस्तकालय में उसने शेक्सपियर के कुल ग्रन्थो को अच्छी तरह पढ लिया । उन ग्रन्थों को उसने कई बार पढा और बडे ध्यान से पढा । यहाँ तक कि उसकी बहुत सी कवितायें उसने कण्ठ कर ली थीं । जब तब वह उन्हे दोहराता और अपने साथियो को खुश करता था ।

यहाँ जेम्स को बढई या खेती का काम न करना पडा । इस कारण उसे और किसी प्रकार के व्यायाम की आवश्यकता हुई । सामने ही एक बहुत ऊँचा पहाड आकाश की ओर सिर उठाये हुए खडा था । पहाड के ऊपर जङ्गल और जङ्गलों के बीच में कहीं कहीं झरने भी थे । उन्हीं की शोभा देखने के लिए जेम्स शाम के वक्त वहाँ जाया करता और पहाड की उतराई चढाई पर निर्मल स्वच्छ वायु का सेवन किया करता था ।

जेम्स के भरती होने के थोडे दिन बाद दो विद्यार्थी उसके विषय में आलोचना कर रहे थे । एक ने कहा —"मैं देखता हूँ कि जेम्स बहुत होशियार लडका है, वह कभी किसी विषय को बिना समझे छोडता नहीं और कभी किसी प्रश्न का उत्तर देने में चूकता नहीं ।"

दूसरे ने कहा:—"उसका कारण यह है कि वह प्रत्येक विषय को अच्छा तरह जानता है। एक बार उसने मुझे बताया था कि कैसे वह अपने पाठो को पढा करता है। यदि कभी किसी विषय को वह समझता नहीं तो वह उसमें पिल जाता है और बिना समझे उसे नहीं छोडता। उसका नतीजा यह है कि आज वह हमारे कालिज में सबसे ज्यादा पढा हुआ लडका है।

"हाँ, तुम ठीक कहते हो। सनीचर के दिन उसकी बहस सुन कर सबको मालूम होगया था कि वह बहुत पढा हुआ लडका है।"

"वह बहस भी खूब कर सकता है और वक्तृता भी अच्छी दे सकता है। ऐसा मालूम होता है कि वह जन्म ही से वक्ता है। मैं तुमसे उसके विषय मे भविष्यवाणी कह सकता हूँ कि थोडे ही दिनो मे वह इस कालेज के सब विद्यार्थियो से बढ जायगा और सबका शिरोभूषण बन बैठेगा।"

उन लडको का विचार ठीक ही निकला। क्योंकि २५ वर्ष के बाद उसके एक साथी ने लिखा है कि "एक क्लास जिसमें प्राय ४० विद्यार्थी पढा करते थे उसमे वह तुरन्त सभी से हर विषय में आगे बढ गया और विशेषत लिखने, बोलने और बहस करने में कोई उसकी बराबरी न कर सकता था। उसमें विशेष गुण यह था कि प्रत्येक विषय के गूढ तत्त्वों का वह अनुसन्धान किया करता था और उन से एक नया मतलब निकाला करता था जो मतलब साधारण लिखने-पढने वाले नहीं

निकाल सकते। इस कारण उसके लेख सब विचारयुक्त और ज्ञानपूर्ण हुआ करते थे। उसमे एक गुण यह भी था कि यद्यपि वह इतना पढता था परन्तु तो भी वह पुस्तको का कीडा नहीं बना रहता। बल्कि वह बडा मिलनसार, प्रफुल्ल-चित्त और आमोदप्रिय लडका था। उसकी बातों में ऐसी मोहनी शक्ति थी कि जब कभी वह किसी से बाते करता तब उसका मन मोह लेता और वह उसका साथ न छोड सकता था।"

जेम्स ने हिराम में लिखने-पढने मे बहुत परिश्रम किया। उसका फल यह हुआ कि उसने ६ वर्ष की पढाई तीन ही वर्ष में समाप्त कर ली। यहाँ कालेज मे भी आकर उसने परिश्रम करना शुरू किया। उसने यहाँ जर्मन भाषा सीखी और साल भर में इतनी सीख ली कि वह उस भाषा मे अच्छी तरह बात-चीत करने लगा।

जब कालेज में छुट्टी हुई तब उसके एक साथी ने उससे एक दिन पूछा —"जेम्स, तुम अब की छुट्टी मे क्या करोगे?"

जेम्स ने कहा —"मैंने अभी कुछ स्थिर नहीं किया है कि क्या करूँगा, परन्तु मैं सोचता हूँ कि लिखना सिखाने की एक क्लास जारी करूँ। तुम्हारी क्या राय है? यहाँ यह काम चलेगा?"

उस मित्र ने कहा —" अवश्य ही चलेगा। तुम इस बात का चारो ओर प्रचार कर दो। लडके आप से आप आ जायँगे।"

जेम्स ने वैसा ही किया और लिखना सिखाने की एक क्लास खोल दी। इस काम के करने से उसकी छुट्टी भी अच्छी तरह बीती और कुछ रुपये भी उसको मिल गये।

कालिज से ६ मील दूर एक गिर्जा था जहाँ के पादरी साहब जेम्स का धर्मानुराग देख कर उससे बहुत प्रसन्न थे। एक बार सैबेथ के दिन उन्होंने जेम्स को अपना आसन ग्रहण करने को दिया और उस दिन जेम्स ही से वक्तृता दिलाने का अनुरोध किया। जेम्स ने स्वीकार कर लिया और अपने उसी मधुर कण्ठ स्वर और सुललित भाषा में उसने व्याख्यान दिया। लोग सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने फिर उससे व्याख्यान देने के लिए प्रार्थना की।

वहाँ के स्कूलों के बहुत से शिक्षकों और प्रतिनिधियों से जेम्स की जान-पहचान हो गई थी। एक बार मिस्टर ब्रुक्स ने, जो कि वहाँ के किसी सर्कारी स्कूल के प्रतिनिधि थे, जेम्स से कहा —"क्या तुम हमारे स्कूल में नौकरी करोगे? हम तुम्हें चार सौ रुपये देंगे?"

जेम्स ने कहा —"नौकरी करने से हमें कालिज छोड़ना पड़ेगा।"

उन्होंने कहा —"कालेज तो तुम्हें जरूर ही छोड़ना होगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि यह काम तुम्हारे लिए अच्छा होगा।"

जेम्स ने कहा —"आपकी नौकरी करने के लिए मुझे लोभ तो अवश्य ही होता है क्योंकि उस नौकरी के करने से मैं अपना सारा ऋण एकदम चुका सकता हूँ परन्तु ऐसा करने से हमारे जीवन का उद्देश सफल न होगा। मैं यहाँ ग्रेजुएट बनने के लिए आया हूँ। वह काम असम्पूर्ण रह जायगा। यह ठीक नहीं, और फिर इसके सिवा एक बात यह है कि मैंने हिराम छोड़ते समय वहाँ के कर्त्ताओं से कहा था कि कालिज का पाठ समाप्त करने के बाद मैं आपही के स्कूल में लौट आऊँगा और वहाँ पढ़ाऊँगा। मैं जानता हूँ कि मुझे वहाँ इतने रुपये न मिलेंगे जितने कि आप देते हैं तथापि मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। उसका कारण यह है कि एक तो मैंने वहाँ जाने की प्रतिज्ञा की है और दूसरे यह कि वह एक नया स्कूल है। उसकी उन्नति कराना हमारा धर्म है क्योंकि वहाँ से हमने बहुत कुछ सीखा है"।

मिस्टर ब्रुक्स ने कहा —"खैर, आप इस बात को सोचिएगा और तब मुझे इसका जवाब दीजिएगा। जल्दी की कोई जरूरत नहीं है।"

जेम्स ने कहा —"मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आप मेरी अवस्था पर इतनी सहानुभूति रखते हैं और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपका स्कूल खूब उन्नति करे। परन्तु बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मैं आपके स्कूल में इस

जेम्स ने वैसा ही किया और लिखना सिखाने की एक क्लास खोल दी। इस काम के करने से उसकी छुट्टी भी अच्छा तरह बीती और कुछ रुपये भी उसको मिल गये।

कालिज से ६ मील दूर एक गिर्जा था जहाँ के पादरी साहब जेम्स का धर्मानुराग देख कर उससे बहुत प्रसन्न थे। एक बार सैबेथ के दिन उन्होंने जेम्स को अपना आसन ग्रहण करने को दिया और उस दिन जेम्स ही से वक्तृता दिलाने का अनुरोध किया। जेम्स ने स्वीकार कर लिया और अपने उसी मधुर कण्ठ स्वर और सुललित भाषा में उसने व्याख्यान दिया। लोग सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने फिर उससे व्याख्यान देने के लिए प्रार्थना की।

वहाँ के स्कूलों के बहुत से शिक्षकों और प्रतिनिधियों से जेम्स की जान-पहचान हो गई थी। एक बार मिस्टर ब्रुक्स ने, जो कि वहाँ के किसी सर्कारी स्कूल के प्रतिनिधि थे, जेम्स से कहा —"क्या तुम हमारे स्कूल में नौकरी करोगे? हम तुम्हे चार सौ रुपये देंगे?"

जेम्स ने कहा —"नौकरी करने से हमें कालिज छोड़ना पड़ेगा।"

उन्होंने कहा —"कालेज तो तुम्हें जरूर ही छोड़ना होगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि यह काम तुम्हारे लिए अच्छा होगा।"

जेम्स ने कहा —"आपकी नौकरी करने के लिए मुझे लोभ तो अवश्य ही होता है क्योंकि उस नौकरी के करने से मैं अपना सारा ऋण एकदम चुका सकता हूँ परन्तु ऐसा करने से हमारे जीवन का उद्देश सफल न होगा। मैं यहाँ ग्रेजुएट बनने के लिए आया हूँ। वह काम असम्पूर्ण रह जायगा। यह ठीक नहीं, और फिर इसके सिवा एक बात यह है कि मैंने हिराम छोड़ते समय वहाँ के कर्त्ताओं से कहा था कि कालिज का पाठ समाप्त करने के बाद मैं आपही के स्कूल में लौट आऊँगा और वहाँ पढ़ाऊँगा । मैं जानता हूँ कि मुझे वहाँ इतने रुपये न मिलेंगे जितने कि आप देते हैं तथापि मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। उसका कारण यह है कि एक तो मैंने वहाँ जाने की प्रतिज्ञा की है और दूसरे यह कि वह एक नया स्कूल है। उसकी उन्नति कराना हमारा धर्म है क्योंकि वहाँ से हमने बहुत कुछ सीखा है"।

मिस्टर ब्रुक्स ने कहा —"ख़ैर, आप इस बात को सोचिएगा और तब मुझे इसका जवाब दीजिएगा। जल्दी की कोई जरूरत नहीं है ।"

जेम्स ने कहा —"मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आप मेरी अवस्था पर इतनी सहानुभूति रखते हैं और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपका स्कूल खूब उन्नति करे। परन्तु मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मैं आपके स्कूल में इस

समय नहीं पढा सकता। मैंने स्थिर कर लिया है। मुझे क्षमा कीजिए।"

उस समय जेम्स का भाई जिसने उसको रुपया उधार देने की प्रतिज्ञा की थी वह कुछ विपत्ति मे पडने के कारण रुपया न दे सकता था, और उसके ऊपर ऋण भी बहुत चढ गया था इसलिए ऐसी अवस्था में उस नौकरी को स्वीकार न करने में उसने बडी वीरता दिखाई क्योंकि नौकरी कर लेने से उसको रुपया तो मिल जाता परन्तु उद्देश सिद्ध न होता,

हम लोग जानते हैं कि जेम्स के पास कपडे-लत्ते बहुत थोडे थे और वे भी सब फटे हुए थे। अब उसको एक कोट और पतलून की बडी जरूरत हुई। लेकिन उसके पास रुपया न था कि उससे कोट-पतलून बनवाये। इस कारण उसके एक मित्र ने एक दिन एक दर्जी से कहा —"मिस्टर हेसकेल,हमारे कालेज में एक बहुत गरीब लडका है। वह बडा तेज लडका है और बहुत ईमानदार है। लेकिन उसके पास कपडे-लत्ते कुछ भी नहीं हैं। क्या तुम उसकी कुछ सहायता कर सकते हो ?"

दर्जी ने कहा —"मैं जरूर उसके लिए कपडे बना दूँगा। आप उसे मेरे पास भेज दीजिएगा।"

दूसरे दिन जेम्स दर्जी से मिलने गया और अपना सारा हाल कह सुनाया। और कहा.—"आप यदि मेरा कपडा बना दें तो मैं आपका दाम जितना जल्दी हो सके चुका दूँगा। परन्तु मैं ठीक ठीक नहीं कह सकता कि कब दूँगा।"

दर्जी बड़ा नेक आदमी था। उसने कहा—"इसके लिए आप कुछ चिन्ता न कीजिए। जब आपके पास रुपया हो और जब आपको कोई दूसरा खर्चा करने की जरूरत न हो उस वक्त मुझे दीजिएगा।"

दर्जी ने कोट-पतलून तैयार कर दिया।

कालेज में छुट्टी हो गई। एक वर्ष बाद, वह अपनी माता से मिलने के लिए घर गया। माता-पुत्र का मेल कैसा हुआ, पाठक महाशय स्वय ही अपने अपने विचारानुसार इसका निर्णय कर लें, क्योंकि भाषा में इतनी शक्ति नहीं है कि उस भेंट का दृश्य वर्णन करे। छुट्टियों के बाद जब जेम्स फिर कालेज लौट आया तब उसने देखा कि ऋण के भार से वह चारों ओर से लदा हुआ है और रुपया मिलने का कोई उपाय नहीं देख पड़ता। ऐसी दशा में उसको उस डाकूर राबिनसन का खयाल आया जिसने उसको इमतिहान करके बताया था कि तुम खूब पढो और खूब काम करो। याद आने पर उसने उनको एक पत्र लिखा ताकि वे कुछ रुपये दे। उसने यह भी पत्र में लिख दिया था कि उसने १०००) रुपये का जीवनबीमा किया है और कालेज से निकलने पर हिराम में नौकरी मिलने की आशा है क्योंकि उन लोगो ने वादा किया है। इसके लिखने का मतलब यह था कि यदि डाकूर राबिनसन रुपया दे तो उनको मालूम हो जाय कि उनका रुपया मारा न जायगा।

डाकृर राविनसन ने चिट्ठी पाते ही जेम्स को कुछ रुपया भेज दिया।

रुपया पाते ही उसने अपना सब ऋण चुका दिया और बाकी रुपया अपने खर्चे के लिए रख लिया।

ठीक उसी समय पारलियामेण्ट महासभा में दासत्व के विरुद्ध बडे जोर-शोर से तर्क-वितर्क हो रहा था और बडे बडे लेख लिखे जाते थे। मिस्टर चार्ल्स समर इस हलचल के नेता थे। वे पारलियामेण्ट और खुले मैदानों में इसी विषय पर व्याख्यान दिया करते थे जिससे दासत्व की प्रथा इस देश से उठ जाय। मिस्टर प्रेस्टनब्रुक इस खयाल के बडे विरोधी थे। वे चाहते थे कि दासत्व-प्रथा बनी रहे। इस कारण वे मिस्टर चार्ल्स पर बहुत घृणा रखते थे। जिस समय, मिस्टर चार्ल्स समर की वक्तृताओं का जोश देश मे चारो, ओर फैला हुआ था उस समय मिस्टर ब्रुक्स ने चाहा कि मिस्टर चार्ल्स समर को किसी तरह मार डाले। इस कारण एक दिन जब मिस्टर चार्ल्स समर पारलियामेण्ट मे बैठे हुए कुछ लिख रहे थे उसी समय ब्रुक्स ने उन्हे एक ढेला फेंक कर मारा इस खयाल से कि उन्हें एक दम मार ही डाले। उसका मनोरथ पूरा भी हो जाता, लेकिन ईश्वर ने बचा दिया।

जब यह खबर विलियम्स कालिज मे पहुँची तब वहाँ के विद्यार्थी मारे गुस्से के आगबबूला हो गये। विद्यार्थियो ने

मिल कर सभा की जिसमे जेम्स वक्ता नियत किया गया । जेम्स ने मिस्टर ब्रुक्स की नीचता पर ऐसी जोर-शोर और कडाके की वक्तृता दी कि उसकी क्लास के विद्यार्थी, अध्यापकगण और श्रोतागण सबके सब दङ्ग हो गये और जब तक यह वक्तृता दे रहा था तब तक सब लोग सन मारे बैठे हुए थे । किसी ने एक बात तक मुँह से नहीं निकाली । अन्त मे जब उसकी वक्तृता समाप्त हुई तब लोगो ने चारो ओर से उसके ऊपर फूल-माला फेंकी और हर्ष-ध्वनि से समस्त मैदान, जगल, पेड-पौधे कँपा दिये । कितने लोगों ने कितनी भविष्य वाणियाँ कीं । बहुत से लोगो ने उसे आशीर्वाद दिया ।

जेम्स ने सन् १८५६ में ग्रेजुएट की पदवी प्राप्त की । उसने उस परीक्षा को बडी प्रतिष्ठा के साथ पास किया । कालेज के प्रारम्भ में डाक्टर हापकिन्स ने एक पारितोषिक नियत किया था जिसको उन्होंने सब से अच्छे लडके को देने का वादा किया था । जेम्स ने उस पारितोषिक को भी प्राप्त किया ।

डाक्टर हापकिन्स ने जेम्स के ग्रेजुएट होने के आठ वर्ष बाद उसके विषय में यह लिखा था—"जनरल गारफील्ड की उन्नति ऐसी अनोखी हुई है कि प्रत्येक लडके को उसकी बराबरी की कोशिश करनी चाहिए । उसकी उन्नति सरकारी और फौजी काम मे इतनी तेज हुई है कि आज तक हमारे मुल्क मे किसी की नहीं हुई । सब विद्याये उसने अपने ही परिश्रम से

प्राप्त की थीं, किसी से कुछ भी सहायता नहीं ली। उसमें धर्म का पूर्ण अनुराग था और वह अपने काम और ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह समझता था। वह सचा, साफ, बहादुर और मिलनसार प्रकृति का था।"

इक्कीसवाँ परिच्छेद



म्स अपने कालेज की पढाई समाप्त करने के बाद हिराम लौट आये। उसके आने के पहले ही वहाँ के कर्त्ताओं ने उसको "पुरानी भाषाओं और साहित्य" का शिक्षक चुन रक्खा था। उनके आते ही हिराम के अध्यापकों और कार्य-कर्त्ताओं ने बड़ा आनन्द प्रकट किया और बड़े आदर से उनका सत्कार किया। जेम्स महाशय भी अपने पुराने स्कूल में शिक्षक की पदवी पाकर लौट आने से कुछ कम आनन्दित नहीं हुए। उन्होंने एक दिन अपने एक मित्र से कहा —"मेरी सब आशायें पूरी हो गईं। मैंने न्यू इँगलैंड के कालेज से ग्रेजुएट का डिप्लोमा प्राप्त किया है और अब मैं यहाँ शिक्षक की पदवी पर नियुक्त हूँ। अब मैं चाहता हूँ कि अपनी सारी मुस्तैदी इसी काम में लगा दूँ।

वे नहीं चाहते थे कि इस स्कूल को छोड़ कर वे कहीं भी जायँ, चाहे कहीं उनको कितना ही रुपया क्यों न मिले, परन्तु उनको यहाँ वार्षिक १६००) रुपयों पर ही सन्तोष था।

विलियम्स कालेज के प्रेसीडेंट डाक्टर हापकिन्स इनके गुरु थे। उनकी वे बहुत प्रतिष्ठा और भक्ति किया करते थे, क्योंकि

एक तो यह इनके गुरु थे, दूसरे बहुत बडे विद्वान् थे। विलियम्स कालिज से लौट आने पर इनकी गुरु-भक्ति कुछ कम नहीं हुई थी। उनके उपदेशो से उन्होंने बहुत लाभ उठाया और उन्हीं के उपदेशो के अनुसार काम करने से इन्होंने भी अपने परिश्रमो का फल बहुत अच्छा पाया।

मिस्टर गारफ़ील्ड ने अपने काम-काज में हिराम-विद्यालय के कार्य-कर्त्ताओ को इतना सन्तुष्ट किया कि एक वर्ष बाद इन लोगो ने मिल कर इन्हें "Chairman of the Board of Instructors" अर्थात् शिक्षक-मण्डली का सभापति नियत किया, और दूसरे साल के अन्त में इनको प्रधान अध्यापक (Principal) बना दिया।

ओहिओ और पेनसिलवेनिया नहर को छोडे हुए ११ वर्ष बीते थे जब कि वे इतने बडे इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट के प्रधान अध्यापक बनाये गये। इन्हीं ११ वर्षों में उन्होंने बहुत कष्ट उठाये, बहुत परिश्रम किया और अन्त मे इतनी सफलता-लाभ की कि अन्य मनुष्यो के इतिहास मे कम देख पडती है।

इनमें एक बहुत बडा गुण यह था कि यह जहीन और तेज लडको को चुना करते थे और पढाने की कोशिश किया करते थे। कभी कभी ऐसा होता है कि जहीन लडको के माता-पिता ग़रीब होने के कारण अपने लडको का लिखना पढ़ना बन्द करा देते हैं। यह उन लोगो को अपनी युक्ति और कौशल द्वारा समझा देते थे कि लडको का लिखना-पढना बन्द न करावें।

यदि मिस्टर गारफील्ड इतना परिश्रम न करते तो आज कल के बहुत से विद्वानों का नाम तक हम लोग न सुन पाते। प्रेसीडेंट हिन्सडेल जो कि वर्तमान समय में इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट के सभापति हैं वे इस उच्च पदवी को प्राप्त न किये होते यदि मिस्टर गारफील्ड ने इनको पढाने का यत्न न किया होता।

मिस्टर गारफील्ड स्वयं लिखते हैं कि "ऐसे लडकों को पकडने में मुझे बडा आनन्द मिलता था और यद्यपि उन लडकों में से किसी किसी को ऐसे पकडे जाने पर पहले पहल बडा दुःख होता, परन्तु अन्त में उनके आनन्द की अवधि न रहती थी। विशेषतः दो लडकों के पकडने का हाल मुझे अच्छी तरह याद है। उन दो लडकों में से एक लडका वसन्त ऋतु में स्कूल बन्द होने पर मेरे पास आया और चुप-चाप इधर उधर घूमता रहा। मैंने समझा कि वह कुछ कहा चाहता है, इस कारण मैंने उसको बुला कर पूछा—"हेनरी, तुम स्कूल खुलने पर यहाँ आओगे न ?"

"उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। थोडी देर बाद जब मैंने अपनी गर्दन उठा कर देखा तब क्या देखता हूँ कि उसकी आँखों से आंसू टपक रहे हैं। यह दृश्य देख कर मुझे बडा दुःख हुआ। मैंने उसे पास बुला कर पूछा—"हेनरी, तुम रोते क्यों हो ? तुम्हारे रोने का क्या कारण है ? मुझे बताओ।" लडके ने रोते रोते जवाब दिया कि "मैं स्कूल खुलने पर न आऊँगा

क्योंकि हमारे पिता अब हमसे खेती का काम करावेंगे। वे कहते हैं कि तुम्हारा पढना बहुत हो चुका।"

"वह एक बहुत तेज लडका था। मैंने उससे पूछा—"तुम्हारे पिता यहीं हैं ?" उसने कहा—"जी हाँ, यहीं हैं। कल यहाँ से चले जायँगे।" मैंने उससे कहा—"तुम अपने पिता को मेरा सलाम दो और उनसे कहो कि मिस्टर गारफील्ड आपसे मिलना चाहते हैं। उनसे यह न कहना कि तुम्हारे विषय में मैं उनसे कुछ कहूँगा, बल्कि उनसे ऐसा कहो कि आप से केवल मिलना चाहते हैं।"

लडके ने अपने बाप से जाकर कहा और आधे घंटे ही में वे मुझसे मिलने को आगये। मैंने समझा कि हेनरी का पढना बन्द करने का कारण यह है कि उनके पास रुपया नहीं है और वे इसकी मदद से रुपया कमाया चाहते हैं। इस कारण मैंने उनसे कहा—"आप हेनरी का पढना क्यो बन्द कराते हैं ? देखिए, यदि आप उसको यहाँ से ले जाइए और उससे खेत जोतने बोने का काम लीजिए तो वह कितना कमा सकता है—बहुत कम। इससे अच्छा तो यह होता कि आप उसे यहीं छोड जाते और यह जाड़ों मे यहाँ स्कूल में पढाता और खुद भी पढता। पढाने से उसको जो रुपया मिलेगा उससे वह अपना भी खर्चा चला सकता है और आपको भी कुछ दे सकता है।"

"इस बात को सुन कर हेनरी के पिता बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा —"अच्छा, मैं इस विषय को सोचूँगा। उस बातचीत का फल यह हुआ कि हेनरी वहाँ भेजा गया और उसने पढना आरम्भ किया। जाडों में वह स्कूल में पढाया भी करता था। इस तरह पढते पढाते उसने न्यू इंगलैण्ड कालेज के ग्रेजुएट का डिप्लोमा प्राप्त कर लिया।"

"दूसरे एक लडके ने इसी तरह अपने घर से हमें पत्र लिखा कि हमारे पिता अब हमारा पढना बन्द कराया चाहते हैं। मैं जानता था कि उस लडके के पिता बडे धार्मिक पुरुष थे और धर्म-सम्बन्धी विषयों पर बहुत ध्यान दिया करते थे। इस कारण मैंने उस लडके को एक पत्र लिख भेजा कि तुम यहाँ के गिर्जे में उपदेशक नियत किये गये हो। उस पत्र के पाते ही उसके बाप ने तुरन्त लडके को छोड दिया। लडका यहाँ के गिर्जे में उपदेश भी दिया करता और अपना पाठ भी पढ़ा करता था। अन्त में उसने भी न्यू इगलैण्ड कालेज से ग्रेजुएट की पदवी प्राप्त की और तब पढना समाप्त किया।"

मिस्टर गारफील्ड अपने विद्यार्थियो से कैसा व्यवहार करते थे इसका भी थोडा सा वृत्तान्त सुनिए।

एक बार एक विद्यार्थी ने दर्जे में कुछ गल्ती की। मिस्टर गारफील्ड ने उस लडके को ऐसे एक स्थान में खडा कर दिया जहाँ की जमीन पानी गिरने से भीगी हुई थी और बहुत मैली थी। इसको देख कर लडके हँस पडे और वे भी मुसकराये।

ऐसा करने से लडके को बडी लज्जा हुई और तब से वह सचेत हो गया ।

एक बार उन्होंने दर्जे के एक लड़के को कुछ काम करने के लिए कहा। उस लडके ने उत्तर दिया —"यह काम बहुत कठिन है । मैं उसे न कर सकूँगा ।"

मिस्टर गारफील्ड ने कहा.—"बडी लज्जा की बात है। जो तुम कहते हो कि तुम उस काम को न कर सकोगे। मुझे आज तक कोई काम कठिन मालूम ही नहीं हुआ, और जब कोई काम कठिन मालूम हुआ तभी मैंने उसे बिना किये कभी न छोडा ।"

सत्य है, यही साहस जेम्स की उन्नति का मूल है।

एक बार मिस्टर गारफील्ड पडोस मे कहीं एक वक्तृता देकर लौट रहे थे। इस कारण स्कूल पहुँचने में कुछ देर होगई थी। अतएव उनके दर्जे मे एक दूसरे शिक्षक पढा रहे थे। जब वे दर्जे के पास पहुँचे तब देखा कि शिक्षक महाशय ने किसी विद्यार्थी से कोई प्रश्न पूछा है। जैसे ही उस लडके का उत्तर समाप्त हुआ उसी समय तुरन्त मिस्टर गारफील्ड ने उसी प्रश्न के लगाव में एक और प्रश्न उससे पूछा जिससे यह मालूम होता था कि पहला प्रश्न भी मानो उन्हीं ने पूछा था। इस चतुराई को देख कर सब हँस पडे ।

मिस्टर गारफील्ड प्राय अपने विद्यार्थियों को नये नये

विषयो पर व्याख्यान सुनाया करते थे। एक दिन वे मनुष्य-जीवन के परिवर्तन के विषय में व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा —"तुम लोग जानते हो कि पोरटेज कौन्टी की राजधानी रैवेना में है। उस रैवेना की कचहरी की छत पर की कन्धी ऐसे मौके पर है कि बर्सात का पानी जो उस पर गिरता है उसकी जो बूंद कन्धी के दक्खिन ओर गिरती है वह गल्फ आफ मेकसिको में जाता है और जो बूँद कन्धी के उत्तर ओर गिरती है वह गल्फ आफ सेन्ट लारेन्स में जाता है। देखो, जो बूँद दक्खिन की ओर जारही हो उसमें यदि हवा का एक थपेडा लग जाय तो उत्तर की ओर चला जायगा और इस कारण वह गल्फ आफ मेकसिको में न गिर कर गल्फ आफ सेन्ट लारेन्स में गिरेगा। इसी तरह मनुष्य के भाग्य का नियम है। किसी जगह एक थोडे से उसकाने से उसका भाग्य बहुत अच्छा हो जा सकता है, और न उसकाने से कदाचित् उसका भाग्य ऐसे कठोर नरक की यन्त्रणा भोग करता है जिसका वर्णन करना कठिन है, अतएव तुम लोग सदा उस मौके की ओर ध्यान रक्खो जो तुम्हारी उन्नति का सहायक होने वाला मालूम पडे, क्योंकि कब वह मौका आवेगा—इसका कुछ निश्चय नहीं है, और यदि तुम उस मौके पर चूक जाओ तो बस समझ लो कि तुम्हारी उन्नति का मार्ग बन्द हो गया।"

मिस्टर गारफील्ड ने इस अवस्था में अनेक विषयो पर वक्तृतायें दीं। जब कभी वह किसी समिति में वक्तृता देते

तभी अपने विद्यार्थियो से उस व्याख्यान को लिख लाने के लिए कहते थे । दूसरे दिन जब लड़के लिख लाते तब वे उसे क्लास में सब लडको के सामने पढ़ते और उनका मतलब सुनाते । प्राय लोग उन्हें किताब हाथ में ले जाते देखते । एक दिन एक लडके ने देखा कि पानी बरस रहा था और मिस्टर गारफील्ड दस बारह पुस्तको को हाथ और बगल में दबाये लाइब्रेरी की ओर चले जारहे हैं और एक विद्यार्थी उनके ऊपर छाता लगाये हुए जाता है ।

उन्होंने वकालत की परीक्षा भी पास की थी । इस लिए नहीं कि वकालत करें, किन्तु इस लिए कि राजनियमो को जान लें ।

उन्होंने मिस ल्युक्रिशिया रुडाल्फ से ११ नवम्बर सन् १८५८ ई० को विवाह किया और उसकी सहायता से उन्होंने बहुत बडे बड़े काम किये ।

वे सब लडको का नाम लेकर पुकारते थे, चाहे वह कितना ही बडा लडका क्यों न हो । वे लडकों के साथ खुले मैदान खेलते थे । वे उनसे यथावसर हँसी-मजाक् भी करते थे, परन्तु काम के समय वे बहुत गम्भीरभाव से काम लिया करते थे । काम के समय उनके पास शोर- गुल कुछ भी न होने पाता था ।

बडे बडे दुष्ट लडके उनसे बहुत डरते थे । दूसरे शिक्षकों के पास चाहे वे धूर्तता करें भी, पर उनके पास आकर वे बिल्ली की तरह चुपचाप बैठे रहते और कुछ भी धूर्तता न करते थे ।

बाईसवाँ परिच्छेद



जेम्स गारफील्ड सरीखे एक प्रसिद्ध वक्ता के लिए यह कब सम्भव था कि वे राष्ट्रीय पक्ष का साथ न दें और उसके लिए कुछ काम न करें। वह चाहे कितना ही मने करते रहें परन्तु लोग उन्हें कब छोडते थे। लोगों ने उन्हें देश-हित के लिए राय देने और समय समय पर व्याख्यान देने के लिए मजबूर किया। शरदऋतु मे हिराम लौट आने पर जब उन्हे अपने ही काम से बिलकुल फुरसत न मिलती थी उसी समय प्राय उन्हे राष्ट्र-सम्बन्धी वक्तृतायें देने के लिए पाँच, सात और कभी दस दस मील दूर जाना पडता था। जाते समय वह अपने साथ किसी एक विद्यार्थी को लेजाते और रास्ते भर उसे हितकर उपदेश देते जाते थे।

एलफोन्सो हार्ट नामक एक डेमाक्रेट * ने हिराम में आकर दासत्व के सम्बन्ध में बहुत से झूठे इतिहास इकट्ठा करके एक

---

*"जिस देश का राज्य छोटी बड़ी सब श्रेणी की प्रजा के द्वारा चलाया जाता है उसको "डेमाक्रेटिक राज्य" कहते हैं, और उस सभा के प्रतिनिधि गण जो राज्य का काम करते है उन्हें "डेमाक्रेटस" कहते हैं।"

जोर शोर का व्याख्यान दिया, जिसको सुन कर सब लोगो की क्रोधाग्नि धधक उठी।

सबो ने मिल कर मिस्टर गारफील्ड से कहा—"इस मूर्ख डेमाक्रेट की बातों का जवाब देना चाहिए और इसकी युक्तियो को काट कर इसे अच्छी तरह परास्त करना चाहिए।"

मिस्टर गारफील्ड ने कहा—"परास्त करना कुछ बहुत कठिन काम नहीं है, परन्तु ऐसा करना क्या बुद्धिमानों का काम होगा?"

"झूठे को दण्ड देना सदा बुद्धिमानों का काम है।"

किसी ने कहा—"आपही उसकी युक्तियो को काट सकते हैं।"

किसी ने कहा—"सब लोग यही चाहते हैं कि आपही इस काम को करे।"

कई रईसो ने मिल कर कहा—"बस आप चलिए और सर्व-साधारण की इच्छा पूर्ण कीजिए, सब लोग आपका मुँह ताक रहे हैं।"

मिस्टर गारफील्ड को अन्त में राजी होना पड़ा। तब उन्होंने डेमाक्रेटिक इतिहास को अच्छी तरह पढ़ा और दासत्व के सम्बन्ध में जितनी युक्तियां थीं उन सबको अच्छी तरह हृदयङ्गम किया। जब पूरी तौर से लड़ाई का सामान इकट्ठा कर लिया तब उन्होंने एक दिन एक लम्बा चौड़ा व्याख्यान दिया

जिसमें उन्होंने मिस्टर ह्वार्ट को एक भी बुरी बात न कही, केवल उनकी झूठी युक्तियो को प्रमाणसहित काटना शुरू किया। जब सब युक्तियाँ तोड दीं तब उन्होंने अपनी वक्तृता समाप्त की। इस तरह मिस्टर गारफील्ड की प्रतिष्ठा और भी बढ गई। फिर तो चारों ओर से उनकी चाह बढने लगी।

मिस्टर गारफील्ड की इतनी कीर्ति फैल गई कि एक वर्ष बाद "लेजिसलेटिव कौन्सिल" (Legislative Council) के मेंबरो ने इनको अपने यहाँ बुलाया। कई बार इनको पत्र लिखा कि वे इस काम को करे परन्तु उनका यही जवाब था कि "मेरा काम इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट में है। मेरा मन इसी काम में लगा है, और मेरा धर्म भी यही कहता है कि मैं इस काम को करूँ।"

इसके थोडे ही दिन बाद विलियम्स कालिज के लोगो ने इन्हे प्रथम दिन एक वक्तृता देने का अनुरोध किया। ये वहाँ गये और लोगो ने इनका बडा आदर किया। वहाँ का काम समाप्त करने के बाद जब ये लौट आये तब (Senate) सेनेट में मेम्बर चुनने का समय आ गया। लोगों ने इन्हीं को एक मेम्बर चुना। जब लोगो ने उनसे उनके चुने जाने का प्रस्ताव किया तब उन्होंने कहा —"मैं जानता था कि मिस्टर प्रेस्टन चुने जायँगे।"

लोगो ने कहा —"मिस्टर प्रेस्टन अभी थोडे दिन हुए मर गये।"

मिस्टर गारफील्ड ने कहा —"आप लोगो को मैं धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे स्मरण किया है परन्तु वडे खेद के साथ कहना पडता है कि मैं उस काम को स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि मैं अभी एक काम कर रहा हूँ। यदि मैं आपका काम स्वीकार कर लूँ तो मेरा इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट छूट जायगा।"

लोगो ने कहा —"आप अपने स्कूल वालों से राय लीजिए। यदि वे आपको कुछ दिन के लिए छोड सकें तो आप यहाँ का काम कीजिए।"

उस आदमी ने यह बात इसलिए कही कि उसको मालूम था कि स्कूल वाले चाहते हैं कि मिस्टर गारफ़ील्ड सेनेट का काम करें।

मिस्टर गारफील्ड ने इस बात को स्वीकार कर लिया और जब स्कूल वालो से उन्होंने पूछा तब सबो ने एकमत होकर राय दे दी कि आप जरूर उस काम को कर लीजिए।

सबकी बात पर मिस्टर गारफील्ड को स्कूल छोड कर सेनेट का काम करना पडा।

उस समय देश में वडी हल-चल मच रही थी। दक्षिण देशवासी राष्ट्रविप्लव पर कमर बाँधे थे और उत्तर प्रान्त के लोग दासत्व-निवारण करने के लिए कटिबद्ध थे। ऐसे समय में मिस्टर गारफील्ड सरीखे मनुष्य की जरूरत थी जो इस हल-चल को शान्त करने के लिए सेनेट की कुर्सी अधिकार करे।

सेनेट मे इनके ही समान एक और मनुष्य थे जिनका नाम जेकब डी काक्स था। ये दोनों बडे मित्र थे और सदा मिल-जुल कर काम किया करते थे।

मिस्टर गारफील्ड का नाम तुरन्त सबसे अच्छे वक्ताओं में हो गया। प्रेसीडेंट हिन्सडेल लिखते हैं कि —"जब कभी कोई पेचीदा काम आ पडता था तब युनाइटेड स्टेट्स के प्रेसीडेंट उस काम को ठीक करने के लिए इन्हीं को बुलाया करते थे।"

मिस्टर गारफील्ड को सेनेट का काम आरम्भ किये एक ही वर्ष हुआ था कि वह भयकर समस्या उपस्थित हुई। लिनकन साहब प्रेसीडेंट चुने गये। दक्षिण की रियासतों ने राष्ट्र का काम छोडने की तैयारी की और एक विप्लव की सम्भावना देख पडी। मिस्टर गारफील्ड के मन मे अनेक चिन्ताये उदय होने लगीं। उन्होंने सोचा —"क्या ओहिओ के लोग युद्ध करेंगे?" "क्या कोई रियासत भी देश का काम छोड सकती है?" "क्या रियासत पर कोई सख्ती की जा सकती है"? "क्या अपराधियो को दण्ड देना उचित होगा?" ऐसी ऐसी चिन्ताये जेम्स के चित्त को सदा व्याकुल किया करती थीं। इन कठिनाइयो को हल करने के लिए वे दिन दिन भर पढा करते थे और रात को भी ग्यारह बारह और कभी कभी एक एक बजे तक पढा करते थे। उन्होंने उस हल-चल को शान्त करने के लिए कई वक्तृताये दीं और उन नेताओं की निन्दा की जो रियासतों को राष्ट्र का काम छोडने के लिए उसकाते थे और अन्त में

उन्होंने सेनेट के मेम्बरो को स्वदेशानुराग और देशभक्ति के कामो में दीक्षित किया और दासत्व को दूर करने का प्रयत्न किया ।

जब जातीय महासभा ने अपने सम्मेलन में यह प्रस्ताव किया कि "सर्कार दासत्व के सम्बन्ध में और कोई कठोर नियम न जारी करे" तब मिस्टर गारफील्ड ने उत्साहित होकर यह लिखा कि जब तक मेरे हाथ पैर मजबूत हैं और जब तक मेरी बुद्धि ठीक रहेगी तब तक मैं ऐसा प्रस्ताव न चलने दूँगा क्योंकि ऐसा करने से हमारा देश स्वाधीनतारूपी महारत्न खो बैठेगा और फिर वह एक बार दासत्व की शृङ्खला में सदा के लिए बँध जायगा।"

इसके बाद और भी बहुत सी घटनाये हुई जिनसे यह प्रतीत होगया कि लड़ाई नहीं टल सकती। एक रोज रात के समय मिस्टर काक्स और मिस्टर गारफील्ड दोनों एक ही कमरे में सो रहे थे कि इतने में गारफील्ड ने कहा —"मिस्टर काक्स, युद्ध अनिवार्य्य है।"

काक्स ने कहा —"यह तो ठीक ही है।"

मिस्टर गारफील्ड ने कहा —"हम तुम दोनों युद्ध में जायँगे और अपने देश की रक्षा करने के लिए हम लोग अपना प्राण अर्पण करेंगे।"

यह कह कर दोनों मित्रों ने एक दूसरे को आलिङ्गन किया और इस बात की प्रतिज्ञा की कि दोनों युद्ध में जायँगे।

दूसरे दिन प्रेसीडेंट लिनकन ने सेनेट में हुक्म भेजा कि २५०० आदमी साथ लेकर सम्पटर का दुर्ग अधिकार में करना चाहिए।

गवर्नर डेनिसन ने मिस्टर गारफील्ड को ५००० हथियार लाने को मिशौरी भेज दिया। वहां से वे हथियार लेकर बहुत जल्द लौट आये।

वहां से लौट आने पर गवर्नर डेनिसन ने उनको सातवीं और आठवीं फौज का बन्दोबस्त करने के लिए उन्हें क्लीभलैण्ड भेजा। उनका बन्दोबस्त कर लेने पर गवर्नर ने उन्हे उन फौजों में से एक का कर्नेल (Colonel) बनाना चाहा, परन्तु उन्होंने उस पदवी को ग्रहण करने से इनकार किया क्योंकि उन्होंने कहा कि फौजी काम में वे बहुत प्रवीण नहीं हैं। " इस कारण गवर्नर ने उन्हे लेफटिनेन्ट कर्नेल (Lieutenant Colonel) बना कर पश्चिम में फौज इकट्ठा करने के लिए भेजा। जब फौज इकट्ठा करके वे लौटे तब तक कोई कर्नेल नहीं ठीक हुआ था, इस कारण सब लोगों की प्रेरणा से मिस्टर गारफील्ड ही उस फौज के सेनापति बनाये गये और बागी जनरल मारशेल से युद्ध करने के लिए क्लीभलैण्ड भेजे गये।

जनरल मारशेल की सेना यद्यपि बहुत अधिक थी परन्तु तोभी गारफील्ड ने बड़ी वीरता से युद्ध किया और जनरल मारशेल की सेना को मैदान से बाहर भगा दिया और उनको पूरी तौर से परास्त किया। इसके बाद और भी कई एक युद्ध

हुए। उन सभो में मिस्टर गारफील्ड ही की विजय हुई। उनकी बहादुरी और सेनापरिचालन-शक्ति को देख कर वाशिङ्गटन के लोगो ने उनको ब्रीगेडियर जनरल (Brigadier-General) की पदवी प्रदान की। यह पदवी उनको १० जनवरी सन् १८६२ ईसवी को मिली। इसके बाद फिर कई एक युद्धो में वे शरीक हुए और थोडे ही दिन में इनको मेजर जनरल (Major-General) की पदवी मिली। वे डेढ ही साल के बीच में लेफटिनेन्ट कर्नेल से मेजर जनरल हो गये थे।

जैसा कि लिखने-पढने के काम मे मिस्टर गारफील्ड ने अपनी प्रतिष्ठा लाभ की थी वैसे ही फौजी काम में भी उनकी सुप्रसिद्धि हुई। उनकी ख्याति दिन दिन चारो ओर फैलने लगी। जिस समय उनकी प्रसिद्धि इस तरह चारो ओर फैल रही थी उसी समय जातीय महासभा (National Congress) के लोगो ने इनको अपनी सभा में लेने की राय प्रगट की। उस समय मिस्टर गारफील्ड की यह इच्छा थी कि अपनी मातृभूमि को उद्दण्ड देशद्रोहियो के अत्याचार से रक्षा करे और उन अपराधियो को दण्ड देकर देश में शान्ति का प्रचार करे और अपना जीवन तथा सर्वस्व इस महान् कार्य मे लगा दे, उस समय वे नहीं चाहते थे कि ऐसी जिम्मेदारी के बडे काम को छोड कर वे काग्रेस वालों से जा मिले। उनके काग्रेस न जाने का एक और कारण यह भी था कि काग्रेस में इनको जो तनख्वाह मिलती उससे दुगुनी तनख्वाह इनको फौज में मिल

रही थी, इस कारण कांग्रेस जाने का ख्याल वे अपने पास न आने देते थे । पाठक, आप समझ सकते हैं कि ऐसे समय में फौज छोड कर कांग्रेस में जाना कितना बडा स्वार्थ-त्याग का काम है ।

प्रेसीडेण्ट लिनकन ने अपनी राय इस भांति प्रकट की कि कांग्रेस में एक ऐसा आदमी नियत किया जाना चाहिए जिसमें फौजी काम का भी तजरिबा अच्छी तरह वर्तमान रहे । इस कारण मिस्टर गारफील्ड को यह काम स्वीकार करना ही पडा । दो वर्ष और तीन महीने फौज में काम करने के बाद इन्होंने सन् १८६३ ईसवी में दिसम्बर के महीने में कांग्रेस का काम आरम्भ किया ।

मिस्टर गारफील्ड ने बहुत से ओहदों पर काम किया था और जहाँ जहाँ वे थे सर्वत्र उनका काम इतना हृदयग्राही और स्वार्थशून्य रीति से होता था कि लोग आप से आप हर घडी उनको घेरे रहा करते थे । जिधर देखो उधर ही मिस्टर गारफील्ड की मांग है । लोग मनुष्यों के सुन्दर मुख को अथवा सुन्दर शरीर को नहीं प्यार करते बल्कि उनके सुन्दर काम और रीति-नीति को प्यार करते थे । मिस्टर गारफील्ड के काम ही ऐसे थे कि लोग उन्हें बिना प्यार किये न रह सकते थे ।

कोलम्बस में सर्कारी कानून बनाने वाले की सभा में प्रधान मन्त्री की जरूरत थी । लोगों ने मिस्टर गारफील्ड ही को चुनना चाहा । इस कारण उनके दो एक मित्रों ने उनसे कहा —"आप

कोलम्बस जाइए क्योंकि वहाँ लोग आपही को "स्टेट लेजिस-लेचर" (State Legislature) में चुनने वाले हैं ।"

उन्होंने उत्तर दिया:—"मैं अपनी नौकरी ढूँढने के लिए स्वयं कहीं न जाऊँगा । मैंने समस्त जीवन भर में सिवा इलेक्ट्रिक इन्स्टीट्यूट के दरवान की नौकरी ढूँढने के स्वयं और कोई नौकरी नहीं ढूँढी और न भविष्य में ऐसी कोशिश करने की मैं इच्छा रखता हूँ । यदि हमारे मित्र हमें चाहेंगे तो वे खुद ही मुझे बुलावेंगे ।"

उन मित्रों ने कहा —"आप जो कहते हैं वह सच है। हम लोग आपको वहाँ इस वास्ते नहीं भेजा चाहते कि आप वहाँ जाकर हाथ फैला कर नौकरी की प्रार्थना करें वरन इस वास्ते भेजते हैं जिससे हम लोग सर्वदा आपको वहाँ देख पावें और आपसे बातचीत कर सकें । जो कुछ करना धरना होगा वह हमीं लोग करेंगे । आप केवल वहाँ उपस्थित रहेंगे ।"

उन्होंने कहा —"मैंने आप लोगों का मतलब समझ लिया। परन्तु वहाँ उपस्थित रहना ही मुझे बुरा मालूम होता है ।"

कोलम्बस में जब सभा बैठी तब सभों की राय से मिस्टर गारफील्ड ही उस सभा के प्रधान मन्त्री चुने गये। सन् अट्ठारह सौ अस्सी ईसवी के जनवरी महीने में मिस्टर गारफील्ड उस उच्च पदवी पर नियुक्त किये गये ।

मिस्टर गारफील्ड केवल अपने ही परिश्रम, बुद्धिमत्ता और साहस के कारण इस उच्च पदवी पर पहुँच गये थे । उनको

उन्नति की सीढी की चोटी पर पहुँचने के लिए केवल एक ही पद बाकी रह गया था। यदि वह एक सीढी भी किसी तरह पहुँच जा सकें तो यह कहना बहुत ठीक होगा कि मिस्टर गारफील्ड ने अत्यन्त दरिद्रावस्था से अत्यन्त उच्चतर बल्कि सब से ऊँचे पद को प्राप्त किया। गारफील्ड की भाग्यलक्ष्मी ऐसी सुप्रसन्ना थी कि उनके उस पद के भी प्राप्त करने में अधिक दिन न लगे।

इनके मन्त्री होने के पाँच ही महीने बाद "रिपबलिकेन पारटी * (Republican Party) ने अपना एक प्रेसीडेण्ट चुनने का प्रबन्ध किया। मिस्टर गारफील्ड भी उस पारटी के एक मेम्बर थे। उनकी उपस्थिति से लोगों के हृदय में बड़ा आनन्द और उत्साह उत्पन्न हुआ। यद्यपि अभी वे उस पदवी के लिए चुने जाने के अधिकारी न हुए थे परन्तु तो भी जब कभी वे उस सभा में किसी विषय पर व्याख्यान देते तो लोग उनका बड़ा आदर और सम्मान करते थे। लोगों की दृष्टि में वे पड़ चुके थे और सब की निगाह उन्हीं की ओर लगी हुई थी।

---

*जिस राज्य का काम ऐसी एक सभा के द्वारा होता है जिस सभा का मुख्य उद्देश यह होता है कि हर विषय में प्रजा को फायदा पहुँचाये और उनको सुख और शान्ति दे उस राज्य को "रिपबलिकेन राज्य" कहते हैं और जो लोग मिल कर ऐसी सभा स्थापित करते हैं उन लोगों को "रिपबलिकेन पारटी" कहते हैं।"

दूसरे आदमी के प्रेसीडेण्ट चुने जाने के लिए ३४ वार सम्मतियाँ ली जाने की निष्फल चेष्टा के बाद ३५ वीं वार जब ५० मनुष्यों ने जेम्स ए० गारफील्ड के नाम सम्मतियाँ दीं तब तुरन्त वहाँ का दृश्य परिवर्तन हो गया। जिस स्थान में सभा होती थी वह एक बहुत बडा कमरा था। उस कमरे में डेमाक्रेटिक और रिपबलिक के पार्टी के प्राय ७०० मनुष्य उपस्थित थे। सभी ने गारफील्ड का नाम सुनते ही अपने अपने झण्डे खडे किये और एक तान मे सुर मिला कर सबने यही कहा—"आज से हमारे दो दलो का विच्छेद और विरोध दूर होगया। आज से हम दोनों दलो के लोग मित्र भाव से परस्पर व्यवहार करेंगे क्योकि जनरल गारफील्ड के राज्य मे शत्रुभाव का रहना असम्भव है।" इन सात सौ प्रतिनिधियो को जेम्स गारफील्ड के नाम उत्साह मनाते देख कर १५००० दर्शक जो उस कमरे मे उपस्थित थे उन सबों ने उन्हीं ७०० मनुष्यों के स्वर में अपना स्वर मिलाया और गारफील्ड पर पुष्पवृष्टि आरम्भ की। इन १५७०० मनुष्यों की आवाज कमरे की दीवारो से टकरा कर प्रतिध्वनित हुई और कमरा हर्षध्वनि और जयध्वनि से गूँज उठा। उस कमरे के बाहर एक फौज खडी थी। फौजी सिपाइयो ने भी उस आनन्द-कोलाहल के साथ अपना कण्ठस्वर मिलाया और सब मिलकर जयध्वनि करने लगे। वह दृश्य बडा ही मधुर, बडा ही गम्भीर और बडा ही मनोहर था। ऐसा मनोहर दृश्य

कभी किसी ने प्रेसीडेन्ट चुने जाते समय न देखा था और कदाचित् भविष्य में कभी देखेंगे—ऐसी सम्भावना भी न थी। यह सब उसी चेतनस्वरूप लीलामय भगवान् की कीर्ति है जो अमीर को गरीब और गरीब को अमीर बनाता है और जो हर एक देशवासियों को दुष्टों के अत्याचार से बचाने के लिए समय समय पर ऐसे मनुष्य उत्पन्न करता है जो सच्चे जी से देश की सेवा करते हैं और प्रजा का पालन करते करते अपना काम पूरा करते हैं। धन्य है प्रभु, तुम्हारी लीला तुम ही समझ सकते हो। मूढ मनुष्य भला क्या समझेगा।

इस धूम-धाम और आनन्द-कोलाहल के बीच में ७ नवम्बर सन् १८८० ईसवी को जेम्स ए० गारफील्ड युनाइटेड स्टेट्स के प्रेसीडेंट चुने गये। वे उक्त तारीख को उन्नति की सीढ़ी की सब से ऊँची चोटी पर पहुँच गये।

दूसरे आदमी के प्रेसीडेण्ट चुने जाने के लिए ३४ वार सम्मतियाँ ली जाने की निष्फल चेष्टा के वाद ३५ वीं वार जब ५० मनुष्यों ने जेम्स ए० गारफील्ड के नाम सम्मतियाँ दीं तव तुरन्त वहाँ का दृश्य परिवर्तन हो गया। जिस स्थान में सभा होती थी वह एक वहुत वडा कमरा था। उस कमरे में डेमाक्रेटिक और रिपवलिक के पार्टी के प्राय ७०० मनुष्य उपस्थित थे। सभी ने गारफील्ड का नाम सुनते ही अपने अपने झण्डे खडे किये और एक तान में सुर मिला कर सवने यही कहा—"आज से हमारे दो दलो का विच्छेद और विरोध दूर होगया। आज से हम दोनों दलो के लोग मित्र भाव से परस्पर व्यवहार करेंगे क्योंकि जनरल गारफील्ड के राज्य में शत्रुभाव का रहना असम्भव है।" इन सात सौ प्रतिनिधियो को जेम्स गारफील्ड के नाम उत्साह मनाते देख कर १५००० दर्शक जो उस कमरे मे उपस्थित थे उन सवों ने उन्हीं ७०० मनुष्यों के स्वर मे अपना स्वर मिलाया और गारफील्ड पर पुष्पवृष्टि आरम्भ की। इन १५७०० मनुष्यों की आवाज़ कमरे की दीवारो से टकरा कर प्रतिध्वनित हुई और कमरा हर्षध्वनि और जयध्वनि से गूँज उठा। उस कमरे के वाहर एक फौज खडी थी। फौजी सिपाहियो ने भी उस आनन्द-कोलाहल के साथ अपना कण्ठस्वर मिलाया और सव मिलकर जयध्वनि करने लगे। वह दृश्य वडा ही मधुर, वडा ही गम्भीर और वडा ही मनोहर था। ऐसा मनोहर दृश्य

कभी किसी ने प्रेसीडेन्ट चुने जाते समय न देखा था और कदाचित् भविष्य में कभी देखेंगे—ऐसी सम्भावना भी न थी। यह सब उसी चेतनस्वरूप लीलामय भगवान् की कीर्ति है जो अमीर को गरीब और ग़रीब को अमीर बनाता है और जो हर एक देशवासियों को दुष्टों के अत्याचार से बचाने के लिए समय समय पर ऐसे मनुष्य उत्पन्न करता है जो सच्चे जी से देश की सेवा करते हैं और प्रजा का पालन करते करते अपना काम पूरा करते हैं। धन्य है प्रभु, तुम्हारी लीला तुम ही समझ सकते हो। मूढ मनुष्य भला क्या समझेगा।

इस धूम धाम और आनन्द कोलाहल के बीच में २ नवम्बर सन् १८८० ईसवी को जेम्स ए० गारफील्ड युनाइटेड स्टेट्स के प्रेसीडेंट चुने गये। वे उक्त तारीख को उन्नति की सीढ़ी की सब से ऊँची चोटी पर पहुँच गये।

तेईसवाँ परिच्छेद



न् १८८१ ईसवी की ४ मार्च को जनरल गारफील्ड को युनाईटेड स्टेट्स के प्रेसीडेंट की पदवी देने का महोत्सव हुआ। प्रात काल से दस बजे तक खूब हवा चली और बदली भी थी। दस बजे के समय हवा बन्द हो गई। आज शहर में बडा कोलाहल था। दूर दूर से भी बहुत से मनुष्य इस महोत्सव को देखने के लिए उपस्थित हुए थे। गारफील्ड के सहपाठियो की सख्या भी २० से कम न थी। गलियो मे दस लाख मनुष्य, जुटे थे। कैपिटोल नामक स्थान मे महोत्सव होने वाला था। लोग ह्वाइट हाउस से साढे दस बजे बडी धूम-धाम के साथ प्रेसीडेंट हेईज और भावी प्रेसीडेंट गारफील्ड समेत निकले। मार्ग के लोगो ने बहुत जयध्वनि की। सब समाज के लोग उपस्थित थे। गारफील्ड की विधवा माता और गारफील्ड की स्त्री भी उपस्थित थी। मिस्टर गारफील्ड ने बहुत मधुर और मन-भावन शब्दों मे वक्तृता देकर लोगो के चित्त को मोहित कर लिया। व्याख्यान की समाप्ति पर वेट साहब जज ने शपथ करने के लिए उसे बाइबिल थमाई। गारफील्ड ने बाइबिल को चूम कर वेट का हाथ फेर दिया। गारफील्ड

की माता और स्त्री के आनन्द की सीमा न रही । महोत्सव समाप्त हुआ । गारफील्ड ने प्रेसीडेण्ट का कार्य-भार अपने ऊपर ले लिया ।

कार्य के आरम्भ में एक बखेडा देख पडा । किसी स्थान पर एक अफ्सर नियुक्त करने में नवीन प्रेसीडेण्ट ने प्रचलित रीति की उपेक्षा करके अपने मन से मनुष्य नियुक्त किया । इस कार्य से सेनेटर ककलिङ्ग अप्रसन्न होकर गारफील्ड का द्रोही हो गया । कुछ सम्भव नहीं कि इसी मनुष्य के बहकाने से चार्ल्स जे गिटो नामक मनुष्य ने अचानक प्रेसीडेंट पर गोली चला कर दूसरी जुलाई को उसे घायल किया हो । प्रेसीडेंट के साघातिक चोट लगी । डाक्टरों की सावधानता और चतुराई से १९ सितम्बर तक गारफील्ड किसी तरह जीते रहे । इसी दिन रात में दस बज कर पैंतीस मिनट पर डाक्टर विल्स को विदित हुआ कि युनाइटेड स्टेट्स का प्रेसीडेंट, अपनी विधवा माता का प्रिय पुत्र, प्रसिद्ध विद्यार्थी और राजकर्मचारी इस असार संसार से कूँच कर गया ।

देश भर में हाहाकार मच गया ।

॥ इति ॥
